हिन्दी कौमुदी ।

हिन्दी कौमुदी ।

हिन्दी भाषाका अपूर्व व्याकरण ।

पंडित अंबिकाप्रसाद वाजपेयी

प्रकाशक :—

दि इंडियन नेशनल पब्लीशर्स लिमिटेड,

१५६ बी० मछुआबाजार स्ट्रीट, कलकत्ता ।

सस्ता-साहित्य-प्रकाशक मंडल,

अजमेर ।

तृतीय संस्करण] [दाम ॥=)

विषयसूची।

विषय	पृष्ठ

प्रथम संस्करणकी भूमिका।

आज हिन्दीके वैयाकरणों और शिक्षकोंके सामने बड़े संकुचित चित्तसे यह व्याकरण रखा जाता है, क्योंकि इसमें कई बातें ऐसी हैं जो उन्हें सर्वथा नयी प्रतीत होंगी और इस समय यह जानना असम्भव है कि वे उन्हें कहांतक स्वीकृत होंगी। परन्तु जो बातें इस पुस्तकमें उन्हें नयी जंचें और जिन्हें स्वीकार करनेको उनका जी न चाहे, उनपर यदि वे पूर्व-संस्कारोंको त्याग कर विचार करेंगे, तो आशा है कि बहुतसा मतभेद दूर हो जायगा।

"हिन्दी कौमुदी" लिखना आरम्भ करनेके पहले हमने भारतवासियों और विदेशियोंके लिखे कोई १५।२० व्याकरण देखे थे, जिनमें सर्वश्रेष्ठ व्याकरणों और उनके लेखकों-की नामावली तथा छपनेका समय अन्यत्र दिया गया है। इन व्याकरणोंमें पूर्णता और खोजकी दृष्टिसे पादरी केलागके हिन्दी ग्रामरका नम्बर पहला और पं० केशवराम भट्टके हिन्दी व्याकरणका दूसरा है। पादरी केलागके विदेशी होने तथा उस समय व्याकरणकी बातोंके ज्ञानका यथेष्ट विकास न होनेके कारण उनके व्याकरणमें बहुतसी त्रुटियां और भूलें रह गयी हैं। परन्तु जिस समय वह लिखा गया था, उस समय तथा

उसके बाद वैसा भी व्याकरण किसी भारतवासियोंने नहीं बनाया यह हमारे लिये बड़ी ही लज्जा और खेदकी बात है। हमारी समझसे प्रत्येक व्याकरणलेखकको लिखना आरम्भ करनेके पहले केलागका हिन्दी ग्रामर अवश्य पढ़ लेना चाहिये।

हिन्दी व्याकरणके वर्ण, शब्द और वाक्यरचना इन तीन अङ्गोंका ही विचार हिन्दी कौमुदीमें किया गया है। ऐसा क्यों हुआ और छन्दःशास्त्रका विचार क्यों नहीं किया गया यह यथास्थान बतलाया गया है। हिन्दीमें विरामादि चिन्हों-का प्रयोग अब अच्छी तरह चल पड़ा है, इस लिये इनके प्रयोग-के नियम भी होने चाहिये। यद्यपि यह पाश्चात्य प्रथा है और संस्कृत, प्राकृत वा हिन्दी व्याकरणसे इसका सम्बन्ध कहीं नहीं लगाया गया है, (केवल पं० केशवराम भट्टके व्याकरणमें "चिन्ह विचार" मिलता है) इसलिये हिन्दी व्याकरणमें इसे स्थान नहीं मिल सकता, तथापि आजकल इस प्रकरणकी उपेक्षा भी नहीं की जा सकती। इससे हिन्दीके विद्यार्थियोंके सुभीतेके लिये परिशिष्टमें "चिन्ह प्रकरण" दिया गया है। आजतक जितने व्याकरण देखनेमें आये हैं और जो नये तैयार हो रहे हैं, उन सबमें सन्धिप्रकरण संस्कृत व्याकरणसे उठाकर रख दिया गया है। हिन्दी व्याकरणमें संस्कृतका सन्धिप्रकरण ठीक नहीं जान पड़ता, परन्तु हिन्दीमें भी सन्धि है इसका विचार किसीने नहीं किया और एक आध वैयाकरणने तो यहांतक लिख दिया है कि "हिन्दीमें सन्धि और समास नहीं हैं!"

हमारे मतसे हिन्दीमें सन्धि और समास दोनों हैं और हिन्दी कौमुदीके सन्धि प्रकरणमें हिन्दिकी ही सन्धि लिखी गयी है। पर आजकल हिन्दीमें तत्सम शब्दोंका प्रयोग दिनों दिन बढ़ता जाता है, इस लिये परिशिष्टमें संस्कृतकी सन्धि भी दे दी गयी है, क्योंकि हिन्दीके विद्यार्थियोंके लिये इसका जानना अत्यावश्यक है।

इस व्याकरणमें नयापन इन विषयोंमें हैं :—(१) वर्णोंके उच्चारणके नियम,(२) शब्दोंके उच्चारणके नियम, (३) हिन्दीकी सन्धि, (४) स्त्रीलिङ्गसे पुंलिङ्ग बनानेके कुछ नियम, जो किसी भाषाके व्याकरणमें आजतक नहीं देखे गये, (५) स्त्रीलिङ्ग और पुलिङ्ग शब्दोंकी पहचानके नियम, (६) शब्दोंकी साधना विभक्तियोंके अनुसार, (७) संस्कृतकी तरह क्रियामें वाच्योंका प्रयोग तथा कर्मप्रधान और भावप्रधान क्रियासम्बन्धी मतका त्याग, (८) क्रियापदोंके सम्बन्धमें शब्दशास्त्र-सम्बन्धी शोध और भविष्यकालिक क्रियाकी कल्पनापर मत, (६) प्रेरणार्थक क्रियाके रूपों तथा अर्थोंका स्पष्टीकरण, (१०) यौगिक क्रियाओंका श्रेणिविभाग और विचार, (११) कृदन्त और तद्धित प्रत्ययोंका विस्तृत विवेचन, (१२) शब्दों और विभक्ति-प्रत्ययों तथा क्रियापदोंका अर्थनिर्णय और (१३) पदयोजना सम्बन्धी विशेष नियम।

हिन्दी कौमुदीके लिये यह दावा नहीं किया जा सकता

लिखनेकी प्रवृत्ति ही इसके प्रणयनका कारण है। इसमें कहांतक सफलता हुई है इसका विचार निरपेक्ष वैयाकरण और हिन्दी शिक्षक ही कर सकते हैं। यह छोटे विद्यार्थियोंके लिये लिखी गयी है और लघु कौमुदी है, पर (Philology) शब्दशास्त्रके अनुसार बननेके कारण बड़े विद्यार्थी भी इससे लाभ उठा सकते हैं। यदि हिन्दीके अधिकारियोंने इसका आदर किया तो उच्च श्रेणीके विद्यार्थियोंके लिये सिद्धान्त कौमुदी लिखनेका विचार किया जायगा। जो सज्जन इसकी त्रुटियां या भूलें बतानेकी कृपा करेंगे, उन्हें सादर धन्यवाद दिया जायगा और यदि वे यथार्थ त्रुटियां या भूलें होंगी तो अगले संस्करणमें उनका संशोधन कर दिया जायगा। जो महाशय समाचार-पत्रोंमें इस विषयमें कुछ लिखें वे अपनी आलोचना चिन्हित कर हमारे पास भेजेंगे, तो बड़ी कृपा होगी।

कलकत्ता :
ज्येष्ठ दशहरा, सं० १९७६। } अंबिकाप्रसाद वाजपेयी।

द्वितीय संस्करणकी भूमिका।

यह संस्करण बहुत पहले प्रकाशित होनेको था, पर नाना कारणोंसे नहीं हो सका। इससे शिक्षकों और विद्यार्थियोंको जो असुभीता हुआ उसके लिये हमें खेद है।

पहले संस्करणकी जैसी समालोचना होनी चाहिये थी, नहीं हुई। इस लिये भूलोंका सुधार ठीक ठीक नहीं हुआ, क्योंकि उनका ज्ञान ही नहीं हो सका। तथापि कई अंशोंमें इस संस्करणमें कुछ संशोधन और परिवर्त्तन कर दिये गये हैं।

पिछले संस्करणकी भूमिकामें भ्रमवश यह लिख दिया गया था कि स्त्रीलिङ्ग शब्दसे पुंलिङ्ग शब्द बनानेके नियम किसीने नहीं लिखे। वास्तवमें पं० केशवराम भट्टके व्याकरणमें उनकी कुछ चर्चा हुई है।

इस संस्करणमें निम्नलिखित विषयोंमें महत्वका परिवर्त्तन वा संशोधन अथवा परिवर्द्धन हुआ है:—वर्णमालाके वर्ण और भेद, सन्धि, शब्दोंकी साधना, विशेषणके भेद, यौगिक क्रिया और समास। इनके सिवा जगह जगह फुट नोट दे दिये गये हैं, जिनसे हिन्दीवालोंको ही नहीं, अन्य भाषाभाषियोंको भी सहायता मिलनेकी आशा है।

सुविज्ञ शिक्षकों और वैयाकरणोंसे विनीत निवेदन है कि इसमें उन्हें जिस विषयकी अपेक्षा जान पड़े अथवा जिसमें कुछ भूल दिखाई दे उसे या तो समाचारपत्रों या निजी पत्र द्वारा सूचित करनेकी कृपा करें, जिससे अगले संस्करणमें उनका सुधार हो सके।

अन्तमें पं० सभापति उपाध्याय व्याकरणाचार्य तथा पं० रामाज्ञा पांडेय व्याकरणाचार्यको धन्यवाद है जिन्होंने उपयुक्त सूचनाएं देकर इस संस्करणके संशोधित रूपको सर्वसाधारणके समक्ष रखनेमें सहायता दी।

कलकत्ता:
चैत्र शुक्ला प्रतिपदा सं० १९७९

अंबिकाप्रसाद वाजपेयी।

तृतीय संस्करणकी भूमिका।

परमेश्वरकी कृपासे हिन्दी कौमुदीका यह तीसरा संस्करण अध्यापकमण्डली और विद्यार्थियोंके सामने रखनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है। यह पुस्तक इसी इच्छासे लिखी गयी थी कि पढ़ने और पढ़ानेवालोंका इससे कुछ लाभ हो। इसके लिये प्रारम्भसे ही हड़बड़ी करनी पड़ी और जिसमें किसी न किसी स्कूलमें पढ़ायी जाने लगे, इस लिये पूर्वार्द्ध तो सं० १६७६ के पौषमें निकल गया था और उत्तरार्द्ध कहीं ज्येष्ठमें निकला और इस प्रकार पुस्तक पूरी हुई।

आशा थी कि हिन्दीके वैयाकरण इसकी समालोचना कर त्रुटियां बतलावेंगे, जिनका निवारण दूसरे संस्करणमें कर दिया जायगा। पर जब कोई विचारणीय समालोचना देखनेमें नहीं आयी, तब हमने आप ही संशोधन प्रारम्भ कर दिया और प्रायः आधी दूरतक पहुंचे ही थे कि सरकारने अपना मेहमान बना लिया। इस लिये दूसरा संस्करण प्रकाशित होनेके पहले देखा भी न जा सका और संशोधित संस्करणके बदले भूलभरा संस्करण निकला।

परन्तु विहार संस्कृत परीक्षा बोर्डने इसे अपनाया, इस लिये तीसरे संस्करणकी नौबत आयी। यह बात कोई दो

महीने पहले मालूम हुई कि हिन्दी कौमुदी मध्यमा परीक्षाका कोर्स है। इस लिये जल्दी जल्दी यह तीसरा संस्करण एक महीनेके अन्दर निकाला गया। दूसरे संस्करणपर एक आध समालोचना निकली थी, पर संशोधनके समय वह नहीं मिली; तोभी जो भूलें ध्यानमें आयीं अपनी ओरसे सबका संशोधन कर दिया गया है। फिर भी जो रह गयी हों उनकी ओर यदि अध्यापक वा विद्यार्थी अथवा समालोचक ध्यान आकर्षित करेंगे, तो उनकी कृपा धन्यवाद सहित स्वीकार की जायगी और आवश्यक होनेपर अगले संस्करणमें संशोधन कर दिया जायगा।

कलकत्ता :
पौष कृष्णा नवमी,
सं० १९८० वि० } अंबिकाप्रसाद वाजपेयी।

* ॐ श्रीगणेशाय नमः *

हिन्दी कौमुदी।

व्याकरण।

जिस शास्त्रके ज्ञानसे भाषाका शुद्धाशुद्धविवेक होता है, उसे व्याकरण कहते हैं।

हिन्दी व्याकरणके तीन भाग हैं, वर्णविचार, शब्दविचार, और वाक्यरचनाविचार। *

वर्णविचारमें अक्षरोंके नाम, भेद और उच्चारणका वर्णन है।

शब्दविचारमें शब्दोंके भेद, साधना और व्युत्पत्तिका विवेचन है।

---

* व्याकरणका प्रयोग जिस अर्थमें यहां किया गया है, वह संस्कृतसे ही नहीं, अंगरेजीसे भी भिन्न है। अंगरेजीमें छन्दःशास्त्र ग्रामरका अङ्ग है, पर संस्कृतमें वह स्वतन्त्र शास्त्र है। इसी प्रकार शिक्षा भी संस्कृतमें स्वतन्त्र शास्त्र है, पर अंगरेजीमें ग्रामरका प्रथम भाग है। हिन्दीमें छन्दः शास्त्रके ग्रन्थ तो अनेक हैं, परन्तु शिक्षाका कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ नहीं है। इसलिये हमने अन्य हिन्दी वैयाकरणोंके अनुकरणपर वर्णविचारको व्याकरणका अङ्ग मानकर इसमें स्थान दिया है।

वाक्यरचनाविचारमें विभक्तियों, शब्दों और क्रियापदोंके अर्थ तथा शब्दोंसे वाक्य बनानेकी रीतियां हैं ।

वर्णविचार ।

जिन वर्णों या अक्षरोंमें हिन्दी भाषा लिखी जाती है, वे हिन्दी, देवनागरी या नागरी कहाते हैं। वर्णोंकी श्रेणीको वर्णमाला कहते हैं । *

हिन्दी वर्णमालामें अड़तालीस अक्षर हैं। इनके दो भेद हैं, स्वर और व्यञ्जन। ११ स्वर और ३७ व्यञ्जन हैं । †

जिन अक्षरोंका उच्चारण दूसरे अक्षरकी सहायता विना हो जाता है, वे स्वर कहाते हैं। स्वरोंके दो भेद हैं, सानुनासिक और निरनुनासिक। जो स्वर नकसुर बोले जाते हैं वे सानुनासिक और जिनके बोलनेमें नाककी सहायता नहीं ली जाती, वे निरनुनासिक कहाते हैं। स्वरोंकी सहायतासे जिनका उच्चारण होता है, उन्हें व्यञ्जन कहते हैं। निरनुनासिक स्वरपर

---

* राजपुतानेमें ये शास्त्री और महाराष्ट्र तथा गुजरातमें बालबोध कहे जाते हैं। विहारमें कैथी अक्षरोंको हिन्दी अक्षर कहते हैं।

† संस्कृतमें दो स्वर और हैं, एक ऋ वर्णका दीर्घ रूप ॠ और दूसरा लृ। पर हिन्दीसे इनका कोई सबन्ध न होनेके कारण इन्हे वर्णमालामें स्थान नहीं दिया गया।

अनुनासिक वा चन्द्रविन्दु लगा देनेसे वह सानुनासिक हो जाता है, जैसे अँ, आँ आदि।

स्वर।

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

व्यञ्जन।

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण त थ द ध न

प फ ब भ म

य र ल व

श ष स ह

ड़ ढ़

ं (अनुस्वार) ः (विसर्ग)*

व्यञ्जन दो प्रकारके होते हैं। एक वे, जिनका उच्चारण

---

* हिन्दी वैयाकरणोंमें कुछने तो अ वर्णपर अनुस्वार और विसर्ग लगाकर अं अः अक्षर बना लिये हैं और इन्हें स्वर ठहराया है और कुछने व्यंजनोंके अन्तमें लिखकर इन्हें व्यंजन मान लिया है। पर विचारनेपर ये न तो स्वर सिद्ध होते हैं और न व्यंजन ही और इसीसे संस्कृतवालोंने इन्हें अयोगवाह लिखा है। साथ ही स्वरोंकी सहायता बिना इनका उच्चारण नहीं हो सकता, इसलिये हमने इन्हें व्यंजनोंका ही एक भेद मान लिया है। पहले संस्करणमें अर्द्धानुस्वार वा चन्द्रविन्दु स्वतन्त्र वर्ण माना गया था, पर पूर्ण विचार करनेसे यह वर्ण नहीं सिद्ध हुआ; क्योंकि इसके बोलनेमें समय नहीं पड़ता। इसलिये हम इसे चिन्ह मात्र मानते हैं। [illegible] नेमें यह [illegible] हिंदीमें अनुनासिकसे ही इसका काम भी लिया जाता है।

पहले या पीछे स्वर रख देनेसे होता है, जैसे अक्, क। दूसरे, वे जिनके पहले स्वर रहे विना उच्चारण नहीं होता; जैसे ' अनुस्वार और : विसर्ग। पिछले प्रकारके व्यञ्जन दो ही हैं।

दोनो प्रकारके स्वरोंके दो भेद और हैं, ह्रस्व और दीर्घ। अ, इ, उ, और ऋ ह्रस्व और आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ और औ दीर्घ हैं। ए, ऐ, ओ और औ, दो दो अक्षरोंके मेलसे बने जान पड़ते हैं और इसलिये सन्ध्यक्षर भी कहाते हैं। इसीसे दीर्घ स्वर भी हैं। इनके ह्रस्व रूप नहीं होते, यद्यपि हिन्दीमें विशेष-कर कवितामें ए और ओका ह्रस्व उच्चारण भी होता है।

ह्रस्व स्वरके उच्चारणमें जितना समय लगता है, दीर्घ स्वर-के उच्चारणमें उससे दूना लगता है। ह्रस्वको एकमात्रिक और दीर्घको द्विमात्रिक भी कहते हैं।

व्यञ्जनोंका उच्चारण स्वरोंके विना नही हो सकता, इससे उनका उच्चारण करनेके लिये उनके अन्तमें "अ" लगा हुआ मान लिया जाता है।

किसी अक्षरके साथ "कार" कहनेसे उसी अक्षरका बोध होता है; जैसे ककारसे क, अकारसे अ आदि।

व्यञ्जन तीन भागोंमें विभक्त हैं, स्पर्श वर्ण, अन्तस्थ वर्ण और ऊष्म वर्ण। कसे मतक स्पर्श, यसे वतक अन्तस्थ और शसे हतक ऊष्म वर्ण कहाते हैं।

स्पर्श वर्ण पांच पांच अक्षरोंकी पांच श्रेणियोंमें बटे हैं और प्रत्येक श्रेणी वर्ग कहाती है। वर्गके आदि अक्षर से ही उसका

नाम पड़ता है ; जैसे कसे कवर्ग, चसे चवर्ग, टसे टवर्ग, तसे तवर्ग और पसे पवर्ग। कवर्ग कहनेसे क श्रेणीके पांचो व्यञ्जनोंका बोध होता है।

प्रत्येक वर्गका पहला और तीसरा वर्ण अल्पप्राण तथा दूसरा और चौथा महाप्राण और पांचवां सानुनासिक अल्पप्राण कहाता है। जिन व्यञ्जनोंमें हका भी उच्चारण रहता है, वे महाप्राण कहाते हैं; जैसे, ख=क्+ह, घ=ग्+ह आदि।

ड़ और ढ़ अक्षरोंका स्थान संस्कृत व्यञ्जनोंमें नहीं हैं, इसलिये ऊपर लिखे क्रममें इनका वर्णन नहीं हुआ। ड और ढके नीचे बिन्दी लगानेसे ड़ और ढ़ अक्षर बनते हैं। पहला अल्पप्राण और दूसरा महाप्राण है।

वर्णोंके उच्चारण।

कण्ठ या गलेके बिना तो किसी वर्णका उच्चारण सम्भव नहीं है, पर कुछ वर्णोंके उच्चारणके लिये कण्ठके सिवा कई और अवयवोंका प्रयोजन होता है। जिस अक्षरके उच्चारणमें जिस अवयवकी मुख्यता रहती है, उस वर्णका वही उच्चारण-स्थान कहाता है। उच्चारणस्थानके अनुसार वर्ण कंठ्य, तालव्य, मूर्द्धन्य, दन्त्य और ओष्ठ्य कहाते हैं।

गलेसे कण्ठ्य, तालुसे तालव्य, मूर्द्धासे मूर्द्धन्य, दांतोंसे दन्त्य और ओठोंसे ओष्ठ्य वर्णोंका उच्चारण होता है।

नीचेके कोष्ठकसे मालूम होगा कि किस वर्णका कौन उच्चारण स्थान है :—

उच्चारणस्थान।	स्वर	व्यञ्जन				
		स्पर्श वर्ण।			अन्तस्थ	ऊष्म
		अल्पप्राण	महाप्राण	सानु-नासिक अल्पप्राण		
कंठ	अ आ	क ग	ख घ	ङ	:	ह
तालु	इ ई	च ज	छ झ	ञ	य	श
मूर्द्धा	ऋ	ट ड	ठ ढ	ण	र ड़ ढ़	ष
दन्त		त द	थ ध	न	ल	स
ओष्ठ	उ ऊ	प ब	फ भ	म		
दन्तोष्ठ					व	
कंठतालु	ए ऐ					
कंठोष्ठ	ओ औ					
नासिका						

उच्चारण करनेकी रीति।

उच्चारणस्थान जान लेनेपर भी कई वर्णोंका उच्चारण करना

विद्यार्थियोंके लिये कठिन होता है, इससे उनके उच्चारणके लिये नियम इस प्रकार बनाये गये हैं :—

हिन्दीमें ऋका उच्चारण रिकी भांति ही किया जाता है। इस लिये पुराने पद्यग्रन्थोंमें ऋके बदले रिका ही प्रयोग देखा जाता है।

हिन्दीमें ए, ऐ, ओ और औ इन चार स्वरोंके दो दो उच्चारण होते हैं। ए और ओका एक एकमात्रिक वा ह्रस्व उच्चारण होता है और दूसरा द्विमात्रिक वा दीर्घ। ह्रस्व उच्चारणमें अन्य ह्रस्व स्वरोंकी भांति दीर्घ उच्चारणसे आधा समय लगता है। जैसे, एकाई (ह्रस्व), एक (दीर्घ), मोहल्ला (ह्रस्व), मोहन (दीर्घ)। ऐ और औका एक उच्चारण तो अइ और अउ होता है; जैसे, बिलैया, कौआ और दूसरा अय् और अव् होता है; जैसे, ऐसा, और। एकमात्रिक ए और ओके बदले इ और उ लिखनेकी चाल भी हिन्दीमें है।*

ङका उच्चारण कंठ और नासिकाकी सहायतासे होता है, इसमें नासिकाका प्राधान्य इस लिये है कि दांतपर दांत रखकर

---

* बंगलामें ऐ और औका उच्चारण वै और वौ होता है। हिन्दीमें यह अशुद्ध है। मराठीमें अनुस्वारका सानुनासिक उच्चारण भी होता है, पर बंगलामें नहीं होता, इस लिये नहींका उच्चारण बंगाली "नहीम्" किया करते हैं। बंगाली लोग अका उच्चारण प्रायः ओ जैसा करते हैं, इसलिये हिन्दी अकारके उच्चारणके लिये कहीं "आ" और कहीं "ए" लिखते हैं; जैसे, मेकरको मेकार और नहींको नेहीं।

भी इसका उच्चारण अनायास हो सकता है। अपने वर्गके अक्षरके साथ हिन्दीमें इसका उच्चारण होता है, स्वतन्त्र नहीं। तालमें सारी जीभ फैलाकर दबानेसे ञका और जीभकी नोकको उलटकर मूर्द्धामें लगानेसे णका उच्चारण होता है। ड़का उच्चारण भी णकी तरह ही होता है, पर भेद इतना ही है कि इसके उच्चारणमें नासिकासे सहायता नहीं ली जाती। अनुस्वारका उच्चारण हिन्दीमें संस्कृतकी तरह ही होता है, पर अनुस्वारसे ही अनुनासिक वा चन्द्रविन्दुका काम भी लिया जाता है। हिन्दीमें अनुस्वार वहुत करके चन्द्रविन्दुके बदले ही लिखा जाता है और संस्कृत तथा बहुत कम हिन्दी शब्दोंको छोड़ सर्वत्र उसका सानुनासिक उच्चारण ही होता है, जैसे अंगूठी, चांदी, उंगली, ऊंघना, नहीं, में, हैं। हिन्दीमें दीर्घ स्वर-पर अनुस्वार होनेसे सदा उसका सानुनासिक उच्चारण होता है।

ङ, ञ, ण, ड़, और ढ़, इन पांच अक्षरोंमें किसीसे कोई शब्द प्रारम्भ नहीं होता। पर पिछले तीन अक्षर शब्दके अन्त और पांचो मध्यमें आते हैं।

हिन्दीमें य, व और षका उच्चारण ज, ब और खकी तरह भी किया जाता है और पुरानी कवितामें तो प्रायः इनका भेद ही नहीं माना गया है।

वर्ण लिखनेकी रीति।

व्यञ्जनोंका उच्चारण स्वरके आगे या पीछे मिले बिना नहीं

होता, पर स्वरहीन व्यञ्जन लिखे जा सकते हैं। जिन व्यञ्जनोंमें स्वर नहीं रहता, उनके नीचे एक तिरछी लकीर कर दी जाती है। इसे हल् चिन्ह कहते हैं।

जब स्वरों और व्यञ्जनोंका मेल होता है, तब उनकी आकृति बदल जाती है। स्वरोंके पूरे रूप व्यञ्जनोंमें नहीं मिलते, पर प्रतिनिधिरूपसे उनकी मात्राएं मिलती हैं। अकारके मिलनेसे व्यञ्जनके रूपमें कोई परिवर्त्तन नहीं होता, क्योंकि इसकी कोई मात्रा नहीं है; केवल व्यञ्जनोंका हल् चिन्ह उड़ा दिया जाता है। अन्य स्वरोंके मेलसे व्यञ्जनोंके रूपमें कुछ कुछ अन्तर पड़ता है।

स्वरोंकी मात्राएं।

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ
	ा	ि	ी	ु	ू	ृ	े	ै	ो	ौ

अक्षरके ऊपर अनुस्वार और उसके पीछे विसर्ग लगता है।

रमें जब उ वा ऊकी मात्रा लगती है, तब उसके ये रूप हो जाते हैं, रु, रू। इसी प्रकार द् और ह्में ऋकी मात्रा लगती है, तब उनके ये रूप हो जाते हैं, दृ, हृ।

संयुक्त वर्ण।

जब दो वा अधिक व्यञ्जनोंका संयोग होता है, तब वे संयुक्त वर्ण कहाते हैं। संयुक्त वर्णोंके रूप तीन प्रकारके होते हैं।

कहीं तो अक्षरोंका स्वरूप ऐसा बदल जाता है कि उसमें मूल

अक्षरोंका कुछ भी पता नहीं चलता ; कहीं एक अक्षर दूसरेपर लिखा जाता है और कहीं पहले अक्षरकी खड़ी सीधी रेखा निकाल दी जाती है। पहले प्रकारके संयुक्त व्यञ्जन क्ष, त्र, ज्ञ ये तीन ही हैं। क् और षके योगसे क्ष, त् और रके योगसे त्र तथा ज् और ञ के योगसे ज्ञ बना है। ज्ञ हिन्दीमें ग्यँ उच्चारण किया जाता है।

क, च, ट, ड और द जब द्वित्व लिखे जाते हैं अथवा टवर्गमें णको छोड़ और अक्षरोंका जब उनसे योग होता है, तब एक अक्षर दूसरेके ऊपर लिखा जाता है, जैसे शक्कर ; लुच्चा टट्टू, अड्डा, गद्दा आदि।

ख, घ, च, ज, त, थ, प, ब, भ, म, य, ल, व, श, ष और स अक्षरोंमें जब एक दूसरेसे मिलता है, तब पहले आनेवाले अक्षर अपनी खड़ी सीधी रेखासे हाथ धो बैठते हैं। न और ल द्वित्व होनेपर ऊपर नीचे या बगल बगल लिखे जाते हैं। जैसे गन्ना गन्ना गल्ला गल्ला। ङ ञ कभी द्वित्व नहीं होते और अपने वर्गके अक्षरके ऊपर लिखे जाते हैं। ण द्वित्व होनेपर ण्ण या ण्ण लिखा जाता है। त द्वित्व होनेपर त्त लिखा जाता है, जैसे पत्तल।

जब र किसी अक्षरके पहले आता है, तब उसके ऊपर और जब पीछे आता है, तब नीचे लिखा जाता है ; जैसे, अर्क, वक्र। जब कके साथ त या र जुड़ता है, तब दोनोंके ये रूप होते हैं :— क्त, क्र। जब ज द्वित्व होता है, तब यातो ऊपर नीचे लिखा जाता

है या अगल बगल और पहले जकी लकीर गिर जाती है ; जैसे, लज्जा, रज्जू।

क, ट, ड, ढ के साथ जब य जुड़ता है, तब उनके रूप इस प्रकार होते हैं :—क्य, ट्य, ट्य, ड्य, ढ्य। जब ण किसी अन्य व्यञ्जनसे मिल जाता है, तब उसकी खड़ी रेखा गिर जाती है और जब अपने वर्गके व्यञ्जनोंसे मिलता है, तब भी रूप इसी प्रकार बदल जाता है। पर उच्चारण नके समान होता है ; जैसे, कण्टक, ठण्ढ।

क और वके योगमें व कके नीचे लिखा जाता है, जसे क्व।

जब पका संयोग ट या ठसे होता है, तब वह इन अक्षरोंके ऊपर लिखा जाता है ; जैसे ष्ट, ष्ठ।

हके साथ ण, न, म, य, र और वका योग होनेपर संयुक्त-रूप इस प्रकार होते हैं, ह्ण, ह्न, ह्म, ह्य, ह्र।

शब्दोंके उच्चारणके नियम।

हिन्दीमें सभी शब्द स्वरान्त लिखे जाते हैं, पर कविताको छोड़ सर्वत्र अकारान्त शब्दोंका उच्चारण व्यञ्जनान्त होता है ; जैसे, भारत, राम। यहां त और म स्वरान्त हैं, पर इनका उच्चारण इस प्रकार होता है, मानो त और ममें अकार है ही नहीं।

दो अकारान्त अक्षरोंके शब्दोंका उच्चारण करनेके समय दूसरा व्यञ्जनान्त बोला जाता है, जैसे, फल्, बल्।

इसी प्रकार तीन अक्षरोंके शब्दोंमें तीसरा, चारमें दूसरा और

चौथा, पांचमें तीसरा और पांचवां, छमें तीसरा और छठा, आठमें दूसरा, चौथा, छठा और आठवां व्यञ्जनान्त उच्चारित होता है ; जैसे, कलम्, कमूरख्, गपड्चौथ्, लशूटम्पशूटम्, गड़-बड़सड़बड़ आदि।

हिन्दीमें संयुक्त वर्णों के पूर्व वर्णका गुरु उच्चारण प्रायः नहीं होता। जैसे रामप्रसाद शब्दका उच्चारण संस्कृतके ढङ्गपर रामप्रसाद न होकर राम्प्रसाद होता है।

सन्धि।*

[शब्दोंका शीघ्रतापूर्वक उच्चारण करनेमें दो शब्दोंके बीचके अक्षरोंके संघर्षसे जो नया उच्चारण बनता है, उसे वैयाकरण सन्धि कहते हैं। प्रारम्भमें ठहर ठहरकर जब लोग बोलते थे, तब सन्धि नहीं होती थी। पर जब जल्दी बोलनेका प्रचार बढ़ा, तब किसी वैयाकरणने सन्धिकी कल्पना कर सन्धिके कुछ नियम बनाकर रख दिये और जब सन्धियुक्त

---

* इस प्रकरणका नाम "सन्धि" हमारे एक व्याकरणतीर्थ मित्रको पसन्द नहीं है, पर प्रकरण ये आवश्यक समझते हैं। यहां हिन्दीकी सन्धि दी गयी है। संस्कृतकी संधि परिशिष्टमें मिलेगी। हिंदी सब अंशोंमें संस्कृतका अनुसरण नहीं करती, इसलिये दोनोंकी संधिके नियमोंकी तुलना करना भ्रम है।

उच्चारण बहुत अधिक होने लगा, तब व्याकरण ग्रन्थोंमें सन्धि प्रकरणको स्थान मिल गया। सन्धि उच्चारणकी विशेषता ठहरायी गयी और संस्कृतवालोंने नित्य सन्धि या सन्धिकी अनिवार्य्यताकी दुहाई देनी आरम्भ की।]

[परन्तु हिन्दीमें नित्य सन्धि न होनेपर भी उच्चारणकी विशेषताने सन्धिका प्रश्न सामने ला खड़ा किया है। हिन्दीमें शब्दमें प्रत्यय जुड़नेपर ही सन्धि अधिक होती है, चाहे वह प्रत्यय तद्धित हो या कृदन्त, लिङ्गप्रत्यय अथवा क्रियाप्रत्यय। कुछ लोग हिन्दीमें सन्धि सुनकर बहुत असन्तुष्ट होते हैं, पर उपाय नहीं है; क्योंकि हिन्दी शब्दोंके व्यंजनान्त उच्चारणने सन्धिका मार्ग खोल दिया है।]

जब दो अक्षर मिलकर तीसरा रूप धारण करते हैं, तब उस मेलको सन्धि कहते हैं।

संयुक्त अक्षर और सन्धिमें यह अन्तर है कि संयुक्त अक्षरमें मिले हुए अक्षर रहते हैं, केवल अगले अक्षर व्यंजनान्त हो जाते हैं, पर सन्धिमें दोनो अक्षर बदलकर तीसरा ही रूप धारण करते हैं।

जब दो दो अक्षरोंके शब्दोंमें सन्धि होती है, तब पहले शब्दके प्रथम अक्षरका स्वर यदि दीर्घ होता है, तो ह्रस्व हो जाता है। चार अक्षरोंका प्रथम शब्द होनेपर तीसरे अक्षरका स्वर ह्रस्व हो जाता है। यदि उसका ह्रस्व रूप नहीं होता तो उच्चारण अवश्य ही ह्रस्व या एकमात्रिक किया जाता है और

कभी कभी उसके मेलका ह्रस्व स्वर लिखा और उच्चारण किया जाता है अर्थात् एके बदले इ और ओके बदले उ लिखा जाता है।

उदाहरण :—बूढ़ा+आपा=बुढ़ापा, राजपूत+आना=राजपुताना, लोटा+इया=लोटिया या लुटिया।

अपवाद :—प्रथम शब्दका प्रथम अक्षर औकारान्त होनेसे ह्रस्व नहीं होता ; जैसे, चौबे+आइन=चौबाइन।

जब दो स्वरोंके मेलसे तीसरा स्वर बनता है, तब उसे स्वर सन्धि कहते हैं। पर जब स्वरान्त शब्द व्यंजनान्त होकर प्रत्यय अथवा अन्य शब्दसे मिलता है, तब व्यंजन सन्धि होती है। दीर्घको ह्रस्व बनानेवाला नियम दोनो सन्धियोंमें चलता है।

अ वा आके बाद आ रहनेसे दोनो मिलकर आ हो जाते हैं ; जैसे, लड़+आई=लड़ाई, भूल+आवा=भुलावा, राजपूत+आना=राजपुताना, बूढ़ा-आपा=बुढ़ापा।

इसी प्रकार एक ही शब्दमें इके बाद ई रहनेसे दोनो मिलकर ई हो जाते हैं ; जैसे, दिई=दी, किई=की, लिई=ली, पिई=पी सिई=सी।

इसी प्रकार एक ही शब्दमें आके बाद ई रहनेसे प्रत्यय जुड़नेके पहले दोनो मिलकर ऐ तथा आके बाद ऊ रहनेसे दोनो मिलकर औ हो जाते हैं। यदि इकारादि प्रत्यय रहता है तो इकारका लोप होकर प्रत्ययका अवशिष्ट भाग शब्दके अन्तमें जुड़ता है, जैसे, भाई+इया=भैया, गाई+इया=गैया, माई+इया=मैया, नाऊ+आ=नौआ।

अ वा आके बाद ऐ रहनेसे दोनो मिलकर ऐ और अ वा आके बाद औ रहनेसे दोनो मिलकर औ हो जाते हैं और पहला आ ह्रस्व हो जाता है ; जैसे, परख+ऐआ=परखैया, गोड़-ऐत= गोड़ैत वा गुड़ैत, डाका+ऐत=डकैत, बाप+औती=बपौती, चूना+औटी=चुनौटी ।

ईके बाद आ रहनेसे दोनो मिलकर या और ऊ के बाद ई रहनेसे दोनो मिलकर वी हो जाते हैं ; जैसे, पी+आस=प्यास लखनऊ+ई=लखनवी ।

जब दो अक्षरोंमें सन्धि होती हैं, तब पहले अक्षरमें यदि दुहरा व्यञ्जन हो, तो इकहरा रह जाता है और फिर सन्धि होती है।

जब अ, आ, ई के बाद इ, ई, ऊ, ए, ओ होते हैं, तब अगले अ, आ, ई, स्वरोंका लोप हो जाता है और व्यञ्जनोंसे बादके स्वरोंकी सन्धि होती है ; जैसे, माखन+इया=मखनिया, लत+इयल=लतियल, सोंटा+इया=सोंटिया, धोबी+इया=धोबिया, बंगाल+ई=बंगाली, गर्ज+ऊ=गर्जू, डाका+ऊ=डाकू, कुत्ता+इया=कुतिया, बिल्ली+आव=बिलाव, लूट+एरा=लुटेरा, बहन+ओई=बहनोई । *

जब एके बाद आ होता है, तब एका लोप हो जाता है और व्यञ्जनके साथ आकी सन्धि होती है ; जैसे, पांड़े+आइन=

---

* शिक्षकोंको चाहिये कि विद्यार्थियोंको ये नियम पट्टी या बोर्डपर लिखकर इस प्रकार समझावें :—माखन+इया=मखन+इया=मखनिया कुत्ता+इया=कुत्+इया=कुतिया, बिल्ली+आव=बिल्+आव=बिलाव ।

पंड़ाइन, चौबे+आइन=चौबाइन।

जब किसी शब्दके अन्तमें ब हो और उसके बाद निश्चयार्थक अव्यय "ही" आवे, तो कभी बके अका और कभी "ही"के हका लोप हो जायगा और ब्ही मिलकर "भी" या बई मिलकर "बी" हो जायंगे ; जैसे, अब+ही=अब्+ही=अभी, जब+ही=जब्+ही= जभी, कब+ही=कब्+ही=कभी, तब+ही=तब्+ही=तभी।

विकल्पसे "ह" का लोप भी होता है ; जैसे, सब+ही=सभी या सबी, दब+ही=दबी।*

जब किसी शब्दके अन्तमें ह या हां हो और उसके बाद "ही" शब्द आवे, तो ह या हाका लोप हो जायगा और शब्दका जो टुकड़ा बचेगा, हीके साथ उसकी सन्धि होगी; जैसे, मुंह+ही=मुंही, कहां+ही=कहीं, यहां+ही=यहीं, वहां+ ही+वहीं।

हम और तुम शब्दके बाद जब "ही" शब्द आता है, तो मके अकार और हीके हकारका लोप हो जाता है और फिर सन्धि होती है ; जैसे, हम+ही=हमी, तुम+ही=तुमी। तुम शब्दके साथ हीकी सन्धि करनेके समय कभी हीके हका लोप नहीं भी करते ; जैसे, तुम+ही=तुम्ही।

---

* जो समझते हैं कि यह नियम व्यापक नहीं है, वे यह भूल जाते हैं कि अच्छे पढ़े लिखे लोग "दब ही" न बोलकर "दबी" बोलते हैं।

उनकी बुद्धिकी प्रशंसा क्या की जाय जो इनवर्तेड कामाओंमें रहनेके कारण समझते हैं कि सब 'भी' अव्ययको इसी नियमसे बना बता रहे हैं।

इस, उस, जिस, किस, तिस रूपोंके बाद जब "ही" आता है, तब हीके हकारका लोप हो जाता है और ईके साथ पूर्व अक्षरकी सन्धि होती है ; जैसे, इस+ही=इसी, उस+ही=उसी, जिस+ही=जिसी, किस+ही=किसी, तिस+ही=तिसी।

"ही" शब्दके पहले अन्य अक्षर आनेसे भी प्रायः हका लोप कर दिया जाता है ; जैसे, सुन+ही=सुनी, आ+ही=आई, पढ़+ही=पढ़ी, लिख+ही=लिखी।

इन, उन, जिन, किन, तिन रूपोंके बाद जब "ही" शब्द आता है, तब नके अकारका लोप कर दिया जाता है और न् हीमें मिल न्ही हो जाता है ; जैसे इन+ही=इन्हीं, उन+ही=उन्हीं, जिन+ही=जिन्हीं, किन+ही=किन्हीं, तिन+ही=तिन्हीं।

धके बाद ह होनेसे हका लोप हो जाता है और बचे हुए अक्षरोंमें सन्धि होती है ; जैसे, दूध+हांडी=दुधांडी।

कके बाद क रहे तो पहलेका लोप हो जाता है ; जैसे, नाक+कटा=नकटा।

तके बाद द रहे तो दोनो मिलकर द्द हो जाते हैं ; जैसे, पोत+दार=पोद्दार।

शब्दविचार ।

जो कुछ मुंहसे बोला या कानसे सुना जाता है, वह शब्द कहाता है। शब्द दो प्रकारके हैं, सार्थक और निरर्थक। जिनका अर्थ होता है, वे सार्थक और जिनका अर्थ नहीं होता, वे निरर्थक कहाते हैं। व्याकरण सार्थक शब्दोंका ही नियामक है, इसलिये यहां शब्द कहनेसे सार्थक शब्द ही समझना चाहिये।

हिन्दीमें चार प्रकारके शब्द व्यवहारमें आते है, तत्सम, तद्भव, देशी और विदेशी।

तत्सम या संस्कृतसम शब्द बहुधा संस्कृतकी प्रथमा विभक्ति के एकवचनके ही रूप होते है; जैसे, राजा, माता। तद्भव शब्द संस्कृत शब्दोंसे उत्पन्न होते हैं; जैसे, मेह, भगत। देशी शब्द प्रदेश विशेषके शब्द होते हैं; जैसे, डोंगी, डाभ। विदेशी शब्द अन्य भाषाओंके शब्द हैं; जैसे, खरगोश, शेर, ट्रेन, गिरजा, कम्पनी आदि।

अर्थके अनुसार शब्द ५ प्रकारके होते हैं, संज्ञा, सर्वनाम विशेषण, क्रिया और अव्यय।

किसी वस्तुके नामको संज्ञा कहते हैं; जैसे, पहाड़, पोथी सोहन, खरहा आदि।

किसी वस्तुके गुण, दोष, परिमाण, अवस्था और संख्या

वाचक शब्दको विशेषण कहते हैं ; जैसे, काला घोड़ा, बुरा आदमी, दूना भोजन, हंसता आदमी, बीस कपड़े।

संज्ञा शब्दोंके बदले जो शब्द प्रयुक्त होते हैं, वे सर्वनाम कहाते हैं ; जैसे, सब, मैं, तू, वह आदि।

किसी कामका करना या होना क्रिया कहाता है ; जैसे, हंसना, खेलना, पढ़ना आदि।

जिस शब्दमें वचनभेदसे या प्रत्यय जुड़नेपर भी किसी प्रकारका विकार नहीं होता, वह अव्यय कहाता है ; जैसे, ऊपर, नीचे, जब, कब, पास, दूर आदि। अव्यय बहुधा पुंल्लिंग ही होते हैं, पर कुछ अव्यय स्त्रीलिंग भी हैं।

जिनके योगसे शब्दोंकी अवस्था और अर्थमें अन्तर पड़कर सिद्धपद बनता है, वे उपसर्ग और प्रत्यय कहाते हैं। शब्दके आगे जुड़नेवाले उपसर्ग और पीछे जुड़नेवाले प्रत्यय होते हैं।

प्रत्यय चार प्रकारके होते हैं, विभक्ति प्रत्यय, तद्धित प्रत्यय, क्रियाप्रत्यय और कृत् प्रत्यय।

विभक्ति प्रत्यय बहुत ही कम हैं और कारक बताते हैं, इसलिये ये कारकान्त चिन्ह भी कहाते हैं।

संज्ञा, विशेषण और सर्वनाम शब्दोंके पीछे लगनेवाले प्रत्यय तद्धित या नामप्रत्यय कहाते हैं।

धातुमें जिन प्रत्ययोंके लगानेसे क्रियापद बनते हैं, वे क्रिया प्रत्यय कहाते हैं।

धातुओंमें जिन प्रत्ययोंके लगानेसे संज्ञा या विशेषण बनते हैं, वे कृत् प्रत्यय हैं ।

संज्ञा और क्रियाके मूलका नाम धातु है ।

संज्ञा ।

व्युत्पत्तिके अनुसार संज्ञा तीन प्रकारकी होती है, रूढ़ि, यौगिक और योगरूढ़ि ।

रूढ़ि संज्ञा वह है जिसके टुकड़ोंका अलग अलग कोई अर्थ न हो सके अथवा जिसका परम्परागत एक निश्चित अर्थ माना जाता हो, चाहे उसके और भी कई अर्थ क्यों न होते हों ; जैसे घोड़ा, गौ । घोड़ा शब्दके दो टुकड़े हुए घो और ड़ा, जिनका अलग अलग कोई अर्थ नहीं है, इसलिये घोड़ा रूढ़ि है । गौका प्रचलित अर्थ गाय है और हजारों वर्षोंसे इसका यही अर्थ चला आता है । परन्तु गौका अर्थ इन्द्रिय और पृथिवी भी होता है और चलनेवाला जीव मात्र गौ कहा जा सकता है ।

जो संज्ञा दो संज्ञाओंके योग वा प्रत्यय लगनेसे बनती है, उसका नाम यौगिक है ; जैसे, विद्यालय, पानवाला आदि । यहां पहला शब्द "विद्या" और "आलय" इन दो शब्दोंसे बना है और दूसरेमें "पान" शब्दमें "वाला" प्रत्यय लगा है ।

जो यौगिक संज्ञा अपने मिले हुए शब्दोंसे निकलनेवाले अर्थ न बताकर कोई तीसरा ही अर्थ बताती हो, वह योगरूढ़ि कहाती है ; जैसे, मोहनभोग, अंगरखा आदि । मोहनभोगका अर्थ

मोहनका भोग है, पर यह अर्थ न होकर उस शब्दका अर्थ हलवा होता है। इसी प्रकार अङ्ग वा शरीरकी रक्षा करनेवाला मात्र अंगरखा है, पर उसका अर्थ होता है, वस्त्र विशेष।

अर्थानुसार संज्ञाके और भी चार भेद किये जाते हैं, नामवाचक, जातिवाचक, गुणवाचक और भाववाचक।

किसी व्यक्ति, स्थान, देश, नदी, पर्वत प्रभृतिके नामको नामवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे, मोहन, कानपुर, भारतवर्ष, गङ्गा, हिमालय।

जिस संज्ञासे किसी जातिका बोध होता है, वह जातिवाचक संज्ञा कहाती है; जैसे, मनुष्य, घोड़ा, पुस्तक आदि। यहां मनुष्यसे मनुष्य मात्र ही समझा जाता है, घोड़ा वा पुस्तक नहीं। इसी प्रकार घोड़ा या पुस्तक कहनेसे घोड़ा या पुस्तकके सिवा हाथी या लाठी कोई नहीं समझ सकता।

गुणवाचक संज्ञा उसे कहते हैं, जिसका प्रयोग किसी प्रकारका विशेष गुण बतानेके लिये किया जाय; जैसे, मिठाई, खटाई, निमकी, स्याही आदि। यहां मिठाई कहनेसे हलवाईकी दूकानपर मिलनेवाली मिठाई, जैसे लड्डू, पेड़े, जलेबी आदिका अर्थ होता है। इसी प्रकार खटाई कहनेसे अचार या निम्बू,चटनी, निमकीसे विशेष प्रकारका पकान्न और स्याहीसे काले रंगका लिखनेका मसाला समझा जाता है। विशेषणमें प्रत्यय लगाकर गुणवाचक संज्ञा बनायी जाती है।

जिस संज्ञामें किसी वस्तुके गुण वा दोष वा क्रियाका भाव

पाया जाय, वह भाववाचक संज्ञा कहाती है ; जैसे लड़कपन, मिठास, हंसी आदि। पहले शब्दमें लड़केका, दूसरेमें मीठेका और तीसरेमें हंसनेका भाव है। जातिवाचक संज्ञा, विशेषण और धातुमें प्रत्यय लगनेसे भाववाचक संज्ञा बनती है।

लिंगविचार।

संज्ञाके दो लिङ्ग होते हैं, एक पुंल्लिङ्ग और दूसरा स्त्रीलिङ्ग। पुंल्लिङ्गसे पुरुषका और स्त्रीलिङ्गसे स्त्रीका बोध होता है। अप्राणिवाचक शब्दोंके स्त्रीलिङ्गसे हीनता वा छुटाईका भाव निकलता है।

हिन्दीमें सब पुरुषवाची शब्द पुंल्लिंङ्ग और स्त्रीवाची शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं ; जैसे, मर्द, औरत, पुरुष, स्त्री, भाई, बहन आदि शब्दोंमें पुरुषवाचक मर्द, पुरुष और भाई पुंल्लिङ्ग तथा स्त्रीवाचक औरत, स्त्री और बहन स्त्रीलिङ्ग हैं।

हिन्दीके आकारान्त शब्द पुंल्लिङ्ग और ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग होते हैं, यदि वे अपने लिङ्गोंको ठीक ठीक बतानेवाले हों ; जैसे, लड़का, लड़की, घोड़ा, घोड़ी।

नीचे लिखे ईकारान्त शब्द पुरुषवाची होनेके कारण पुंल्लिङ्ग हैं :—साईं, साखी, माली, धोबी, तेली, तम्बोली, नाई, दर्जी, बढ़ई, पटवारी, पड़ोसी, मोदी, भाई, नाती, पनती, बहनोई, ननदोई, सोती, छत्री, खत्री, हरी, केहरी, पापी।

नीचे लिखे आकारान्त शब्द स्त्रीवाची होनेसे स्त्रीलिङ्ग हैं :—माता, मा, दारा।

संस्कृतसे आये हुए पुंलिङ्ग या तद्भव शब्द हिन्दीमें साधारणतः पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग या तद्भव शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं; जैसे, सेना, हत्या, दया, क्षमा, इच्छा, यात्रा, माला, पाठशाला, गोशाला, स्त्रीलिङ्ग और पक्षी, पंछी, जी और पानी पुलिङ्ग हैं।

अपवाद—आत्मा, महिमा, अग्नि (आग), वायु, बिन्दु, (बूंद, बिन्दी,) तान, शपथ (सौह, सौगन्ध),आम (आंव), बाहु (बांह), दाह, धातु (धात), अंजली, देह, धूप, जय, मृत्यु (मौच, बास (बास=गन्ध),औषधि, सन्तान, प्रारब्ध,समाज, ऋतु, राशि और विधि संस्कृतमें पुंलिङ्ग होनेपर भी हिन्दीमें स्त्रीलिङ्ग हैं। *

पुर् और तारा स्त्रीलिङ्ग होनेपर भी पुलिङ्ग हैं।

संस्कृतसे आये हुए नपुंसक लिङ्ग या तद्भव शब्द हिन्दीमें बहुधा पुंलिङ्ग होते हैं; जैसे, फल, मधु, स्वादु (स्वाद), वारि, घृत (घी), दधि (दही)।

अपवाद—आंख, वस्तु, पुस्तक, सामर्थ्य स्त्रीलिङ्ग हैं।

अप्राणिवाचक शब्द भी आकारान्त होनेसे पुंलिङ्ग और ईकारान्त होनेसे स्त्रीलिङ्ग हैं।

अपवाद—लघुतासूचक इया प्रत्ययान्त खड़िया, लुटिया,

---

* युक्तप्रदेशके पश्चिमी जिलोंमें उर्दूके संसर्गसे गोशाला, पाठशाला और चर्चा शब्द पुंलिङ्ग बोले जाते हैं, पर लिखनेमें विशेष सावधानीके कारण स्त्रीलिङ्ग लिखे जाते हैं।

अँगिया, डिबिया, चिड़िया, पुड़िया, हंड़िया आदि स्त्रीलिङ्ग हैं। जी, पानी, घी, मोती और दही पुंलिङ्ग हैं।

टकारान्त, तकारान्त और सकारान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं ; जैसे, बनावट, थकावट, गत, पत, छत, लात, बात, मिठास, प्यास।

अपवाद—टाट, ठाट, मत, निकास आदि पुंल्लिंग हैं।

ता, ताई, गी, ई, आई, नी, आनी, आइन प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं ; जैसे, मूर्खता, सुन्दरताई, जिन्दगी, खुशी, ढिठाई, पण्डितानी और पण्डिताइन।

त्व, य, पन, पना, आपा, आव, प्रत्ययान्त शब्द पुंलिङ्ग होते हैं ; जैसे, मनुष्यत्व, राज्य, लड़कपन, गुंडपना, बुढ़ापा, बढ़ाव।

अरबीके आकारान्त और तकारान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं ; जैसे, जमा, अदालत, मुसीबत।

नीचे लिखे शब्द पुंलिङ्ग होते हैं :—

(१) पुरुषोंके नाम।

(२) बड़ी भारी और बेढङ्गी चीजोंके नाम।

(३) चांदी और पीतल छोड़कर सब धातुओं और नगोंके नाम ; जैसे, सोना, लोहा, मानिक, नीलम आदि।

(४) महीनों और वारोंके नाम ; जैसे, चैत, वैशाख सोमवार, मङ्गलवार।

(५) ग्रहोंके नाम ; जैसे, चन्द्रमा, बुध, राहु आदि।

(६) पहाड़ोंके नाम, जैसे, हिमालय, विन्ध्य।

(७) नदोंके नाम ; जैसे, सिन्धु, ब्रह्मपुत्र, दामोदर, सोनभद्र आदि।

(८) मैल, कीचड़, कफ, बलगम, बाल, सिर, माथा, मुंह, नेत्र, नयन, हाथ, पैर, कान, शरीर, पेट, कन्धा, यज्ञोपवीत, जनेऊ, हृदय, हिया, मन, अहङ्कार, कोप, लोभ, मोह और प्रेम।

(९) इ, ई, ऋ, ए, ऐको छोड़ सब अक्षरोंके नाम।

(१०) गेहूं, चावल, चना, मटर, धान, उर्द, तिल, गुड़, गन्ना।

नीचे लिखे शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं :—

(१) स्त्रियोंके नाम।

(२) कोमल, छोटी और हलकी चीजोंके नाम।

(३) चांदी और पीतल।

(४) तिथियोंके नाम ; जैसे, पड़वा, दूज, तीज आदि।

(५) नदियोंके नाम ; जैसे, गङ्गा, यमुना, सरस्वती आदि।

(६) लार, कीच, आंख, नाक, चुटिया, बिर्नी, भौंह, मूछ, दाढ़ी, कोख, छाती, नाभी, इच्छा, बुद्धि और ममता।

(७) कई विदेशी शब्दोंके नाम ; जैसे, रेल, लालटेन, लैम्प, कांग्रेस, कानफरेन्स, लिस्ट, डिक्शनरी आदि।

(८) शतभिष, श्रवण, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, मूल, पूर्वाषाढ़ और उत्तराषाढ़को छोड़ सब नक्षत्रोंके नाम।

(९) इ, ई, ऋ, ए, ऐ स्वरोंके नाम।

(१०) अरहर, मूंग, तिली, चीनी, शक्कर।

ठाकुर+आइन=ठकुराइन । पंडित+आइन=पंडिताइन ।
चौधरी+आइन=चौधराइन । गुरु+आइन=गुरवाइन ।
पांड़े+आइन=पंडाइन । चौबे+आइन=चौबाइन ।

ठाकुर, पण्डित, चौधरी, गुरु आदि शब्दोंमें आनी प्रत्यय लगाकर भी स्त्रीलिङ्ग रूप बनाते हैं ; जैसे :—

ठाकुर+आनी=ठकुरानी । पण्डित+आनी=पण्डितानी ।
चौधरी+आनी=चौधरानी । गुरु+आनी=गुरवानी ।

फारसीके मेहतर शब्दमें भी आनी प्रत्यय लगाकर मेहतरानी बनाते हैं। इसी प्रकार जेठ और देवरसे जेठानी और देवरानी स्त्रीलिङ्ग शब्द बनते हैं।

अप्राणिवाचक आकारान्त पुंलिङ्ग शब्दोंमें इया प्रत्यय लगा कर स्त्रीलिङ्ग बनाते हैं ; जैसे :—

लोटा+इया=लोटिया । सोंटा+इया=सोंटिया ।

पुरुष प्रत्यय ।

स्त्रीलिङ्ग शब्दोंमें ओई, आव और औटा प्रत्यय लगानेसे पुंलिङ्ग शब्द बनते हैं ; जैसे :—

बहन+ओई=बहनोई, ननद+ओई=ननदोई, बिल्ली+आव=बिलाव, सिल+औटा=सिलौटा।

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दोंको पुंलिङ्ग बनानेमें ईको आ प्रत्ययसे बदल देते हैं ; जैसे :—

दुअन्नी,* दुअन्ना, अधन्नी अधन्ना, गाड़ी गाड़ा, रस्सी रस्सा,

---

* एक दो सज्जनोंने [illegible] पर यह आपत्ति की है कि यह अप्रचलित है। पर ऐसी ही आपत्ति [illegible]

पोथी पोथा, हांड़ी हांड़ा, झोली झोला, मकड़ी मकड़ा, लकड़ी लकड़ा आदि।

कई ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दोंके पुंलिङ्ग रूप ईको आ प्रत्ययमें बदल देनेसे बनते हैं, जैसे, रोटी, रोट। कहीं कहीं अन्तिम अक्षरके पहलेका व्यञ्जन भी द्वित्व कर दिया जाता है; जैसे, लकड़ी, लक्कड़, टिकड़ी, टिक्कड़, गठड़ी, गट्ठड़।

शब्दोंकी साधना।

संज्ञामें दो वचन भी होते हैं, एकवचन और बहुवचन। एकवचनसे एक वस्तु और बहुवचनसे अनेक वस्तुएं जानी जाती हैं। लड़का एकवचन है, क्योंकि इससे एक ही लड़का समझा जाता है. पर लड़के कहनेसे दोसे अधिक लड़कोंका बोध होता है।

हिन्दीके संज्ञा शब्दोंमें छ विभक्तियां होती हैं पहली, दूसरी, तीसरी, चौथी. पांचवीं और सम्बोधन, पर विभक्तियोंके चिन्ह चार ही हैं। इन चिन्होंके जुड़नेके पहले शब्दमें विकार होकर जो रूप बनता है, वह सामान्य रूप कहाता है। पहली और

है। यहां ये शब्द केवल यह दिखानेको लिखे गये हैं कि ईको आसे बदल देनेसे पुंलिंग शब्द बनता है। चांदीकी दुअन्नी छोटी होनेसे दुअन्नी कहाती थी; अब निकलकी बहुत बड़ी दुअन्नी है, इससे उसे दुअन्ना कहना अनुचित नहीं। इसी प्रकार तांबेके अधन्नेके बदले यदि इकन्नीसे छोटा निकलका सिक्का चले तो वह अधन्नी ही कहायगा।

सम्बोधन विभक्तिका कोई चिन्ह नही है। आकारान्त पुंलिङ्ग शब्दोंको छोड़ किसी शब्दकी पहली विभक्तिके रूपों तथा अन्य विभक्तियोंके एकवचनके रूपमें किसी प्रकारका विकार नहीं होता। आकारान्त शब्दोंकी पहली विभक्तिके बहुवचन और सम्बोधनके दोनो वचनोंके रूपोंमें विकार होता है।

एकवचन		बहुवचन
पहली विभक्ति	(कुछ नहीं)	(कुछ नहीं)
सामान्य रूप	(„)	ओं
सम्बोधन	(„)	ओ

स्त्रीलिङ्ग शब्दोंके बहुवचनमें आं अथवा एं विकार होता है।

आकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दोंमें विकार।

एकवचन		बहुवचन
पहली विभक्ति	(कुछ नहीं)	ए
सामान्य रूप	ए	ओं
सम्बोधन	ए	ओ

अन्य अक्षरान्त पुंलिङ्ग विभक्तियोंके रूप।

एकवचन		बहुवचन
पहली		
दूसरी	को	ओंको
तीसरी	ने	

एकवचन		बहुवचन
चौथी	से	ओंसे
पांचवीं	में	ओंमें
सम्बोधन		ओ

पुलिङ्ग शब्दोंके रूप।

अकारान्त "बाप" शब्द।

	एकवचन		बहुवचन
१	ली	बाप	बाप
२	री	बापको	बापोंको
३	री	बापने	बापोंने
४	थी	बापसे	बापोंसे
५	वीं	बापमें	बापोंमें
सं०		बाप	बापो

आकारान्त पुलिङ्ग शब्दोंके रूप बाप शब्दके समान ही होते हैं।

आकारान्त "लड़का" शब्द।

	एकवचन		बहुवचन
१	ली	लड़का	लड़के
२	री	लड़केको	लड़कोंको
३	री	लड़केने	लड़कोंने
४	थी	लड़केसे	लड़कोंसे
५	वीं	लड़केमें	लड़कोंमें
सं०		लड़के	लड़को

प्रायः सब अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दोंकी साधना लड़का शब्दकी भांति ही होती है।

आकारान्त तत्सम "राजा" शब्द।*

	एकवचन	बहुवचन
१ ली	राजा	राजा
२ री	राजाको	राजाओंको
३ री	राजाने	राजाओंने
४ थी	राजासे	राजाओंसे
५ वीं	राजामें	राजाओंमें
सं	राजा	राजाओ

पिता, भ्राता, जामाता जैसे संस्कृतसम आकारान्त शब्द तथा चाचा, मामा, काका, बाबा, फूफा और नाना शब्द राजा शब्दकी भांति साधे जाते हैं। दादा शब्द दोनो प्रकारसे साधा जाता है।

इकारान्त "कवि" शब्द।

	एकवचन	बहुवचन
१ ली	कवि	कवि
२ री	कविको	कवियोंको
३ री	कविने	कवियोंने

*—कोई कोई राजा शब्दको लड़का शब्दकी भांति साधते हैं, पर यह साधना हिन्दीकी प्रकृतिके विरुद्ध है। अरबी फारसीके आकारान्त शब्दोंमें "[illegible]" सरीखे जो शब्द सर्वथा हिन्दीके हो गये हैं, उन्हें छोड़कर बाकी [illegible]

एकवचन।		बहुवचन।
४ थी	कविसे	कवियोंसे
५ वीं	कविमें	कवियोंमें
सं०	कवि	कवियो

ईकारान्त "भाई" शब्द।*

एकवचन।		बहुवचन।
१ ली	भाई	भाई
२ री	भाईको	भाइयोंको
३ री	भाईने	भाइयोंने
४ थी	भाईसे	भाइयोंसे
५ वीं	भाईमें	भाइयोंमें
सं०	भाई	भाइयो

उकारान्त "रिपु" शब्द।

एकवचन।		बहुवचन।
१ ली	रिपु	रिपु
२ री	रिपुको	रिपुओंको

---

* ईकारान्त शब्दोंके बहुवचनमें दूसरीसे पांचवीं विभक्ति तक "ओंको" आदिमें "ओं" के बदले "यों" हो जाता है। सम्बोधनके बहुवचनमें "यो" होता है। ईकारान्त शब्दोंकी उन्हीं विभक्तियोंके बहुवचनमें भी "योंको" "योंने" आदिके पहलेकी "ई" "इ" कर दी जाती है और ऊकारान्त शब्दोंका ऊ भी उ हो जाता है।

	एकवचन ।	बहुवचन ।
३री	रिपुने	रिपुओंने
४ थी	रिपुसे	रिपुओंसे
५ वीं	रिपुमें	रिपुओंमें
सं०	रिपु	रिपुओ

ऊकारान्त "भालू" शब्द ।

	एकवचन ।	बहुवचन ।
१ ली	भालू	भालू
१ री	भालूको	भालुओंको
३ री	भालूने	भालुओंने
४ थी	भालूसे	भालुओंसे
५ वीं	भालूमें	भालुओंमें
सं०	भालू	भालुओ

एकारान्त "पांड़े" शब्द ।

	एकवचन ।	बहुवचन ।
१ ली	पांड़े	पांड़े
२ री	पांड़ेको	पांड़ोंको
३ री	पांड़ेने	पांड़ोंने
४ थी	पांड़ेसे	पांड़ोंसे
५ वीं	पांड़ेमें	पांड़ोंमें
सं०	पांड़े	पांड़ो

	एकवचन।	बहुवचन।
ीं	रीतिमें	रीतियोंमें
	रीति	रीतियो

ईकारान्त "भुजाली" शब्द।

	एकवचन।	बहुवचन।
मी	भुजाली	भुजालियां
ेा	भुजालीको	भुजालियोंको
ी	भुजालीने	भुजालियोंने
थी	भुजालीसे	भुजालियोंसे
मी	भुजालीमें	भुजालियोंमें
०	भुजाली	भुजालियो

उकारान्त "वस्तु" शब्द।

	एकवचन।	बहुवचन।
मी	वस्तु	वस्तुएं
ी	वस्तुको	वस्तुओंको
ी	वस्तुने	वस्तुओंने
थी	वस्तुसे	वस्तुओंसे
मी	वस्तुमें	वस्तुओंमें
०	वस्तु	वस्तुओ

ऊकारान्त "वहू" शब्द।

	एकवचन।	बहुवचन।
मी	वहू	वहुएं

एकवचन।		बहुवचन
२ री	बहूको	बहुओंको
३ री	बहूने	बहुओंने
४ थी	बहूसे	बहुओंसे
५ वीं	बहूमें	बहुओंमें
सं०	बहू	बहुओ

एकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द हिन्दीमें नहीं है। रेलवे विदेशी शब्दोंकी साधनामें दूसरीसे सम्बोधन विभक्ति शब्दमें हिन्दी विभक्तियोंके चिन्ह मात्र लगा दिये जाते हैं, मूल शब्दमें विकार नहीं होता।

ओकारान्त "सरसों" शब्द।

सरसों शब्द एकवचनान्त है और इसमें एकवचनकी विभक्तियां लगती हैं।

सर्वनाम ।

सर्वनाम शब्दोंमें पांच ही विभक्तियां होती हैं । इनमें सम्बोधन नहीं होता और न लिंगभेद ही रहता है ।

"सब" शब्दके रूप ।

उभयवचन ।

१ ली	सब
२ री	सबको
३ री	सबने
४ थी	सबसे
५ वीं	सबमें

सब शब्दके रूप दोनो वचनोंमें एकसे होते हैं । कुछ लोग सबोंको सबोंने आदि रूप भी बनाते हैं ।

सर्वनाम कई प्रकारके हैं; जैसे, पुरुषवाचक, सम्बन्धसूचक, प्रश्नवाचक, अनिश्चयवाचक, आदरसूचक, और निजत्वसूचक ।

प्रथम पुरुष "वह" शब्द ।

	एकवचन	बहुवचन
१ ली	वह	वे
२ रा	उसे, उसको	उन्हें, उनको
३ री	उसने	उन्होंने

	एकवचन ।	बहुवचन ।
४ थी	उससे	उनसे
५ वीं	उसमें	उनमें

"यह" शब्द ।

१ ली	यह	ये
२ री	इसे, इसको	इन्हें, इनको
३ री	इसने	इन्होंने *
४ थी	इससे	इनसे
५ वीं	इसमे	इनमें

मध्यम पुरुष "तू" शब्द ।

१ ली	तू	तुम
२ री	तुझे, तुझको	तुम्हें, तुमको
३ री	तूने	तुमने
४ थी	तुझसे	तुमसे
५ वीं	तुझमें	तुममे

* नियमानुसार तो ' इसने" का बहुवचन "इनने" और ' उसने" क "उनने" होना चाहिये । कानपुरसे पश्चिम फर्रुखावाद और ब्रजतक "इनने" "उनने" लोग बोलते ही हैं, पर लिखते प्राय नहीं है । स्व० प० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी तथा और दो चार लेखक "इनने" "उनने" लिखते थे । स्वर्गवासी प० दुर्गाप्रसाद मिश्र "इनोने" लिखा करते थे। "इन्होंने" "उन्होने" के अनुकरणपर कुछ लोग विशेषकर गुजराती और महाराष्ट्र इन्होंको, उन्होंको इन्होंसे, उन्होंसे, इन्होंमे और उन्होंमे भी लिखते बोलते है ।

उत्तम पुरुष "मैं" शब्द।

	एकवचन	बहुवचन।
१ ली	मैं	हम
२ री	मुझे, मुझको	हमें हमको
३ री	मैंने	हमने
४ थी	मुझसे	हमसे
५ वीं	मुझमें	हममें

सम्बन्धसूचक "जो" शब्द।

	एकवचन।	बहुवचन।
१ ली	जो	जो
२ री	जिसे, जिसको	जिन्हें, जिनको
३ री	जिसने	जिन्होंने
४ थी	जिससे	जिनसे
५ वीं	जिसमें	जिनमें

सम्बन्ध सूचक "सो" शब्द।

	एकवचन।	बहुवचन।
१ ली	सो	सो
२ री	तिसे, तिसको	तिन्हें, तिनको
३ री	तिसने	तिन्होंने
४ थी	तिससे	तिनसे
५ वीं	तिसमें	तिनमें

आजकल "सो" शब्दका प्रयोग प्रायः नहीं होता। इसके बदले "वह" शब्दके रूपोंका व्यवहार होता है।

प्रश्नसूचक "कौन" शब्द।

	एकवचन	बहुवचन
१ ली	कौन	कौन
२ री	किसे,किसको	किन्हें,किनको
३ री	किसने	किन्होंने
४ थी	किससे	किनसे
५ वीं	किसमें	किनमें

आदरसूचक "आप" शब्द।

उभयवचन।

१ ली	आप
२ री	आपको
३ री	आपने
४ थी	आपसे
५ वीं	आपमें

दोनो वचनोंमें "आप" शब्दके रूप एकसे ही होते हैं प जहां कहीं आपका बहुवचन "आप लोग" बनाते हैं, वहां लो शब्दमें विभक्तियां लगती हैं।

"लोग" * शब्द पुल्लिङ्ग बहुवचन होता है और आकारान

---

* "लड़के लोग" "स्त्री लोग" लिखना ठीक नहीं हैं क्योंकि शब्द [illegible] बहुवचन [illegible] पुल्लिङ्ग उसका स्त्रीलिङ्ग लगाई है।

विशेषण।

संज्ञाकी भांति विशेषणमें भी लिङ्गभेद होता है,परन्तु हिन्दी आकारान्त शब्दोंमें ही, अन्य शब्दोंमें नहीं। जैसे, छोटा लड़का, छोटी लड़की, काला घोड़ा, काली घोड़ी, लाल गाय, लाल बैल। परन्तु विशेषण तत्सम होनेसे वह ज्योंका त्यों रहता है; जैसे, सुन्दर पुरुष, सुन्दर स्त्री।

संज्ञा शब्दोंकी भांति विशेषणकी साधना सब विभक्तियोंमें नहीं होती और संज्ञाके आगे सामान्य रूपका एक वचन ही रख दिया जाता है, जिस संज्ञाका वह विशेषण है वह चाहे बहुवचनान्त ही क्यों न हो; जैसे, काले घोड़ोंने लात मारी, काले टट्टूसे गिरा, उस बैलको न छेड़ो, काले घोड़ोंकी बदमाशी, सीधे लड़कोंकी शिकायत।

विशेषणके भेद।*

विशेषणके पांच भेद हैं:—गुणवाचक, संख्यावाचक, सादृश्यवाचक, परिमाणवाचक और सर्वनामवाचक। गुणवाचक विशेषण वस्तुका गुणदोष बताता है; जैसे, अच्छा या

---

* कई संस्कृताभिमानी हिन्दी लेखक संस्कृत विशेषणोंमें भी लिङ्गभेद करते हैं, परन्तु प्राचीन ग्रन्थोंमें वहीं लिङ्गभेद किया है जहां अत्यावश्यक है; जैसे पुत्रवती स्त्री, श्रीमती पण्डितानी आदि।

बुरा आदमी, लाल या काला टट्टू । संख्यावाचक विशेषण शब्दकी संख्या बताते हैं ; जैसे, पाच आदमी । सादृश्यवाचक विशेषण दूसरे शब्दोंकी सदृशता बताते हैं ; जैसे, ऐसा आदमी । परिमाणवाचक विशेषणसे परिमाण जाना जाता है ; जैसे, इतना बडा मकान ।

सख्यावाचक विशेषण शब्दोंमें अथवा यह, वह, जो, सो, कोई, कै, कई, जैसे, विशेषणोंमें भी लिङ्गभेद नहीं है । परन्तु सादृश्यवाचक ऐसा, वैसा, जैसा, तैसा, कैसा और परिमाण वाचक इतना, उतना जितना, तितना, कितना विशेषण पुंलिङ्ग एकवचन हैं । ऐसे, वैसे, जैसे, तैसे, कैसे तथा इतने, उतने, जितने, तितने, कितने बहुवचन और सामान्य रूप हैं । इसी प्रकार ऐसी, वैसी, जैसी, तैसी, कैसी तथा इतनी, उतनी, जितनी, तितनी, कितनी स्त्रीलिङ्ग हैं ।

"कोई" शब्दका बहुवचन—"कोई कोई" और सामान्य रूप "किसी" होता है । 'कोई कोई' का सामान्य रूप किन्ही है ।

क्रिया ।

किसी कामका होना या करना क्रिया कहाता है। धातुमें "ना" प्रत्यय लगनेसे क्रिया बनती है और अन्य प्रत्यय लगनेसे क्रियाके जो विविध रूप बनते हैं, वे क्रियापद कहाते हैं।

क्रिया दो प्रकारकी होती है, अकर्मक और सकर्मक। सकर्मक क्रियाका कोई कर्म होता है, पर अकर्मक क्रियाका कर्म नहीं होता। खाना सकर्मक क्रिया है, क्योंकि कोई चीज खायी जाती है और जाना सकर्मक क्रिया है, क्योंकि कुछ जाया नहीं जाता। परन्तु प्रयोगके अनुसार कभी एक ही क्रिया सकर्मक और कभी अकर्मक हो जाती है ; जैसे, वह सिर खुजलाता है और उसका सिर खुजलाता है। यहां पहले वाक्यकी खुजलाना क्रिया सकर्मक और दूसरेकी अकर्मक है।

क्रियाकी अवस्थाएं, काल, पुरुष, वचन, लिंग * और वाच्य होते हैं।

क्रियाओंकी दो अवस्थाएं होती हैं, साधारण और विशेष। साधारण अवस्थामें सीधी तरह बात कह दी जाती है और

---

* हिन्दीमें शुद्ध क्रियापद, जिन्हें संस्कृतमें तिङन्त कहते हैं, नहींके रावर हैं। इस लिये कृत्प्रत्ययों तथा दो क्रियाओंके योगसे अन्य क्रियापद नाये जाते हैं। दोनो प्रकारके क्रियापदोंकी पहचान यह है कि पहलेमें लिङ्गभेद नहीं होता और दूसरेमें होता है।

उससे कोई विशेष अर्थ नही निकलता ; जैसे, वह रोटी खाता है। पर जिस क्रियासे विशेष अर्थ निकलता है, वह उसकी विशेष अवस्था होती है।

जब किसीको आज्ञा, शाप, उपदेश, आशीर्वाद या गाली दी जाय अथवा किसी कार्यकी पूर्णता, अपूर्णता वा सम्भावना आदि बतायी जाय, तब विशेष अवस्थाकी क्रियाका प्रयोग किया जाता है; जैसे, तू वह काम कर, लड़के ऊधम न मचावें तुम्हारा परिवार सुखी रहे, वह कदाचित् कल आवे, राम रोटी खा रहा था, मैं लिखता था, इत्यादि।

काल समयको कहते हैं। मुख्य काल तीन हैं, वर्त्तमान, भूत और भविष्य।

वर्त्तमान काल वह है जो बीत रहा है; जसे, वह खाता है मैं जाता हूं।

जो काल बीत चुका, उसे भूत कहते हैं; जैसे, वह गया मैंने काम किया।

जो काल आवेगा वह भविष्य है; जैसे, मैं खाऊंगा, वह घर जायगा।

अवस्थानुसार वर्त्तमान कालके चार भेद हैं, अपूर्ण वर्त्तमान, पूर्ण वर्त्तमान, सन्दिग्ध वर्त्तमान और तात्कालिक वर्त्तमान।

अपूर्ण वर्त्तमान साधारण वा सामान्य रूपसे वर्त्तमान कालका वर्णन करता है और बताता है कि कार्य पूर्ण नहीं हुआ है; जैसे, वह आता है, मैं जाता हूं।

पूर्ण वर्त्तमान सामान्य भूत और वर्त्तमानके क्रियापदोंके योग से बनता है और बताता है कि भूत कालमें कार्य आरम्भ होकर वर्त्तमानमें पूरा हो चुका है ; जैसे, मैं आया हूं।

सन्दिग्ध वर्त्तमान बताता है कि इस समय काम होनेकी सम्भावना है ; जैसे, मोहन जाता होगा।

तात्कालिक वर्त्तमानसे जान पड़ता है कि कार्य हो ही रहा है, बन्द नहीं है ; जैसे, सोहन जा रहा है।

भूतकालके आठ भेद होते है, सामान्य भूत, अपूर्ण भूत, सन्दिग्ध भूत, पूर्ण भूत, हेतुहेतुमद् भूत, तात्कालिक भूत, सम्भाव्य अपूर्ण भूत और सम्भाव्य पूर्ण भूत।

सामान्य भूतकालके वर्णनमें कोई विशेषता नहीं होती ; जैसे, राम गया, कृष्णने रोटी खायी।

अपूर्ण भूत काल वह है जिसमें कार्य समाप्त नहीं होता ; जैसे, मोहन पोथी पढ़ता था।

पूर्ण भूत बताता है कि कार्यका आरम्भ और समाप्ति भूत कालमें ही हो चुकी थी ; जैसे, सोहनने पोथी पढ़ी थी।

सन्दिग्ध भूत वह है जिसमें कार्यके होनेका निश्चय नहीं होता, सन्देह बना रहता है; जैसे, मैं गया हूंगा।

हेतुहेतुमद्भूतमें कोई अन्य कार्यका आधार रहता है ; जैसे, मै जाता अर्थात् मैं गया नहीं, पर जिस बातपर जाना अवलम्बित था, वह हो जाती तो मैं जाता।

तात्कालिक भूतकाल वह है, जिसमें काम जारी रहता है जैसे, श्रीकृष्ण द्वारका जा रहे थे।

सम्भाव्य अपूर्ण भूतसे सम्भावनाके साथ ही भूतकालके कार्यकी अपूर्णता जानी जाती है ; जैसे, जाता होता।

सम्भाव्य पूर्ण भूतमें कार्यकी पूर्णताकी सम्भावना रहती है ; जैसे, गया होता।

भविष्य कालके दो भेद हैं, सामान्य भविष्य और सम्भाव्य भविष्य।

सामान्य भविष्यमें होनेवाली घटनाका वर्णन रहता है ; जैसे, मोहन आवेगा।

सम्भाव्य भविष्यमें भावी कार्य होनेकी सम्भावना रहती है। इसमें विधिके रूपोंका प्रयोग किया जाता है ; जैसे, वह लिखे, तू करे।

विधि और आज्ञाको छोड़ हिन्दीके सब क्रियापदोंमें लिङ्ग-भेद होता है।

क्रियामें भी प्रथम, मध्यम और उत्तम ये तीन पुरुष, एक वचन और बहुवचन दो वचन तथा पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग दो लिङ्ग होते हैं। आकारान्त पुंलिङ्ग शब्दोंकी तरह इन क्रियापदोंके लिङ्ग वचन भी ईकारान्त, ईंकारान्त तथा एकारान्त होते हैं।

क्रियाके चार वाच्य या प्रयोग हैं, कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य भाववाच्य और कर्मकर्तृवाच्य।

कर्तृवाच्यमें कर्तामें पहली विभक्ति और कर्ममें कभी

पहली और कभी दूसरी विभक्ति होती है तथा क्रियाके लिङ्ग वचन कर्त्ताके अनुसार होते हैं। अर्थात् यदि कर्त्ता पुंलिंग होता है तो क्रिया पुंलिङ्ग होती है और यदि स्त्रीलिङ्ग होता है, तो क्रिया भी स्त्रीलिङ्ग होती है। इसी प्रकार यदि कर्त्ता एक-वचन होता है तो क्रिया एकवचन और बहुवचन होता है तो क्रिया बहुवचन होती है; जैसे, मैं खाता हूं, तीन लड़के खेलते हैं, सब लड़कियां कपड़े सीती हैं, एक लड़की रोती है।

कर्मवाच्यमें कर्त्तामें तीसरी विभक्ति और कर्ममें पहली विभक्ति होती है और क्रियाके लिङ्गवचन कर्मके अनुसार ही होते हैं; जैसे लड़केने पेड़ा खाया, लड़कोंने पेड़ा खाया, लड़कीने पेड़ा खाया, लड़कियोंने पेड़ा खाया। इन वाक्योंमें कर्त्ताके लिङ्गवचन तो बदले, पर क्रिया कर्मानुसार ही रही। अगले वाक्योंमें कर्म स्त्रीलिङ्ग है, इसलिये क्रिया भी स्त्रीलिङ्ग है; जैसे, देवदत्तने रोटी खायी, राम और कृष्णने रोटी खायी, स्त्रियोंने रोटी खायी, हमने रोटियां खायीं।

भाववाच्यमें * कर्त्तामें तीसरी और कर्ममें दूसरी विभक्ति होती है और क्रिया सदा पुंलिङ्ग एकवचन रहती है; जैसे, आपने लड़कोंको मारा, स्त्रीने गायको दूहा।

---

* कर्मवाच्य और भाववाच्यके दो रूप और होते हैं, पर वे यौगिक क्रियाओंसे बनते हैं, इसलिये उनका वर्णन यौगिक क्रिया शीर्षकमें मिलेगा।

कर्मकर्त्तृवाच्यमें कर्म ही कर्त्ता हो जाता है और उसमें पहली विभक्ति होती है। कर्म करनेवाला कर्त्ता नहीं बताया जाता और दिखाया जाता है कि काम आपसे आप होता है; जैसे, भोजन बनता है अर्थात् आप ही आप बनता है; फल पकता है; मेह बरसता है; कपड़े भीगते हैं।

कर्मवाच्य और भाववाच्य केवल सकर्मक क्रियाके भूत कालिक रूपोंमें ही होते है। कर्त्तृ वाच्य और कर्मकर्त्तृवाच्य सब कालोंमें होते हैं। सकर्मक क्रियाके वर्त्तमान और भविष्य कालोंमें भी कर्त्तृवाच्य ही होता है।

क्रियाकी साधना।

विधि (प्रत्यय)

पुरुष।	एकवचन।	बहुवचन।
उत्तम	ऊं	एं, वे, यं
मध्यम	ए	ओ
प्रथम	ए	एं, वें, यं

आज्ञा (प्रत्यय)

उत्तम	ऊं	एं, वें, यं
मध्यम	ना	ना, ओ, इयो
प्रथम	ए	एं, वें, यं

आज्ञामें मध्यम पुरुषके एकवचनमें धातु और क्रिया दोनोंके रूप ज्योंके त्यों रहते हैं। आदरसूचक आज्ञा या विधिके लिये प्रत्ययोंमें [illegible] और सो, पी. ले, दे, और कर धातुओंमें "इये" के

बदले "जिये" लगाते हैं; जैसे, सीजिये, पीजिये, लीजिये, दीजिये, कीजिये।

जब कभी मध्यम पुरुषको विशेष मान देनेकी इच्छा नहीं होती और "तुम" सर्वनामका प्रयोग भी उसके लिये नहीं किया जाता, तब आदरसूचक "आप" सर्वनामके साथ भी मध्यम पुरुषके बहुवचनकी क्रिया प्रयुक्त होती है; जैसे आप कहो, आप हमारी बात मानो। मध्यम पुरुषके एकवचनके साथ जो क्रिया आती है, वह साधारणतः धातुके रूपमें ही रहती है। पर निषेधार्थक "न" के योगमें दोनो वचनोंमें क्रियाके रूपका व्यवहार होता है। "न" के बदले "मत" का प्रयोग जहां होता है, वहां एकवचनमें तो क्रियाका रूप और बहुवचनमें कभी क्रियाका रूप और कभी "ओ" या "इयो" प्रत्ययान्त क्रियापद आता है।

चार धातुओंकी सहायतासे ही सब कालोंके क्रियापद बनते हैं और इसलिये सभी क्रियापद यौगिक हैं। ये चार धातु हैं—ह, था, गा और हो। ह धातुके वर्त्तमान काल और था तथा गा धातुओंके भूतकालके रूप ही इस समय पाये जाते हैं। हो धातुकी सहायता भी अनेक क्रियापदोंके लिये आवश्यक है। जा धातुके रूपोंके बिना अंगरेजी ढंगके कर्मवाच्य और भाववाच्य नहीं बनते।

"ह" धातुके रूप (वर्त्तमान काल)।

पुरुष	एकवचन।	बहुवचन।
उत्तम	मैं हूं	हम हैं

पुरुष	एकवचन ।	बहुवचन।
मध्यम	तू है	तुम हो
प्रथम	वह है	वे हैं

"ह" धातुके रूप विधिके समान हैं, इसलिये लिङ्गभेद नही है।

भूतकालिक "था" धातुके रूप।

पुलिङ्ग।

पुरुष	एकवचन।	बहुवचन।
उत्तम	मैं था	हम थे
मध्यम	तू था	तुम थे
प्रथम	वह था	वे थे

स्त्रीलिङ्ग।

उत्तम	मै थी	हम थीं
मध्यम	तू थी	तुम थीं
प्रथम	वह थी	वे थीं

हिन्दीमें "ह" धातुको छोड सभी धातुओंसे बने क्रिया· पदोंके आज्ञा और विधिके रूपोंमें ही लिङ्गभेद नहीं होता। शेष रूप धातुमें "ता" और "आ" प्रत्ययोंके लगनेसे तथा भविष्य कालके रूप विधिमें "गा" लगनेसे बनते हैं, इसलिये इनमें लिङ्गभेद होता है। [illegible]कारान्त रूप एक प्रकारके विशेषण हैं, इसलिये पुंलिङ्ग होनेसे [illegible] [illegible]हुवचन एकारान्त और स्त्री लिङ्ग [illegible] [illegible]र्थात् बहुवचन [illegible] धातुमे "तै"

और "ए" तथा स्त्रीलिंगमें "ती" और "ई" प्रत्यय लगाने पड़ते हैं। "ती" और "ई" के बहुवचनमें तो "तीं" और "ईं" रूप बनते हैं, पर "गी" बहुवचनमें भी "गी" ही रहती है। इसका कारण यह है कि विधिके * बहुवचनमें "गी" जुड़ती है, इसलिये "गी" का बहुवचन करनेकी आवश्यकता नहीं होती। इसी प्रकार जब ती वा ईकारान्त क्रियापदोंके बाद "ह" वा

---

* जिन्हें आजकल विधि कहते हैं, किसी समयमें वे ही क्रियापद वर्तमान कालके वर्णनमें प्रयुक्त होते थे। इसके प्रमाण स्वरूप "अन्धी पीसे, कुत्ते खांय" जैसे वाक्य अबतक पाये जाते हैं। परन्तु जब इन क्रियापदोंसे वर्तमान कालका बोध न होने लगा, तब वर्तमानको बतानेके लिये इन रूपोंके साथ "ह" धातुसे बने क्रियापद लगाये जाने लगे। इसी प्रकार अपूर्ण भूत काल बतलानेके लिये विधिके साथ "था" धातुके रूप और भविष्य बतानेके लिये "गा" धातुके रूप लगने लगे। संस्कृतकी अस् धातुमे हिन्दीकी "ह" धातु, स्था धातुमे "था" और गम् धातुसे "गा" धातु निकली हैं। "ह" धातुके वर्तमानके "था" और "गा" धातुओंके भूतके रूप ही मिलते हैं। संस्कृतकी स्था और गम् धातुओंमें "क्त" प्रत्यय लगनेसे भूतकालिक स्थितः और गतः रूप बनते हैं और इन्हीसे प्राकृतके नियमोंसे "था" और "गा"। बने हैं। इस प्रकार वर्तमानमें "जाय है" "खाय है" अपूर्ण भूतमें "जाय था" "खाय था" और भविष्यमें "जायगा", "खायगा" रूपोंका व्यवहार चल पड़ा। कालान्तरमें वर्तमान और अपूर्ण भूतकालोंके इन प्रयोगोंसे अर्थमें बड़ी गड़बड़ मचने लगी और "जाय" विधिके बदले संस्कृतके शतृ प्रत्ययान्त रूपोंसे बने क्रियापद प्रचलित हो गये। सामान्य भूतके क्त प्रत्ययान्त रूपोंसे बने क्रियापद पहलेसे ही व्यवहार किये जाते थे और आज भी किये जा

"या" धातुओंसे बने क्रियापद रहते हैं, तब पूर्वोक्त "ती" वा "ई" में अनुस्वार नहीं लगाते और "ह" वा "था" धातुओंसे बने बहुवचन रूप ही संयुक्त क्रियापदोंको बहुवचन बनानेमें समर्थ समझे जाते हैं।

"था" धातुकी तरह "गा" धातुके भी भूतकालिक रूप ही बनते हैं। पर विशेषता यह है कि "गा" धातुके रूप दोनो तरहके होते हैं और एकका प्रयोग भूतकालमे तथा दूसरेका विधिके साथ होनेसे भविष्य कालमें होता है। पहले रूप धातुमें या लगानेसे और दूसरे आ लगानेसे बनते हैं ; जैसे,

गा+या=गया।

	पुल्लिङ्ग।		स्त्रीलिङ्ग।	
पुरुष	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उत्तम	मैं गया	हम गये	मैं गयी	हम गयीं
मध्यम	तू गया	तुम गये	तू गयी	तुम गयीं
प्रथम	वह गया	वे गये	वह गयी	वे गयीं

"हो" धातुके रूप।

विधि और आज्ञा।

पुरुष	एकवचन।	बहुवचन।
उत्तम	मैं होऊं	हम होवें, होयं, हों
मध्यम	तू होवे, होय, हो	तुम होओ, हो
प्रथम	वह होवे, होय, हो	वे होवें, होयं, हों

भविष्यकाल ।

हो+गा=होगा ।

पुंलिङ्ग ।

पुरुष ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
उत्तम	मैं होऊंगा, हूंगा	हम होवेंगे, होयंगे, होंगे
मध्यम	तू होवेगा, होयगा, होगा	तुम होओगे, होगे
प्रथम	वह होवेगा, होयगा, होगा	वे होवेंगे, होयंगे, होंगे

स्त्रीलिङ्ग ।

पुरुष	एकवचन ।	बहुवचन ।
उत्तम	मैं होऊंगी, हूंगी	हम होवेंगी, होयंगी, होंगी
मध्यम	तू होवेगी, होयगी, होगी	तुम होओगी, होगी
प्रथम	वह होवेगी, होयगी, होगी	वे होवेंगी, होयंगी, होंगी

"ता" प्रत्ययान्त हो+ता=होता ।

हेतुहेतुमद्भूत ।

पुंलिङ्ग ।

उत्तम	मैं होता	हम होते
मध्यम	तू होता	तुम होते
प्रथम	वह होता	वे होते

स्त्रीलिङ्ग ।

उत्तम	मैं होती	हम होतीं
मध्यम	तू होती	तुम होतीं
प्रथम	वह होती	वे होतीं

"आ" प्रत्ययान्त सामान्य भूत। हो+आ=होआ=हुआ।

पुंलिङ्ग।

पुरुष।	एकवचन।	बहुवचन।
उत्तम	मैं हुआ	हम हुए
मध्यम	तू हुआ	तुम हुए
प्रथम	वह हुआ	वे हुए

स्त्रीलिङ्ग।

उत्तम	मैं हुई	हम हुईं
मध्यम	तू हुई	तुम हुईं
प्रथम	वह हुई	वे हुईं

ह, था और गा धातुओंके साथ ही अन्य धातुओंके विधि, हेतुहेतुमद्भूत और सामान्य भूतके रूपोंके योगसे ही हिन्दीके समस्त क्रियापद बनते हैं।

वर्त्तमान काल।

सामान्य वर्तमान।

पुलिङ्ग। होता है।

पुरुष	एकवचन।	बहुवचन।
उत्तम	मैं होता हूं	हम होते हैं
मध्यम	तू होता है	तुम होते हो
प्रथम	वह होता है	वे होते हैं

स्त्रीलिङ्ग। होती है।

उत्तम	मैं होती हूं	हम होती हैं

पुरुष ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
मध्यम	तू होती है	तुम होती हो
प्रथम	वह होती है	वे होती हैं

तात्कालिक वर्तमान ।

पुल्लिंग । हो रहा है ।

उत्तम	मैं हो रहा हूं	हम हो रहे हैं
मध्यम	तू हो रहा है	तुम हो रहे हो
प्रथम	वह हो रहा है	वे हो रहे हैं

स्त्रीलिंग । हो रही है ।

उत्तम	मैं हो रही हूं	हम हो रही हैं
मध्यम	तू हो रही हैं	तुम हो रही हो
प्रथम	वह हो रही है	वे हो रही हैं

पूर्ण वर्त्तमान । हुआ है ।

उत्तम	मैं हुआ हूं	हम हुए हैं
मध्यम	तू हुआ है	तुम हुए हो
प्रथम	वह हुआ है	वे हुए हैं

स्त्रीलिंग । हुई है ।

उत्तम	मैं हुई हूं	हम हुए हैं
मध्यम	तू हुई है	तुम हुई हो
प्रथम	वह हुई है	वे हुई हैं

पुरुष।	एकवचन।	बहुवचन।
मध्यम	तू हो रहा था	तुम हो रहे थे
प्रथम	वह हो रहा था	वे हो रहे थे

स्त्रीलिंग। हो रही थी।

उत्तम	मैं हो रही थी	हम हो रही थीं
मध्यम	तू हो रही थी	तुम हो रही थीं
प्रथम	वह हो रही थी	वे हो रही थीं

पूर्ण भूत।

पुल्लिंग। हुआ था।

उत्तम	मैं हुआ था	हम हुए थे
मध्यम	तू हुआ था	तुम हुए थे
प्रथम	वह हुआ था	वे हुए थे

स्त्रीलिंग। हुई थी।

उत्तम	मैं हुई थी	हम हुई थीं
मध्यम	तू हुई थी	तुम हुई थीं
प्रथम	वह हुई थी	वे हुई थीं

सन्दिग्ध भूत।

पुंल्लिंग। हुआ होगा।

उत्तम	मैं हुआ हूंगा	हम हुए होंगे
मध्यम	तू हुआ होगा	तुम हुए होंगे
प्रथम	वह हुआ होगा	वे हुए होंगे

स्त्रीलिंग। हुई होगी।

पुरुष	एकवचन।	बहुवचन।
उत्तम	मैं हुई हूंगी	हम हुई होंगी
मध्यम	तू हुई होगी	तुम हुई होगी
प्रथम	वह हुई होगी	वे हुई होंगी

सम्भाव्य अपूर्ण भूत। *

पुल्लिंग। आता होता।

उत्तम	मैं आता होता	हम आते होते
मध्यम	तू आता होता	तुम आते होते
प्रथम	वह आता होता	वे आते होते

स्त्रीलिंग। आती होती।

उत्तम	मैं आती होती	हम आती होती
मध्यम	तू आती होती	तुम आती होती
प्रथम	वह आती होती	वे आती होती

सम्भाव्य पूर्ण भूत।

पुल्लिंग। आया होता।

उत्तम	मैं आया होता	हम आये होते
मध्यम	तू आया होता	तुम आये होते
प्रथम	वह आया होता	वे आये होते

* "होता होता" और "होती होती" प्रयोग व्यवहारमें नहीं आते इसीसे "हो" धातुके बदले "आ" धातुके रूप साधकर दिखाये गये हैं।

स्त्रीलिंग। आयी होती।

पुरुष	एकवचन।	बहुवचन।
उत्तम	मैं आयी होती	हम आयी होतीं
मध्यम	तू आयी होती	तुम आयी होतीं
प्रथम	वह आयी होती	वे आयी होतीं

इसी प्रकार अन्य अकर्मक क्रियाओंके रूप साधे जाते हैं। बकना, बोलना, भूलना, मिलना और लाना क्रियाओंके रूपोंके लिये भी यही नियम है। सकर्मक क्रियाओंके "आ" प्रत्ययान्त रूपोंमें अन्तर पड़ता है, क्योंकि कर्मवाच्य होनेके कारण उनमें कर्मानुसार क्रिया होती है।

सकर्मक "खा" धातु।

सामान्य भूत। खा+आ=खाआ=खाया।

पुरुष	एकवचन।		बहुवचन।	
उत्तम	मैंने	भात खाया	हमने	भात खाया
मध्यम	तूने	या	तुमने	या
प्रथम	उसने	रोटी खायी	उन्होंने	रोटी खायी

यहां कर्मके अनुसार क्रिया हुई है, कर्त्ता खानेवालेके अनुसार नहीं। यदि स्त्री बोले वा उसके विषयमें कोई और बोले, और कर्मका लिंग न बदले, तो इन रूपोंमें अन्तर न पड़ेगा।

पूर्ण वर्त्तमान।

पुरुष।	एकवचन।		बहुवचन।	
उत्तम	मैंने	भात खाया है	हमने	भात खाया है
मध्यम	तूने	या	तुमने	या
प्रथम	उसने	रोटी खायी है	उन्होंने	रोटी खायी है

पूर्ण भूत।

उत्तम	मैंने	भात खाया था	हमने	भात खाया था
मध्यम	तूने	या	तुमने	या
प्रथम	उसने	रोटी खायी थी	उन्होंने	रोटी खायी थी

सम्भाव्य पूर्ण भूत।

उत्तम	मैंने	भात खाया होता	हमने	भात खाया होता
मध्यम	तूने	या	तुमने	या
प्रथम	उसने	रोटी खायी होती	उन्होंने	रोटी खायी होती

सन्दिग्ध भूत।

उत्तम	मैंने	भात खाया होगा	हमने	भात खाया होगा
मध्यम	तूने	या	तुमने	या
प्रथम	उसने	रोटी खायी होगी	उन्होंने	रोटी खायी होगी

"आ", "जा", "खा", "ला", "दे", "ले" आदि एक अक्षरवाली धातुओंमें जब "आ" प्रत्यय लगता है, तब "आ"

"या" हो जाता है; जैसे, आया, जाया, खाया, लाया, दिया, लिया आदि। "जा" और "कर" धातुओंके भूतकालके रूपोंमें कुछ विशेषता होती है। "जा" धातुके भूतकालका रूप नियमानुसार तो "जाया" और "कर" धातुका "करा बनता है, पर हिन्दीमें "गया" और "किया" रूप भी बनते हैं और इन्हीका बहुत प्रचलन है। "करा" शिष्ट प्रयोग नहीं समझा जाता, यद्यपि बोलचालमें आता है और "जाया" यौगिक क्रियाओंके "वह ले जाया जाता है और मुझसे जाया जाता है" जैसे कर्मवाच्य और भाववाच्यमें ही काम आता है। दो प्रकारके रूपोंका कारण यह है कि जाया, गया आदि संस्कृतके क्त प्रत्ययान्त गतः और कृतः कृदन्त रूपोंसे बने हैं।

आकारान्त धातु गोंको छोड़ एक अक्षरवाली धातुओंमें जब "आ" अथवा "या" प्रत्यय जुड़ता है, तब धातुका दीर्घ स्वर "ह्रस्व" हो जाता है। एकारान्त धातु "इकारान्त" हो जाती है, जैसे, ले और दे धातुओंसे लिया, दिया।

दिया, लिया, सिया, पिया और किया क्रियापदोंके स्त्रीलिङ्गमें दी, ली, सी, पी और की रूप होते हैं। *

जिस क्रियासे कार्यका समाप्ति नहीं होती और जिसे अन्य क्रियाका अपेक्षा रहती है, वह असमापिका या पूर्वकालिक

*—ये रूप नियमसे विरुद्ध जान पड़ते हैं, परन्तु विचारपूर्वक देखनेसे नियमानुसार हो ठहरते हैं। दिया, लिया आदिके स्त्रीलिङ्ग रूप दियी, लियी, सियी, पियी और कियी होते हैं। [illegible]

क्रिया कहाती है। यह यातो धातुके रूपमें ही रहती है, या उसमें "कर", "के" वा "करके" जुड़नेसे बनती है; जैसे, जा, जाकर, जाके, जाकरके।

प्रेरणार्थक क्रिया।

जो क्रिया किसी कार्यके लिये दूसरेको प्रेरित करती है, वह प्रेरणार्थक क्रिया कहाती है; जैसे, करवाना, बुलवाना, खिंचवाना।

अकर्मक, कर्मकर्त्तृक और सकर्मक तीनो प्रकारकी क्रियाओंसे प्रेरणार्थक क्रिया बनती है।

अकर्मक और कर्मकर्त्तृक क्रियाओंसे दो प्रकारकी प्रेरणार्थक क्रिया बनती है। एक वह जिससे जिस मनुष्यको प्रेरणा की जाती है, वही काम करता है। दूसरी वह जिससे प्रेरणा की जाती है, वह दूसरेसे काम कराता है; जैसे चढ़ना अकर्मक क्रियासे पहली प्रेरणार्थक क्रिया चढ़ाना और दूसरी प्रेरणार्थक चढ़वाना। इसी प्रकार पिघलना कर्मकर्त्तृक क्रियासे पहली प्रेरणार्थक क्रिया पिघलाना और दूसरी प्रेरणार्थक क्रिया

कलकत्तेके सारसुधानिधि और उचितवक्ता पत्रोंमें ये ही रूप लिखे जाते थे. और पं० केशवराम भट्ट कृत व्याकरणमें पाये भी जाते हैं। परन्तु पीछे इन रूपोंकी "यी" के बदले "ई" लिखी जाने लगी और ये रूप दिई, लिई, सिई और किई हो गये। अब भी अनेक मनुष्य दिई, लिई आदि लिखते देखे जाते हैं। कालान्तरमें सन्धिके नियमानुसार इन रूपोंकी "ई" अगले अक्षरमें मिल गयी और दी, ली आदि रूप बन गये।

पिघलवाना बनती है। पहली सकर्मक और दूसरी करण भावयुक्त सकर्मक प्रेरणार्थक क्रिया है।*

इन क्रियाओंकी धातुमें "आ" लगानेसे पहली प्रेरणार्थक और "वा" लगानेसे दूसरी प्रेरणार्थक क्रिया बनती है; जैसे,

अकर्मक क्रिया।

	प्रेरणार्थक	करणभावयुक्त प्रेरणार्थक
बैठना	बैठाना	बैठवाना
उठना	उठाना	उठवाना
चलना	चलाना	चलवाना
हंसना	हंसाना	हंसवाना
तैरना	तराना	तैरवामा

कर्मकर्तृक क्रिया।

चमकना	चमकाना	चमकवाना
पिघलना	पिघलाना	पिघलवाना
भटकना	भटकाना	भटकवाना

कई कर्मकर्तृक क्रियाओंसे सकर्मक प्रेरणार्थक क्रिया धातुमें "आ" न लगाकर उसके प्रथम अक्षरके अकारको दीर्घ कर देनेसे बनती है और मूल क्रियाके अन्तमें "आ" और "वा" जोड़नेसे करणभावयुक्त प्रेरणार्थक क्रिया बनती है; जैसे,

लदना	लादना	लदाना	वा	लदवाना
बंधना	बांधना	बंधाना	वा	बंधवाना
कटना	काटना	कटाना	वा	कटवाना
मरना	मारना	मराना	वा	मरवाना

* करणभावयुक्त प्रेरणार्थक क्रिया हिन्दीकी विशेषता है, जो अन्य भाषाओंमें नहीं दिखती।

फटना	फाड़ना	फड़ाना वा	फड़वाना
निकलना	निकालना	निकलाना वा	निकलवाना
दबना	दाबना वा	दबाना	दबवाना

यहां दबना क्रियाको छोड़ सब क्रियाओंकी करणभावयुक्त प्रेरणार्थक क्रियाके दो रूप दिखाये गये हैं। पहला रूप सकर्मक प्रेरणार्थकका ही है, पर अर्थ करणभावयुक्त प्रेरणार्थकका देता है।

कहीं कहीं कर्मकर्त्तृक क्रियाकी सकर्मक प्रेरणार्थक क्रिया बनानेके समय धातुके अन्तमें "आ" और "ओ" दोनो लगा सकते हैं; जैसे,

भीगना	भिगाना वा भिगोना	भिगवाना
डूबना	डुबाना वा डुबोना	डुबवाना

कई अकर्मक और कर्मकर्त्तृक धातुओंके आदि अक्षर इकार वा उकारयुक्त हों, तो उनकी सकर्मक क्रियाके आदि अक्षर एकार वा ओकारयुक्त होते हैं; जैसे,

खिंचना	खेंचना, खींचना	खिंचाना	खिंचवाना
दिखना	देखना	दिखाना, दिखलाना	दिखवाना
गिरना	* गेरना	गिराना	गिरवाना
पिलना	पेलना	पिलाना	पिलवाना
मिलना	* मेलना	मिलाना	मिलवाना
निबड़ना	निबेड़ना निबाड़ना	निबड़ाना	निबड़वाना

* गेरना और मेलना राजपूतानेकी बोलियोंमें आते हैं।

खुलना	खोलना	खुलवाना
घुलना	घोलना	घुलवाना

जिन कर्मकर्तृक धातुओंके आदि अक्षर ऊकारान्त और अन्तिम टकारान्त होते हैं, उनकी सकर्मक क्रियामें ऊकार ओकार हो जाता है और टकार दोनो प्रेरणार्थक क्रिआओंमें ड़ हो जाता है ; जैसे,

फूटना	फोड़ना	फुड़ाना	वा	फुड़वाना
टूटना	तोड़ना	तुड़ाना	वा	तुड़वाना
छूटना	छोड़ना	छुड़ाना	वा	छुड़वाना

एक अक्षरवाली अकर्मक वा सकर्मक धातुओंसे प्रेरणार्थक क्रिया बनाते समय प्रथम प्रेरणार्थकमें "ला" और द्वितीय प्रेरणार्थकमें "लवा" लगाते हैं, जसे,

खाना	खिलाना	खिलवाना
पीना	पिलाना	पिलवाना
सोना	सुलाना	सुलवाना
रोना	रुलाना	रुलवाना

कई धातुओंकी प्रेरणार्थक क्रियाओंके दो रूप होनेपर भी उनके अर्थों में अन्तर नहीं पड़ता ; जैसे,

सीना	सिलाना	वा	सिलवाना
देना	दिलाना	वा	दिलवाना
छापना	छपाना	वा	छपवाना

परखना	परखाना	या	परखवाना
करना	कराना	या	करवाना

इसी प्रकार कई एकाक्षरी सकर्मक धातुओंकी एक ही प्रकारकी प्रेरणार्थक क्रिया बनती है और "ला" के बदले "वा" लगाया जाता है ; जैसे,

गाना	गवाना
लेना	लिवाना

अनेक सकर्मक और अकर्मक धातुओंकी प्रेरणार्थक क्रिया साधारण नियमसे ही बनती है ; जैसे,

पकड़ना	पकड़ाना	पकड़वाना
समझना	समझाना	समझवाना
जगना	जगाना	जगवाना
जीतना	जिताना	जितवाना
घूमना	घुमाना	घुमवाना
सूंघना	सुंघाना	सुंघवाना
सुनना	सुनाना	सुनवाना
बोलना	बुलाना	बुलवाना

सकर्मक धातुओंकी प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया "आ" और द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया "वा" लगानेसे बनती

देखना	दिखाना वा दिखलाना		दिखवाना
कहना	कहाना वा कहलाना		कहवाना
सीखना	सिखाना वा सिखलाना		सिखवाना

कुछ धातुओंकी प्रेरणार्थक क्रिया बीचका अक्षर बदलनेसे बनती है ; जैसे,

रहना	रखना	रखाना,	रखवाना
बिकना	बेचना	बिकाना,	बिकवाना,

यौगिक क्रिया।

दो या अनेक क्रियाओंके योगसे जो क्रिया बनती है, यौगिक क्रिया कहाती है। हिन्दीके आज्ञा और विधि रूपों छोड़कर सभी क्रियापद यौगिक क्रियाओंसे बनते हैं, पर यौगिक क्रियापद नहीं कहाते। इसका कारण यह है कि जिन क्रियाओंके योगसे हिन्दीके क्रियापद बनते हैं, उनके बिना काल वचन आदिका वर्णन असम्भव हो जाता है। जिन्हें हम यौगिक क्रिया कह रहे हैं, वे आना, जाना, रहना, रखना, उठना, बैठना, देना, लेना, डालना, पड़ना, सकना, चुकना, लगना, करना, चाहना आदि क्रियाओंके योगसे बनती हैं। जो क्रियाएं इनके पहले रहती हैं, उन्हीसे अर्थ निकलता है। इनके साथ युक्त होनेके कारण उनके अर्थमें कुछ विशेषता आ जाती है। अर्थ और रूपके अनुसार यौगिक क्रियाओंके अनेक भेद होते हैं। यौगिक क्रियाओंका एक भाग कृदन्त और दूसरा क्रिया रहता है।

पहली श्रेणी।

जिस यौगिक क्रियाका पहला भाग असमापिका या पूर्वकालिक क्रिया होता है, उसकी साधनामें दूसरे भागके ही रूप [illegible]ते हैं ; पहले भागकी क्रियाके अर्थमें दृढ़ताभर आ जाती

है और जिसके रूपोंकी साधना होती है, उसका कुछ अर्थ नहीं होता; जैसे, बन आना। यहां अभिप्राय तो बननेसे है और आना क्रियाका कोई अर्थ नहीं है, पर बन अर्थात् बनकर आना क्रियाका बशेष अर्थ है महत्त्व वा सफलता प्राप्त होना। इसी प्रकार मारना क्रियाका अर्थ केवल प्रहार करना है, पर "मार डालना" क्रिया जान ले लेनेके अर्थमें प्रयुक्त होती है। इसी भांति "तोड़ डालना," "खा डालना," "काट डालना" आदिके अर्थ खण्ड खण्ड करना, हड़प या पचा जाना और साबित न रखना है। इसे दृढ़ताद्योतक यौगिक क्रिया कहते हैं। गिर पड़ना, बन पड़ना, जान पड़ना, फेंक देना, गिरा देना, दिला देना, बता देना, सुना देना, दे बैठना, गो उठना, चढ़ बैठना, पी लेना, जान लेना, बैठ रहना, दे रखना, टूट जाना इसी श्रेणीकी यौगिक क्रियाएं हैं।

शक्ति वा सामर्थ्य जतानेके लिये असमापिका क्रियाके रूपके पीछे "सकना" क्रिया लगाकर खा सकना, मार सकना, जा सकना, भाग सकना, पढ़ सकना, लिख सकना जैसी यौगिक क्रियाएं बनायी जाती हैं। यह सामर्थ्यद्योतक यौगिक क्रिया है।

इसी प्रकार कार्यकी पूर्णता वा समाप्ति बतानेके लिये भी असमापिका क्रियाके ही पीछे "चुकना" क्रिया लगाकर यौगिक क्रिया बनायी जाती है; जैसे, दे चुकना, लिख चुकना, पी चुकना आदि। इनसे देने, लिखने और पीनेके कार्यकी

समाप्ति जान पड़ती है। इसका नाम पूर्णताद्योतक यौगिक क्रिया है।

दूसरी श्रेणी।

दूसरी श्रेणीकी यौगिक क्रियाका पहला भाग तो भूत कालके पुंलिङ्ग एकवचनका रूप धारण करता है और दूसरा सामान्य क्रियाके रूपमें रहता है तथा इसी पिछले भागकी साधना होती है। पहला भाग कृदन्त अव्यय होता है। इस श्रेणीकी यौगिक क्रियाका दूसरा भाग सदा "करना" या "चाहना" होता है। "करना" क्रियाके योगसे बननेवाली यौगिक क्रिया स्वभाव या व्याप्ति बताती है, इसलिये यह स्वभावद्योतक यौगिक क्रिया है। खाया करना, पढ़ा करना, लिखा करना, सोया करना आदिसे खाने, पढ़ने, लिखने और सोनेका स्वभाव जाना जाता है।

इसी प्रकार "चाहना" क्रियाके योगमें इच्छाका अर्थ पाया जाता है, इसलिये यह इच्छाद्योतक यौगिक क्रिया है। खाया चाहना, पढ़ा चाहना आदि इस श्रेणीकी क्रियाके उदाहरण हैं। कभी कभी संज्ञाके इस रूपके बदले चाहना क्रियाके योगमें खाना, पढ़ना, देना शब्दोंका भी संज्ञा रूपमें व्यवहार होता है, जैसे खाना चाहना, पढ़ना चाहना, देना चाहना आदि। इस यौगिक क्रियासे इच्छाके सिवा कार्य शीघ्र होनेका भाव भी निकलता है; जैसे, पानी बरसा चाहता है, बादल गरजा चाहता है, डाक आया चाहती है।

तीसरी श्रेणी।

तीसरी श्रेणीकी यौगिक क्रिया लगना, देना, कहना, पाना, क्रियाओंके योगसे बनती है और इसका पहला भाग क्रियाके रूपमें ही रहता है, केवल "ना" प्रत्यय "ने" कर दिया जाता है। यह कृदन्त अव्यय कहाता है; जैसे, वह खाने लगा, मैंने रामको जाने दिया, मोहनको मास्टरने जाने कहा, सोहन वहां घुसने नहीं पाया। लगना क्रियाके योगसे बननेवाली आरम्भद्योतक, देना क्रियाके योगसे बननेवाली आज्ञाद्योतक और पाना क्रियाके योगसे बननेवाली अवकाशद्योतक यौगिक क्रिया है।

चौथी श्रेणी।

चौथी श्रेणीकी यौगिक क्रियाके दोनो भागोंमें लिंगवचनानुसार अन्तर पड़ता है और दूसरे भागमें जाना, आना या रहना क्रियाके रूप होते हैं; जैसे, मैं सोता रहा, लड़की रोती आती है, लड़के हंसते आते हैं।

जिस प्रकार ऊपर हेतुहेतुमद्भूतका रूप पहले भागमें रहता है, उसी प्रकार भूतके रूपका प्रयोग भी होता है; जैसे, लड़के भागे जाते हैं, लौंडी पड़ी रहती है, मैं चला आता हूं।

कभी कभी "आना" "जाना" क्रियाओंके साथ लिङ्गवचनका विचार न करके पहले भागका क्रियापद पुंल्लिग बहुवचनके रूपमें रखा जाता है, पर यहां यह क्रियापद कृदन्त अव्यय

होता है ; जैसे, वह हंसते हंसते आता है, स्त्रियां नाचते गाते आयीं ;

पांचवीं श्रेणी ।

कभी कभी इस श्रेणीकी क्रियाका पहला भाग भूतकालिक क्रियाके पुंलिङ्ग बहुवचनके रूपोंमें रहता है और दूसरे भागमें देना, आना, जाना और छोड़ना क्रियाओंके रूप रहते हैं। इस तरहकी क्रियाओंके दो विभाग होते हैं। एक तो वह जिसका दूसरा भाग "देना" क्रियासे बनता है और दूसरा वह जिसका पहला भाग ओढ़ना, पहनना और लगना क्रियाओंके पुंलिङ्ग भूतकालिक बहुवचनके रूपमें होता है और दूसरा भाग आना, जाना और छोड़ना क्रियाओंके रूपोंमें रहता है।

"देना" क्रियाके योगसे बननेवाली यौगिक क्रिया केवल वर्त्तमान कालमें प्रयुक्त होती है ; जैसे, मैं बताये देता हूं, लड़के पाठ सुनाये देते हैं, लड़कियां सब बातें कहे देती हैं। इस प्रकारकी यौगिक क्रियाके पहले भागकी क्रिया सदा सकर्मक होती है, परन्तु वह वास्तवमें क्रिया नहीं, कृदन्त अव्यय है।

ओढ़े, पहने, लादे, लगाये जैसे रूपोंके योगसे जो यौगिक क्रिया बनती है, उसके दूसरे ही भागकी साधना होती है, परन्तु दोनोंके बीच लिङ्गवचनानुसार हुआ, हुए और हुई पद लुप्त रहते हैं ; जैसे, वह ओढ़नी ओढ़े (हुई) आती है, मैं कोट पहने (हुआ) जाता हूं, लड़के धोती पहने (हुए) आते हैं।

इस यौगिक क्रियाकी साधना तीनो कालोंमें होती है। ओढ़े, भागे, लाये, लगाये आदि कृदन्त हैं ।

छठी श्रेणी ।

यौगिक क्रियाकी छठी श्रेणीमे एक ही अर्थमें दो क्रियाएं आती है। वाक्यकी क्रियासे सम्बन्ध न होनेपर यातो ये असमापिका क्रियाएं होती हैं या "विना" अव्ययके योगमें भूतकालिक क्रियाके वहुवचनके रूपमें ; जसे, छोड छाडकर, मार-पीट कर, लूट मारकर वह चल दिया, विना कहे सुने वह चला गया ।

सातवीं श्रेणो ।

इस श्रेणीकी यौगिक क्रियाका पहला भाग विशेष्य या विशेषण होता है और दूसरेमें करना, देना, होना, खाना, आना देखना जैसी क्रियाओंके रूप रहते हैं , जैसे, अंगीकार करना, उपदेश देना। विशेषण भूतकालके एकवचनके रूपमें भी रहता है , जैसे समाप्त करना, प्राप्त होना आदि ।

भूतकालिक विशेषण यदि हिन्दीका हो तो उसमें लिंग वचनानुसार परिवर्त्तन भी होता है ; जैसे, वह गाड़ी खडी हुई, उसने घोडा खड़ा किया, लडके पड़े हुए।

आठवी श्रेणी ।

आठवीं श्रेणीको यौगिक क्रियाका दूसरा भाग "जाना" क्रियाके रूपोंसे वनता है और पहले भागकी अर्थात् मुख्य क्रिया सदा भूतकालिक होतो है। इस यौगिक क्रियाके दोनो

भागोंमें लिंगवचनानुसार परिवर्त्तन होता है। "जाना" क्रियाके योगसे जो क्रिया बनती है, वह कर्मवाच्य या भाववाच्य होती है, परन्तु इसके कर्त्तामें सदा चौथी विभक्ति या करण कारक होता है। इसके सिवा यह यौगिक क्रिया शक्ति या सामर्थ्य भी बताती है ; जैसे, मुझसे या तुझसे या उससे या हमसे या तुमसे या उनसे दूध पिया जाता है या पिया गया या पिया जायगा।

कर्म पुंलिंग बहुवचन होनेसे क्रिया भी पुंलिंग बहुवचन होगी ; जैसे मुझसे या तुझसे या उससे या हमसे अथवा तुमसे या उनसे पेड़े खाये जाते हैं या खाये गये या खाये जायंगे।

कर्म स्त्रीलिङ्ग एकवचन होनेसे क्रिया स्त्रीलिङ्ग एकवचन होती है ; जैसे, मुझसे या तुझसे या उससे या हमसे अथवा तुमसे या उनसे रोटी खायी जाती है या खायी गयी या खायी जायगी।

कर्म स्त्रीलिङ्ग बहुवचन होनेसे क्रिया स्त्रीलिङ्ग होती है जैसे, मुझसे या तुझसे या उससे या हमसे अथवा तुमसे या उनसे रोटियां खायी जाती हैं या खायी गयीं या खायी जायंगी।

जाना क्रियाके योगसे बननेवाला भाववाच्य अकर्मक क्रियामें ही होता है। इसमें, जैसा ऊपर बताता गया है, कर्त्तामें चौथी विभक्ति होती है और क्रिया सदा पुंलिङ्ग एकवचन रहती है। इसमें मुख्य क्रियाका भाव ही प्रधान है ; जैसे मुझसे या तुझसे

या उससे अथवा हमसे या तुमसे या उनसे सोया जाता है, या सोया गया या सोया जायगा।

नवीं श्रेणी।

नवीं श्रेणीकी यौगिक क्रियाका पहला भाग तो कृदन्तके रूपमें रहता है और दूसरेमें ह, था, हो और पड़ धातुओंसे बने रूप रहते हैं। इस यौगिक क्रियासे बने वाक्यके कर्त्तामें दूसरी विभक्ति होती है और यदि यौगिक क्रियाका पहला भाग सकर्मक होता है तथा कर्म व्यक्त रहता है, तो कर्मके लिङ्गवचनानुसार यौगिक क्रियाके रूप होते हैं, इसलिये यह कर्मवाच्य है; जैसे, मुझे रोटी खानी होगी, मुझे कुछ काम करना है, रामको बड़े कष्ट उठाने पड़े, कृष्णको बड़े काम करने थे। परन्तु जब यौगिक क्रियाका पहला भाग अकर्मक होता है या सकर्मक होनेपर भी कर्म अव्यक्त रहता है, तब क्रिया सदा पुंलिंग एकवचन होती है, इस लिये यह भाववाच्य होता है; जैसे, मुझे जाना है, उसे खाना था, लड़कीको रोना पड़ा या रोना होगा।

इसी प्रकार दिखाई, सुनाई, छुलाई और पकड़ाई शब्दोंके साथ "देना" क्रियाके योगसे जो क्रिया बनती है, वह भी कर्मवाच्य ही होती है। दिखाई आदि शब्दोंमें कोई विकार नहीं होता और देना क्रिया अकर्मक क्रियाके समान प्रयुक्त होती है। यहां दिखाई देना, सुनाई देना, छुलाई देना और पकड़ाई देना क्रियाओंमें इन्द्रियगोचरत्व मात्र पाया जाता है, और दिखाई, सुनाई आदि अकर्मक हैं देने

लेनेसे उनका कोई सम्बन्ध नहीं है। इस प्रकारके कर्मवाच्यका कर्त्ता बहुधा अव्यक्त रहता है और यदि व्यक्त भी होता है, तो उसमें दूसरी विभक्ति होती है और कर्मके लिङ्गवचनानुसार ही क्रिया होती है; जैसे, सरस्वती बहुत दिनों बाद दिखाई दी, रामका बोल सुनाई दिया, वह किसीको छुलाई नहीं देता, उससे चोर पकड़ाई न देगा। ये प्रयोग दृष्टिगोचर होना, कर्णगोचर होना, स्पर्शगत और हस्तगत होना अर्थ देते हैं।

"चाहिये" शब्दके योगमें इसी प्रकारके कर्मवाच्य और भाववाच्य बनते हैं। "चाहिये" तो अव्यय होनेके कारण सदा विकार रहित रहता है, पर यदि वह सकर्मक क्रियाके साथ आता है, तो कर्मके लिङ्गवचनानुसार क्रिया बदलती है और इसके कर्त्तामें दूसरी विभक्ति होती है। यह कर्मवाच्य होता है; जैसे, मुझे रोटी खानी चाहिये, उसे दस काम करने चाहिये, स्त्रीको भोजन बनाना चाहिये।

यदि क्रिया अकर्मक हो या सकर्मक होनेपर भी उसका कर्त्ता अव्यक्त हो तो क्रिया सदा पुंलिङ्ग एकवचन रहेगी। इसलिये यह क्रिया भाववाच्य होगी; जैसे, आपको जाना चाहिये, रामको अब खाना चाहिये, मोहनको अब सोना चाहिये।

नाम धातु ।

संज्ञासे जो धातुएं बनती हैं, वे नाम धातु कहाता है ।

अनेक संज्ञा शब्दोंमें क्रियाका चिन्ह "ना" जोड़ देनेसे नाम क्रिया बन जाती है और संज्ञाके रूप ही नाम धातुका काम देते हैं; जैसे, रंग, बघार, फटकार, दुतकार आदि । ये संज्ञा शब्द हैं और धातुका भी काम देते हैं । इनमें "ना" जोड़ देनेसे रंगना, बघारना, फटकारना, दुतकारना क्रियाएं बन जाती हैं ।

कुछ शब्दोंमें "आ" प्रत्यय लगानेसे नाम धातु बनती है । खटखट, फटफट, छटपट, तड़फड़, तिलमिल, लाज, बात, जैसे शब्दोंसे खटखटा, फटफटा, छटपटा, तड़फड़ा, तिलमिला, लजा, बता धातुएं और खटखटाना, फटफटाना, छटपठाना, तड़फड़ाना, तिलमिलाना, लजाना, बताना क्रियाएं बनती हैं ।

कहीं कहीं "आ"के बदले "ला" प्रत्यय लगाकर धातु बनाते हैं; जैसे, झूठसे झुठला और बातसे बतला धातुएं और झुठलाना तथा बतलाना क्रियाएं बनी हैं ।

कई संज्ञा शब्दोंमें "इया" प्रत्यय लगाकर धातु बनाते हैं; जैसे पानीसे पनिया, जूतासे जुतिया, लातसे लतिया, चुकटीसे चुटकिया आदि धातुएं और पनियाना, जुतियाना, लतियाना, चुटकियाना क्रियाएं बनी हैं ।

कृदन्त ।

कर, के और करके ।

धातुमें "कर", "के" और "करके" जोड़नेसे असमापिका या पूर्वकालिक क्रिया बनती है। इससे जान पड़ता है कि पहलेका कार्य तो हो चुका, पर उसके बादका समाप्त नहीं हुआ और इसलिये यह असमापिका या पूर्वकालिक क्रिया कहाती है ; जैसे, खा+कर=खाकर, जा+कर=जाकर, सुन+कर=सुनकर, कर+के=करके, जान+के=जानके, सुन+करके=सुनकरके । 'करके' प्रत्ययका प्रयोग बहुत कम किया जाता है। बिना प्रत्ययकी धातु भी असमापिका क्रियाका काम देती है ।

धातुमें "य" और "इ" प्रत्यय जुड़नेसे भी असमापिका क्रिया बनती है, पर पुरानी हिन्दीकी, वर्त्तमान हिन्दीकी नहीं ; जैसे, इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी बोले, यह कहि वह आगे चला ।

"ता" ।

धातुमें "ता" प्रत्यय लगानेसे जो रूप बनता है, वह तिहरा काम करता है, हेतुहेतुमद्भूनकालिक क्रिया, वर्त्तमान कालिक क्रिया और विशेषणका । यह आकारान्त पुंल्लिङ्ग एकवचन होता है ; जैसे, वह आता, मैं नहीं जानता, लड़की रोती है, लड़के खेलते हैं । आकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दोंके नियमानुसार इसके लिंगवचन बदलते हैं ।

जब "ता" प्रत्यय "ते" कर दिया जाता है और लिंगवचनके कारण इसमे अन्तर नहीं पडता, तब "ते" प्रत्यययुक्त कृदन्त अव्यय होता है।

"आ।"

धातुमे "आ" प्रत्यय लगानेसे जो रूप बनता है, वह दुहरा काम करता है, भूतकालिक क्रिया और विशेषणका। सकर्मक धातुमे "आ" प्रत्यय लगनेसे तो कर्मके लिंगवचनानुसार यह रूप रहता हैं और अकमकके कर्त्ताके अनुसार. जैसे, मैंने पोथी पढी, वह भागा चला गया। यह पुंलिङ्ग एकवचन होता है और आकारान्त पुंलिङ्ग शब्दोंकी भाति इसके लिङ्गवचन बदलते हैं।

जब "आ" "ए" कर दिया जाता है और लिङ्गवचनके कारण इसमें परिवर्त्तन नहीं होता, तब "ते" प्रत्ययवाला कृदन्त अव्यय कहाता है, जैसे, हंसते हंसते नाचते गाते।

"ना।"

धातुमें 'ना" प्रत्यय जोडनेसे जो रूप बनता है वह तिहरा काम करता है—आवश्यकता वा कर्त्तव्य, भावी कार्य और आज्ञा बनाता है जैसे, मुझे जाना है, उसे रोटी खाना हैं, तुम्हें सोना है। यह पुंलिङ्ग एकवचन होता है और आकारान्त पुंलिङ्ग एकवचन शब्दोंकी भांति इसके बहुवचन और स्त्रीलिङ्ग रूप बनते हैं।

कृत प्रत्ययोंमे तीन प्रकारसे संज्ञा शब्द बनते हैं (१) क्रियामे प्रत्यय लगानेसे, (२) धातुमे प्रत्यय जोडनेसे और (३)

धातुके रूपका ही संज्ञाकी तरह व्यवहार करनेसे। आकारान्त प्रत्यय लगनेसे शब्द पुंलिङ्ग और ईकारान्त प्रत्यय जुड़नेसे स्त्रीलिंङ्ग तथा अकारान्त प्रत्यय जुड़नेसे कभी पुंलिङ्ग और कभी स्त्रीलिंङ्ग बनता है।

"ना" जब "ने" कर दिया जाता है और लिंगवचनके कारण इसका रूप नहीं बदलता, तब यह कृदन्त अव्यय होता है; जैसे, कहने लगा, जाने दिया।

कर्तृवाचक।

वाला, हारा, हार, सार और वाहा।

वाला, हारा, हार, सार और वाहा सम्बन्धसूचक प्रत्यय क्रियाओंमें लगते हैं, जिनमें आजकल "वाला" ही प्रचलित है और "हारा" और "हार" अप्रचलित हैं। "वाला" और "हारा" जुड़नेके पहले क्रिया एकारान्त कर दी जाती हैं और "हार" तथा "सार" जुड़नेके पहले अन्तिम आकारका लोप कर दिया जाता है; जैसे, बोलना+वाला=बोलनेवाला, करना+हारा=करनेहारा, होना+हार=होनहार, सिर्जना+हार=सिर्जनहार, मिलना+सार= मिलनसार, चर+वाहा=चरवाहा। इन प्रत्ययोंके जुड़नेसे कर्तृ-वाचक संज्ञा बनती है।

इया एरा, ऐया और वैया।

धातुमें सम्बन्धसूचक इया, एरा, ऐया और वैया प्रत्यय जुड़नेसे भी कर्तृवाचक संज्ञा बनती है; जैसे, जड़+इया=

जड़िया, लूट+एरा=लुटेरा, परख+ऐया=परखैया, गा+वैया=गवैया।

आ, ना, आ, टा।

आ, ना, आ, टा कर्तृवाचक प्रत्यय हैं और धातुमें जुड़कर व्यापार या स्वभाव बताते हैं; जैसे, भूंज+आ=भूंजा (भूंजनेवाला), रो+ना=रोना (रोनेवाला अर्थात् जिसका स्वभाव रोना है), खा+आ=खाआ (खानेवाले), चट+टा=चट्टा चट्टा (चाटनेवाला)।

आक, आलू, कड़, आड़ी, ओड़ और का।

आक, आलू, कड़, आड़ी और ओड़ भी कर्तृवाचक पुंलिङ्ग प्रत्यय हैं, पर साथ ही कर्त्ताका स्वभाव भी बताते हैं और धातुमें ही जुड़ते हैं; जैसे, तैर+आक=तैराक, झगड़+आलू=झगड़ालू, भूल+कड़=भुलक्कड़, खेल+आड़ी=खिलाड़ी, हंस+ओड़=हंसोड, उचक+का=उचकका=उचक्का।

आका, आऊ और ऊ।

धातुमें "आका" "आऊ" और "ऊ" प्रत्यय लगाकर भी कर्त्तृवाचक संज्ञा बनाते हैं; जैसे, लड़+आका=लड़ाका, उड+आका=उड़ाका, टिक+आऊ=टिकाऊ। पर प्रेरणार्थक कर्त्तृवाचक संज्ञा बनानेमें "ऊ" प्रत्यय ही लगता है; जैसे, लड़ा+ऊ=लड़ाऊ जुझा+ऊ=जुझाऊ, उड़ा+ऊ=उड़ाऊ, खा+ऊ=खाऊ। इसी प्रकार लेऊ, देऊ, बेचू आदि कर्त्तृवाचक संज्ञाएं बनी हैं। साधारण

१ कर्तृवाचक संज्ञा भी "ऊ" प्रत्यय जुड़नेसे बनती है, जैसे मार+ऊ=मारू।

कर्मकारक और करणवाचक।

नी और औटी।

धातुमें "नी" प्रत्यय जुड़नेसे कर्मवाचक और करणवाचक संज्ञाएं बनती हैं, जैसे, सुंघ+नी=सुंघनी, ओढ़+नी=ओढ़नी। इनका अर्थ है सुंघने और ओढ़नेकी वस्तु। धौंक+नी=धौंकनी, कतर+नी=कतरनी, फूंक+नी=फूंकनी, कस+औटी=कसौटी शब्दोंके अर्थ हैं वे चीजें जिनसे धौंकने, कतरने, फूंकने और कसनेका काम लिया जाता है।

ई, न और आनी।

धातुमें ई, न और आनी प्रत्यय लगाकर भी करणवाचक संज्ञा बनायी जाती है; जैसे, रेत+ई=रेती, बेल+न=बेलन, चला+न=चलान, मथ+आनी=मथानी।

भाववाचक।

आई, आव आवा, ई. न, हट, वट और आस आदि।

धातुमें "आई", "आव", "आवा", "ई", "न", "त", "ती" "वट", "हट", "आस" और "आप" प्रत्यय लगनेसे भाववाचक संज्ञा बनती है; जैसे, चढ़+आई=चढ़ाई (ढालू जमीन), लड़+आई=लड़ाई, बन+आव=बनाव, भूल+आवा=भुलावा, हंस+ई=हंसी, चल+न=चलन, रह+न=रहन, खप+त=खपत, बढ़+ती=बढ़ती, घबरा+हट=घबराहट, सजा+वट=सजावट,

थका+वट=थकावट, पी+आस=प्यास, मिल+आप=मिलाप। रो धातुमें "आस" और "आई"के बदले "लास" और "लाई" प्रत्यय लगाते हैं; जैसे, रो+लास=रुलास, रो+लाई=रुलाई।

'आई" प्रत्यय दाम अर्थमें भी आता है; जैसे, रंग+आई=रंगाई, उतार+आई=उतराई, छाप+आई=छपाई।

जब "आई" प्रत्यय "देख" "सुन" "पकड़" जैसी धातुओंमें लगता है, तब वह कभी संज्ञा और कभी अव्यय होता है। दाम अर्थ होनेसे वह संज्ञा और इन्द्रियगोचरत्व होनेसे अव्यय होता है; जैसे, शीशा दिखाई, बात सुनाई आदिमें शीशा दिखाने और बात सुनानेका अर्थ है, पर दिखाई देना, सुनाई देना आदिमें इन्द्रियगोचरत्व है।

लूट, मार, पीट, दौड़, धूप, देख, भाल, पुकार, गुहार, बोल, चाल जैसी धातुएं अपने इसी रूपमें ही भाववाचक संज्ञाकी भांति व्यवहार की जाती हैं।

आन।

"आन" भाववाचक पुंलिङ्ग प्रत्यय है, पर कभी कभी कर अर्थ भी देता है; जैसे, उठ+आन=उठान, लग+आन=लगान। भूकर अर्थमें यह कर्मवाचक है।

उपसर्ग ।

शब्दोंके पहले उपसर्ग जुड़नेसे उनका अर्थ बदल जाता है। हिन्दीमें अधिकतर संस्कृतके ही उपसर्ग प्रयुक्त होते हैं, पर कुछ हिन्दीके और दो एक फारसीके भी काममें लाये जाते हैं।

अ और अन निषेधार्थक उपसर्ग हैं ; जैसे, अ+मोल=अमोल, अ+तोल=अतोल, अ+ज्ञान=अज्ञान, अ+पढ़=अपढ़, अन+पढ़=अनपढ़, अन+रीति=अनरीति, अन+मिल=अनमिल, अन+होनी=अनहोनी।

अप उपसर्ग जिस शब्दमें लगता है, उसका अर्थ उलट जाता है ; जैसे, अप+मान=अपमान अप+सगुन=अपसगुन, अप+कीर्त्ति=अपकीर्त्ति, अप+यश=अपयश (अपजस)।

नि और निर् उपसर्ग शब्दके अर्थको उलट देते हैं और इन उपसर्गोंके योगसे बननेवाले केवल विशेषण होते हैं ; जैसे नि+डर=निडर, निर्+भय=निर्भय, निर्+अपराध=निरपराध निर्+दोष=निर्दोष।

सु और उसका हिन्दी रूप स अच्छाई तथा कु और उसका हिन्दी रूप क बुराई बताता है ; जैसे, सु+पुत्र=सुपुत्र, स+पूत=सपूत, कु+पुत्र=कुपुत्र, क+पूत=कपूत, कु+ढङ्गा=कुढङ्गा, कु+टेंव=कुटेंव।

प्रति प्रत्येकता और विपरीतिता बताता है ; जैसे, प्रति+दिन

प्रतिदिन, प्रति+वादी=प्रतिवादी, प्रति+वर्ष=प्रतिवर्ष, प्रति+शब्द =प्रतिशब्द।

बे और ला तथा बिला फारसी उपसर्ग विना अर्थमें आते हैं, जैसे, बे+शक=बेशक, बे+कार=बेकार, बे+शुमार=बेशुमार, ला+चार=लाचार, ला+परवाह=लापरवाह, बिला+शक=बिलाशक।

वि हिन्दी उपसर्ग विना अर्थमें आता है; जैसे, वि+चारा=विचारा वि संस्कृतका उपसर्ग विरुद्ध वा भिन्न अर्थमें आता है; जैसे वि+पक्षी=विपक्षी, वि+धर्मी=विधर्मी।

अव्यय।

अव्यय * शब्दोंमें संज्ञा शब्दोंकी तरह लिङ्ग और वचनका बखेड़ा नहीं है। प्रायः सभी अव्यय पुल्लिङ्ग एकवचन समझे जाते हैं, पर कुछका प्रयोग स्त्रीलिङ्गकी तरह भी होता है। पुल्लिङ्ग अव्ययका स्त्रीलिङ्ग वा स्त्रीलिङ्ग अव्ययका पुल्लिङ्ग नहीं होता। स्त्रीलिङ्ग अव्यय बहुत ही कम हैं।

अव्ययके पांच भेद हैं, (१) क्रियाविशेषण, (२) सम्बन्ध सूचक (३) उभयान्वयी (४) विस्मयादिबोधक (५) और अधिकरण बोधक।

---

* संस्कृतमें तो अव्ययमें लिंगवचन नहीं होता और न उसमें किसी प्रकारका विकार ही होता है। पर हिन्दी सर्वथा संस्कृतका अनुकरण नहीं करती और इसलिये इसके कुछ अव्यय स्त्रीलिङ्ग भी माने हैं।

क्रियाविशेषण ।

क्रियाके विशेषण रूपसे जो अव्यय आते हैं, वे क्रियाविशेषण कहाते हैं ; जैसे, धीरे, सवेरे, अचानक आदि ।

कभी कभी सर्वनाम और विशेषण भी क्रियाविशेषण होते हैं ; जैसे, काम कैसा करता है, अच्छा गाता है ।

समयवाचक क्रिया विशेषण—आज, कल परसों, नरसों अतरसों, नरसों, तड़के, सवेरे, सुबह, शाम, प्रातःकाल संवत्, मिती, तारीख, सर्वदा, तत्क्षण, तत्काल, हमेशा ।

प्रकारवाचक—अचानक, अचानचक, सहसा, जानो, मानो, जल्द, जल्दी, अकस्मात्, झट, झटपट, ठीक, ठीकठाक, थोड़े, निपट, धीरे, शीघ्र, पैदल, सच, सचमुच, सत्य, अति, अत्यन्त, बिल्कुल, झूठ झूठमूठ, एकाएक, निरन्तर, केवल, लगातार, परस्पर, यथा, तथा, वृथा, सहज. निरर्थक, अधिक, व्यर्थ, अर्थात्, यानी, इति, इत्यादि, सेंत, सेंतमेंत, अथ, बहुत, निश्चय, निस्सन्देह, बेशक, कै. सर्वथा, स्वयं, खुद, आप, कदाचित् शायद, कदापि, अलबत्ता, यों, ज्यों, त्यों. क्यों ।

अव्यय ।

निषेधार्थक—न, नहीं, मत ।

स्वीकृतिबोधक—हां, सही ।

निश्चयार्थक—ही।

आवश्यकतार्थक—चाहिये।

कब, जब, तब, अब, कहां, जहां, तहां, यहां, क्रियाविशेषणोंके बाद निश्चयार्थक, "ही" आनेसे दोनोके मिलनेपर कभी, जभी, तभी, अभी, कहीं, जहीं, तहीं, यहीं, रूप बनते हैं।

हां और नहींके साथ "जी" का भी प्रयोग होता है; जैसे, जी हा, जी नही।

कभी कभी दो क्रियाविशेषण एक साथ अथवा क्रियाविशेषणके साथ संयोजक अव्यय भी आते है; जैसे, धीरे धीरे, जोरजार, जल्दी जल्दी, नहीं तो, क्यों नहीं, और कहीं।

शब्दोंके साथ 'पूर्वक" और "कर" या "करके" जोड़नेसे क्रिया विशेषण बनते हैं; जैसे, कृपापूर्वक, विशेषकर, बहुत करके। क्रियाविशेषणोंके सिवा संज्ञा शब्दोंके साथ "से" जुड़ने पर भी क्रियाविशेषण होता है; जैसे, जोरसे बोलो, आलससे काम न करो। संस्कृत शब्दोंकी तृतीयाके एकवचनके रूप और विशेष तथा साधारण जैसे शब्दोंके पीछे तः जोडनेसे विशेषतः साधारणतः क्रियाविशेषण बनते हैं।

दो पहर, सन्ध्या, सांझ, शाम क्रियाविशेषणोंके साथ कभी कभी "से" और "को" विभक्ति भी रहती है; जैसे, दो पहरको लाना, सन्ध्यासे बैठे हैं, शामको आना।

तीन तीन शब्दोंके भी क्रियाविशेषण होते हैं; जैसे, कभी कभी, कहीं न कहीं, हो न हो।

सम्बन्धसूचक अव्यय।

जो अव्यय किसी शब्दसे सम्बन्ध रखते हैं, वे सम्बन्ध सूचक अव्यय कहते हैं। इनके पहले वे शब्द आते हैं जिनसे इनका सम्बन्ध होता है।

सम्बन्धसूचक अव्यय यथार्थमें संज्ञा शब्दोंके सामान्य रूप हैं और इनकी विभक्ति लुप्त रहती है। इसी लिये सम्बन्ध सूचक "का" और "रा" प्रत्यय "के" और "रे" में बदल जाते हैं; जैसे, घरके सामने, मेरे लिये।

सम्बन्धसूचक अव्यय ये हैं:

आगे पीछे (पश्चात्), ऊपर, नीचे, तले, मारे, सामने, पास, करीब, नजदीक, समीप, निकट, अन्दर, भीतर, बाहर, साथ, संग, समान, बराबर, विरुद्ध, विपरीत, तईं, ताईं, लिये, वास्ते, निमित्त, हेतु, कारण, सबब वजह, बाइस, बीच, पार, परे, बिना, आसपास, द्वारा, अनन्तर, अनुसार, उपरान्त, बाद, विषय, बगैर, सिवा (सिवाय), अलावा, अतिरिक्त, बदले, पलटे· योग्य, लायक।

इन अव्ययोंके पहले "के" और "रे" प्रत्यययुक्त पद आते हैं और इनके बाद "में" विभक्ति लुप्त रहती है। आगे, पीछे, ऊपर और नीचे अव्ययोंके पहले "से" विभक्तियुक्त पद भी आते

हैं ; जैसे, मुझसे आगे, रामसे पीछे, कृष्णसे ऊपर, मोहनसे, नीचे।

ओर, नाई. तरफ, तरह, मार्फत, खातिर और बाबत अव्ययोंके पहले "के" वा "रे" प्रत्यययुक्त पदोंके बदले "की" "री" प्रत्यययुक्त पद आते हैं ; जैसे, मेरी ओर, रामकी नाईं, उसकी तरफ, राजाकी तरह, बाबूकी मार्फत, सोहनकी बाबत, तुम्हारी खातिर।

पर्यन्त, तक, पर, पै, सहित और समेतके पहले "के" प्रत्यय लुप्त रहता है, पर संज्ञा वा सर्वनाम सामान्य रूपमें रहते हैं। जैसे, ग्रामपर्यन्त, मुझतक, आलेपर, नावपै, प्रेमसहित, बरातियोंसमेत।

उभयान्वयी अव्यय।

जिस अव्ययका सम्बन्ध दो शब्दों वा वाक्योंके अन्वयसे होता है, वह उभयान्वयी अव्यय कहाता है।

उभयान्वयी अव्यय छ प्रकारके होते हैं, संयोजक, वियोजक, कारणवाचक, संकेतार्थक, पक्षान्तरबोधक और कर्मप्रदर्शक।

जो अव्यय दो शब्दों वा वाक्योंको जोड़ते हैं, वे संयोजक कहाते हैं ; जैसे, और, भी, फिर, पुनः।

जो अव्यय दो शब्दों वा वाक्योंको अलग करते हैं, वे वियोजक कहाते हैं ; जैसे, अथवा, किंवा, वा, या, या तो, नहीं तो, कि, चाहे, वरना।

एक पक्षकी बात समाप्त करनेके बाद दूसरे पक्षकी कहनेके पहले जो अव्यय आता है, वह पक्षान्तरबोधक कहाता है ; जैसे, पर (पै), परन्तु, किन्तु, वरं, (वरण), लेकिन, मगर, बल्कि।

कारण दिखानेके पहले जो अव्यय आता है, वह कारण-वाचक कहाता है ; जैसे, क्योंकि, कारण।

जो अव्यय पूर्वकी क्रियाका कर्म दिखानेके लिये आता है, वह कर्मप्रदर्शक कहाता है ; जैसे, कि।

जो अव्यय जोड़के साथ आते हैं, वे संकेतार्थ कहाते हैं ; जैसे, जो—तो, यद्यपि—तथापि, जोभी—सोभी, अगर्चे—ताहम फिर भी, यदि, अगर।

निमित्तार्थक अव्यय निमित्त बताते हैं ; जैसे, अतः अतएव।

विस्मयादिबोधक अव्यय।

विस्मय, हर्ष, शोक, लज्जा, ग्लानि आदि भाव प्रकट करते वाले अव्यय विस्मयादिबोधक कहाते हैं।

सम्बोधन करनेके लिये हे, हो, अहो, ओ, रे, री, अरे, अरी, अजी, अबे आते हैं; जैसे, हे राजा, हो भाई, ओ साधुओ, रे बदमाश री लुच्ची, अजी हजरत, अबे पाजी।

हर्ष प्रकट करनेके लिये वा प्रशंसामें धन्य धन्य, जय जय, वाहवाह, शाबाश, अव्यय आते है।

शोक प्रकट करने लिये हा, हाय हाय, हाय दैया, अह, ओफ; शोक, अफसोस अव्ययोंका प्रयोग होता है।

निरादर वा तुच्छता दिखानेके लिये छिः छिः, थूथू, धिक्कार, धत, दुरा, फिश अव्ययोंका व्यवहार होता है।

अभिवादनमें प्रणाम, नमस्कार, सलाम, बन्दगी, जय श्रीकृष्ण, रामराम, जयगोपाल, जुहार और आशीर्वादमें आशीर्वाद वा आशीस, असीस, चिरञ्जीव अव्यय रूपसे आते हैं।

प्रार्थना करनेमें दुहाई अव्यय आता है।

तद्धित प्रत्यय।

जो प्रत्यय संज्ञा, विशेषण वा सर्वनाममें जुड़ते हैं, वे तद्धित प्रत्यय कहाते हैं। तद्धित प्रत्ययोंके योगसे कर्तृवाचक, गुण-वाचक, भाववाचक तथा स्थानवाचक संज्ञा, विशेषण और क्रिया विशेषण बनते हैं।

कर्तृवाचक।

"वाल" प्रत्यय स्थान वा मनुष्यके नाममें जुड़नेसे निवासी वा पंडा वा सन्तान अर्थका द्योतक होता है, जैसे, (पंडा अर्थमें) प्रयाग+वाल=प्रयागवाल, गया+वाल=गयावाल, (निवासी अर्थमें) पाली+वाल=पालीवाल, (सन्तान अर्थमें) अग्र+वाल= अग्रवाल।

"वाला", "हार", "हार" प्रत्यय निवासी, व्यापारी वा वाहक अर्थ बताते हैं; जैसे, (निवासी अर्थमें) झूंझनू+वाला= झूंझनूवाला, नीमच+वाला=नीमचवाला (व्यापारी अर्थमें) टोपी+वाला=टोपीवाला, लकड़ी+हारा=लकड़िहारा, पानी+हारा =पनिहारा, मनि+हार=मनिहार।

"वान" प्रत्यय हांकने वा चलानेवाला अर्थमें आता है; जैसे, गाड़ी+वान=गाड़ीवान, फील+वान=फीलवान (महावत)।

"री" और "आरी" व्यसनी और व्यापारी अर्थमें आते हैं; जैसे, जूआ+री=जुआरी, पूजा+री=पुजारी, भीख+आरी= भिखारी।

"इया" प्रत्यय व्यापारी तथा कर्त्ता अर्थ जनानेके लिये जोड़ा जाता है; जैसे, माखन+इया=मखनिया, नोन+इया=नोनिया, आढ़त+इया=अढ़तिया।

"ई" प्रत्यय सम्बन्धी, व्यापारी, अनुयायी, निवासी तथा भावका द्योतक हैं; जैसे, बङ्गाल+ई=बङ्गाली, तेल+ई=तेली, वैद्य+ई=वैद्की, रामनन्द+ई=रामनन्दी हठ+ई=हठी।

"इत" "ऐत" व्यापारद्योतक प्रत्यय हैं; जैसे, डाका+ऐत=डकैत, लाठी+ऐत=लठैत, गोड़+ऐत=गोड़ैत वा गुड़ैत।

"जा" पुत्र अर्थद्योतक प्रत्यय है; जैसे, वहन+जा=वहेनजा=भैनजा=भाञ्जा। भाई शब्दमें "जा" प्रत्यय लगनेके समय "ई" "ती" हो जाती है; जैसे, भाई+जा=भातीजा=भतीजा।

"ची" सम्बन्धवाचक फारसी प्रत्यय है, पर कहीं व्यसन, कहीं व्यापार और कहीं उत्तरदायित्व भी बताता है; जैसे, अफीम+ची=अफीमची, मशाल+ची=मशालची, खजाना+ची=खजानची। हिन्दी शब्दोंके योगमें वह सम्बन्ध ही बताता है, पर स्थानका भी पता देता है; जैसे, घड़ों+ची=घड़ोंची (घड़ोंकी जगह) दुम+ची=दुमची (दुमका बन्धन)

"औटी" प्रत्यय पात्र अर्थमें आता है; जैसे, चूना+औटी=चुनौटी।

"आल" "उआ" "ऊ" और "आऊ" प्रत्यय भी "वाला" अर्थमें आते हैं; जैसे, घडी+आल=घड़ियाल, माछ+उआ=मछुआ, घर+आऊ=घराऊ, गर्ज+ऊ=गर्जू।

"दार" फारसी प्रत्यय सम्बन्धद्योतक है और इसके योगसे संज्ञा और विशेषण बनते हैं; जैसे, किराया+दार=किरायेदार, ज़मीन+दार=ज़मीनदार, ज़ोर+दार=ज़ोरदार, हवा+दार=हवादार।

"एड़ी" व्यसनी और "ड़ी" प्रत्यय छुटाई बतानेके लिये जोड़ा जाता है; जैसे, भांग+एड़ी=भंगेड़ी, गांजा+एड़ी=गंजेड़ी, पलङ्ग+ड़ी=पलङ्गड़ी।

विशेषण।

"का", "रा", "र", "न", "आया" सम्बन्धद्योतक प्रत्यय हैं और शब्दका सामान्य रूप होनेपर लगाये जाते हैं; जैसे, लड़का+का=लड़केका, मामा+रा=ममेरा, आप+ना=अपना, पर+आया=पराया। "रा" और "आर" व्यवसायी अर्थके भी द्योतक हैं; जैसे, कांसा+रा=कांसेरा, सोना+आर=सुनार, चाम+आर=चमार।

"सा" समान और परिमाण अर्थमें आता है; जैसे, लड़का+सा=लड़केसा, बहुत+सा=बहुतसा।

संज्ञा शब्दोंमें "ईला" प्रत्यय जुड़नेसे विशेषण बनता है; जैसे; रङ्ग+ईला=रङ्गीला, गांठ+ईला=गंठीला, भड़क+ईला=भड़कीला।

"तना" प्रत्यय संख्या और परिमाण अर्थमें आता है; जैसे, कि+तना=कितना, जि+तना=जितना।

"ऐ" संख्यावाचक प्रत्यय है; जैसे, क+ऐ=कै, ज+ऐ=जै।

"ना" और "गुना" गुणा अर्थमें आते हैं; जैसे, दो+ना=दूना, दो+गुना=दुगना, तीन+गुना=तिगुना ।

"हरा" तह अर्थमें आता है; जैसे, दो+हरा=दुहरा, तीन+हरा=तिहरा ।

"सरा", "था", "ठ" और "वा" क्रमवाचक प्रत्यय हैं; जैसे, दो+सरा=दूसरा, तीन+सरा=तीसरा, चौ+था=चौथा, छ+ठा =छठा, पांच+वां=पांचवां ।

गुणवाचक और भाववाचक ।

"आई", "आपा", "आस", "औती", "ताई", "पन", "पना" भाववाचक प्रत्यय हैं और संज्ञा वा विशेषणमें जुड़नेसे भाववाचक संज्ञा बनाते हैं; जैसे बुरा+आई=बुराई, लड़का+आई=लड़काई, बूढ़ा+आपा=बुढ़ापा, रांड़+आपा=रंड़ापा, मीठा+आस=मिठास, बाप+औती=बपौती, सुन्दर+ताई=सुन्दरताई, लड़का+पन= लड़कपन, लुच्चा+पना=लुच्चपना ।

"औना" भी गुणवाचक प्रत्यय है; जैसे, खेल+औना= खिलौना, दीठ+औना=दिठौना ।

"आई" गुणवाचक प्रत्यय भी है; जैसे, मीठा+आई=मिठाई

संस्कृतके "ता" और "त्व" भाववाचक प्रत्यय भी हिन्दीमें आते हैं; जैसे, कायर+ता=कायरता, मनुष्य+त्व=मनुष्यत्व ।

"गी" फारसी प्रत्यय भाववाचक है; जैसे, मर्दाना+गी= मर्दानगी, जिन्दा+गी=जिन्दगी ।

"चा" फारसी प्रत्यय लघुता अर्थमें आता है ; जैसे, सन्दूक+चा=सन्दूकचा, बाग+चा=बागचा=बगीचा।

"नी" सम्बन्धद्योतक भाववाचक प्रत्यय है ; जैसे, चांद+नी=चांदनी।

"इख" गुणवाचक प्रत्यय विशेषणमें लगता है ; जैसे, काला+इख=कालिख।

"औंस" भाववाचक प्रत्यय विशेषणमें लगता है ; जैसे, काला+औंस=कलौंस।

"आ" "वा" और "इया" प्यार, हीनता वा लघुता तथा "आ" और "इया" भाव दिखानेके लिये भी जोड़े जाते हैं ; जैसे, (प्यारमें) बाबू+आ=बबुआ, बच्चा+वा=बचवा=बचवा, भाई+इया=भइया=भैया, (लघुता वा तुच्छता अर्थमें) नाऊ+आ=नौआ, नरायन+आ=नरायना, चमार+वा=चमरवा, धोबी+इया=धोबिया।

(भाव अर्थमें) भूख+आ=भूखा, प्यास+आ=प्यासा, सच+आ=सचा, मैल+आ=मैला, गोल+आ=गोला, दुखी+इया=दुखिया।

"इया" प्रत्यय लघुतापूर्ण स्त्रीलिङ्गका भी द्योतक है ; जैसे सोंटा+इया=सोंटिया, खाट+इया=खटिया।

फारसी शब्दोंमें लगनेसे "आना" प्रत्यय धन, अवधि अथवा भाव बताता है ; जैसे, जुर्म+आना=जुर्माना, नजर+आना=नजराना, साल+आना=सालाना, दोस्त+आना=दोस्ताना। कहीं वस्त्र विशेषका भी अर्थ निकलता है। जैसे, दस्त+आना=दस्ताना (हाथका मोजा)।

"ड़ा" भाव, प्यार वा लघुता दिखानेको संज्ञा और विशेषण शब्दोंमें जोडा जाता है; जैसे, मुख+ड़ा=मुखड़ा, दुख+ड़ा=दुखड़ा, जोगी+ड़ा=जोगिड़ा=जोगड़ा।

"वाड़" सादृश्यसूचक गुणवाचक प्रत्यय है: जैसे, खेल+वाट=खिलवाड़।

"क" और "त" भाववाचक तथा गुणवाचक प्रत्यय हैं: जैसे, ठंढा+क=ठढक, चौ+क=चौक संग+त=संगत, रंग+त=रंगत, दिक+त=दिक़्त।

स्थानवाचक।

"आना", "आल", 'साल", "हाल", "हर" और "का' प्रत्यय स्थानबोधक हैं; जैसे, ठीक+आना=ठिकाना, मुह+आना=मुहाना, सिर+आना=सिराना, ससुर+आल=ससुराल, नाना+साल=ननसाल, दादी+हाल=ददिहाल (दादीका मैका), पी+हर=पीहर, माय+का=मायका=मैका।

क्रियाविशेषण।

"हां" और 'आ" प्रत्ययोंके लगनेसे स्थानवाचक क्रियाविशेषण बनते हैं. जैसे, क+हां=कहां, ज+हां=जहां, यह+आं=यहां, वह+आं=वहां।

"ओं" प्रत्यय प्रकारार्थमें प्रयुक्त होता है; जैसे, जि+ओं=ज्यों, कि+ओं=क्यों।

"ब" समयवाचक प्रत्यय है; जैसे, ज+ब=जब, क+ब=कब।

समास।

दो या अधिक शब्द मिलकर जब एक हो जाते हैं, तब समस्त शब्द कहाते हैं। इस मेलका नाम समास है।

समास छ प्रकारका है ; द्वन्द्व, तत्पुरुष, कर्मधारय, बहुव्रीहि, द्विगु और अव्ययीभाव।

जब दो या अधिक शब्द मिला दिये जाते हैं तथा उनमें विशेष्य विशेषणका सम्बन्ध नहीं होता, तब द्वन्द्व समास होता है, जैसे, मातापिता, बापबेटा, राईनोन, दालरोटी, सेठसाहूकार।

साधारणतः अन्तिम शब्दके लिङ्गानुसार ही समस्त शब्दका लिङ्ग होता है। परन्तु जिस लिङ्गके शब्दकी प्रधानता होती है, उसीके अनुसार कभी कभी समस्त शब्दका लिङ्ग भी माना जाता है। पितामाता, नरनारी, राजारानी जैसे शब्दोंमें प्रत्येक समस्त शब्दका अन्तिम अंश स्त्रीलिङ्ग है, पर पितामाता, नरनारी और राजारानी स्त्रीलिङ्ग नहीं माने जाते। इसी प्रकार दो या अधिक जातियोंके शब्दोंके समस्त शब्दका लिङ्ग भी यदि उसमें सब स्त्रीलिङ्ग शब्द न हुए, तो पुंलिङ्ग ही होता है। सब अवस्थाओंमें समस्त शब्द बहुवचन होता है ; जैसे, कुत्ते-बिल्ली खाये डालते हैं ; बिल्लीचूहे उपद्रव मचा रहे हैं।

जब समस्त शब्दके पहले भागमें दूसरी, चौथी और पांचवीं

विभक्तियां तथा सम्बन्ध जतानेवाले प्रत्यय रहते हैं और पिछले भागको प्रधानता होती है, तब तत्पुरुष समास होता है। अर्थानुसार पांच प्रकारका तत्पुरुष समास है।

पहला, जिसमें पूर्व भागमें दूसरी विभक्ति हो और अन्तिम भागमें कृदन्त संज्ञा हो ; जैसे, अंखफोड़ा अर्थात् आंखको फोडनेवाला, चिडीमार अर्थात् चिड़ियाको मारनेवाला, तिल-चट्टा या तेलको चाटनेवाला।

दूसरा, जिसमे पूर्व भागमें निमित्त अर्थमें दूसेरी विभक्ति हो और अन्तिम भागमें कृदन्त संज्ञा ; जैसे शरणको आया शरणा-गत, ठकुरसुहाती, हथकड़ी।

तीसरा, जिसमें पहले भागमें चौथी विभक्ति और दूसरेमें कृदन्त संज्ञा हो ; जैसे, देसनिकाला, दईमारा, मुंहमांगा, मनमाना, गुड़भरा, मनमाना, आंखदेखा।

चौथा जिसमें पहले भागमें सम्बन्ध जतानेवाले का, की, के ना, नी, ने, रा, री, रे प्रत्यय हों और दूसरेमें संज्ञा : जैसे, धर्मावतार, लखपती, हवाचक्की, घुडसाल, वनमानुस, अमचूर।

पांचवां, जिसमें पहले भागमें पांचवी विभक्ति हो और दूसरेमें संज्ञा या कृदन्त हो ; जैसे, आनन्दमगन, कैलासवासी। पनडुब्बा, घुडचढ़ो, बटमार।

[पं० कामताप्रसाद गुप्त कृत हिन्दी व्याकरणमें "दोनानाथ" शब्द "व्याकरणकी दृष्टिसे विचारणीय" बताया गया है, क्योंकि यह "दीननाथ होना चाहिये"। परन्तु दीननाथ और

दीनानाथके अर्थमें जो अन्तर है, उसपर गुरुजीने ध्यान नहीं दिया। "दीन" पुलिङ्ग और "दीना" स्त्रीलिङ्ग है। दीना शब्द द्रौपदी अर्थमें प्रयुक्त हुआ है।]

कर्मधारय समासमें विशेष्य विशेषणका योग होता है अथवा उपमा उपमेय मिलते हैं; जैसे, (विशेष्य विशेषण) नील गाय, काली मिर्च, भलामानस, कालापानी (उपमा उपमेय) लालपीला, भलाबुरा, मोटाताजा, बड़ाछोटा।

द्विगु समासमें पहले भागमें संख्या होती है और दूसरा विशेष्य होता है; जैसे, चौकोन, पंचदेव, तिकोना, दसकन्धर, दशानन।

बहुव्रीहि समासमें समस्त शब्दोंके अन्तर्गत शब्दोंका अर्थ न होकर निराला ही अर्थ होता है; जैसे, चौमुख, चारमुख हैं जिनके अर्थात् ब्रह्मा। इसी प्रकार दिगम्बर, दिशाएं हैं वस्त्र जिनके (महादेव); पीताम्बर, पीला है वस्त्र जिनका (विष्णु); लालपगड़ी, लाल है पगड़ी जिसकी (पुलिसका कान्सटेबल); कनफटा, बारहसिंगा, बहुरूपिया।

हिन्दीके बहुव्रीहि समासमें समस्त पदका अर्थ मिले हुए अक्षरोंसे भिन्न होना आवश्यक नहीं होता; जैसे, नकटा, पिकबैनी, चम्पकबरनी, चन्द्रमुखी।

अव्ययीभाव समासमें पहला पद अव्यय होता है और इसीके साथ परवर्ती शब्दका समास होता है; जैसे, प्रतिदिन, हरघड़ी, (घड़ीघड़ी), अतिकाल, निर्भय, सदाव्रत। यह समास

पुत्र लवने" "मरा सांप" "परीक्षितने" "पांचो पांडवोंने" "डाकू" "नगरवासी क्या स्त्री क्या पुरुष" "चोर" उद्देश्य और "इतिहास प्रसिद्ध है", "लवपुर वा लाहोर बसाया था", "ऋषिके गलेमें डाल गया है", "कुछ न कहा", "द्रौपदीको पत्नी माना" "नाईको मरा जान नौ दो ग्यारह हुए", "परस्पर कहने लगे" और "धीरे धीरे घरमें घुसे" विधेय हैं।

कभी कभी वाक्यके उद्देश्य और विधेय अनुक्त भी रहते हैं, जैसे, भाग यहांसे, धर्मावतार, जीता रहूंगा तो कमा खाऊंगा, दोनो वीरोंने प्रणाम किए, एकने बन्धु मान दूसरेने गुरु जान। इन वाक्योंमें "तू" और "मैं" उद्देश्य तथा "प्रणाम किया" विधेय अनुक्त है।

विशेषण उद्देश्य और विधय दोनो रूपोंमें प्रयुक्त होता है। जब वह कर्त्ताके पहले आता है, तब उद्देश्य और उसके बाद वा क्रियापदके पहले आता है, तब विधेय होता है: जैसे, मधुरी बानी बोलो, मीठे फल खाया कर, पानी ठंडा है, आदमी सीधा है। पहले और दूसरे वाक्यके विशेषण उद्देश्य और तीसरे और चौथेके विधेय हैं।

जब विशेष्य वा सर्वनाम कर्त्ताका अभाव होता है और विशेषण ही विशेष्य कर्त्ताकी भांति प्रयुक्त होता है, तब वह विशेषण ही उद्देश्य होता है और जब विशेषण क्रिया विशेषणकी भांति प्रयुक्त होकर विधेयके पहले आता है तो उसका अङ्ग होता है; जैसे: गुणी सर्वत्र आदर पाते हैं, वह अच्छा व्याख्यान देता है।

योग्यता, आकांक्षा और आसत्तियुक्त वाक्य ही ठीक ठीक अर्थ प्रकट कर सकता है।

पदोंके परस्पर उचित सम्बन्धको योग्यता, उनके अन्वयमें वक्ताकी इच्छाको आकांक्षा और उनकी समीपताको आसत्ति कहते हैं। "हाथी चिग्घाडता है" वाक्यमें हाथी और उसके चिग्घाड़नेमें उचित सम्बन्ध है। यदि हाथी कहकर चुप रह जायं, तो उसे क्रियाकी आकांक्षा वा इच्छा बनी रहती है। हाथी क्या करता है यह प्रश्न होता है और जबतक नहीं कहा जाता कि "चिग्घाड़ता है" तबतक वाक्यका अर्थ नहीं होता, क्योंकि अकेले "हाथी" कहनेसे कोई अर्थ नहीं निकलता। "हाथी" के बाद ही "चिग्घाड़ता है" कहा जाय, तो वाक्यका अर्थ होगा। पर यदि "हाथी" कहकर आध घंटे बाद "चिग्घाड़ता है" कहा जाय, तो वाक्य न बनेगा और अर्थ न होगा।

वाक्यार्थके बोधके लिये विभक्तिप्रत्ययों और कई अन्य शब्दों तथा प्रयोगोंके अर्थज्ञानका भी प्रयोजन है।

विभक्तिप्रत्ययोंके अर्थ ।

पहली विभक्ति ।

(१) कर्त्तामे पहली विभक्ति होती है, पर पहली विभक्तिवाले कर्त्ताकी क्रिया लिङ्गवचन और पुरुषमें उसके अनुकूल होती है; जैसे, वह आता है, मैं खाता हूं, लड़कियां खेलती हैं, तुम आओगे।

(२) जो संज्ञा क्रिया और कर्मसे रहित होती है और विशेष अर्थ नहीं देती, वह पहली विभक्तिमें रहती है; जैसे, पोथी, काशी, गङ्गा, लड़का ।

(३) कर्मवाच्यके कर्ममें पहली विभक्ति होती हैं; जैसे मोहनने दूध पिया, रामने रोटियां खायी, मैंने लड़के पढ़ाये ।

(४) कर्तृवाक्यके पशुपक्षिवाचक या अप्राणिवाचक कर्ममें अपनी देह सम्हालो, मेरा कहा मानो ।

(५) द्विकर्मक वाक्यके दूसरे कर्म अथवा सम्प्रदान कारक वाले वाक्यके कर्ममे पहली विभक्ति होती हैं; जैसे, मैंने उसे आदमी समझा था, पर वह गधा निकला, फकीरको पैसे दो।

दूसरी विभक्ति।

(१) कर्म और सम्प्रदान कारकोंमें दूसरी विभक्ति होती है; जैसे रामने रावणको मारा, राजाने ब्राह्मणको दान दिया।

(२) मनुष्यवाचक कर्ममें दूसरी विभक्ति होती है, पर कभी कभी जोर देनेके लिये और प्रकारके कर्मोंमें भी दूसरी विभक्ति होती है; जैसे, मास्टर लड़कोंको नहीं मारता, उस टोपीको ले आओ।

(३) जिसे धिक्कार दिया जाय या जिसके प्रति कुछ कहा जाय, उसके लिये दूसरी विभक्तिका प्रयोग होता है; जैसे, बेईमानोंको धिक्कार, भरतने कैकेयीको अप्रिय वचन कहे।

(४) समय वा क्रियाके साथ सम्बन्ध बतानेके लिये दूसरी विभक्ति होती है; जैसे, दिनको सोना मना है।

(५) उन व्यक्तियोंके वाचक शब्दोंमें दूसरी विभक्ति होती है, जिनकी रुचि किसी वस्तुके लिये होती है या जिनकी प्रसन्नताके लिये कोई काम किया जाता है; जैसे, ब्राह्मणोंको मिठाई रुचती है, लड़कोंको तमाशा दिखा दो।

(६) जिस किसीको किसी प्रयोजनसे कोई वस्तु दी जाती है, पर दे नहीं डाली जाती, उसके लिये भी दूसरी विभक्तिका प्रयोग किया जाता है; जैसे, धोबीको कपड़े दिये हैं, सुनारको सोना दे दो।

(७) "चाहिये" युक्त वाक्य तथा आवश्यकता वा कर्त्तव्य बतानेवाले वाक्यके कर्त्तामें दूसरी विभक्ति होती है; जैसे, तुम्हें घर जाना चाहिये, ० रोटी खानी है।

नमस्कार, प्रण , आशीर्वाद, बन्दगी, सलाम, आदाब जैसे शब्दोंके योगमें । दूसरी विभक्ति होती है; जैसे, बराबर

वालेको नमस्कार, बड़ोंका प्रणाम, छोटोंको आशीर्वाद, मुंशीजी को वन्दगी, मास्टर साहबको सलाम, मौलवी साहबको आदाब।

(९) द्विकर्मक वाक्यके मनुष्यवाचक कर्ममें दूसरी विभक्ति होती है; जैसे, पूतना कृष्णको दूध पिलाने लगी।

(१० कहना क्रियाके योगमें विकल्पसे दूसरी और चौथी विभक्ति होती है; जैसे, वसुदेवको समाचार कहे और वसुदेवसे समाचार कहे। दूसरी विभक्तिसे कुछ कुछ आज्ञाका भाव भी झलकता है; जैसे, नौकरसे कह दो।

(११) दाम बताने या पूछनेके समय विकल्पसे दाममें दूसरी या पांचवीं विभक्ति होती है; जैसे, यह पोथी कितनेको लाये या कितनेमें लाये। दूसरी विभक्ति निश्चित मूल्य बताती है और पांचवीं सीमा प्रकट होती है।

(१२) जब धातुज नाम निमित्तार्थ या लगना क्रियाके योगमें आता है, तब उसमें दूसरी विभक्ति होती है। यह कर्मवाचक संज्ञाके सामान्य रूपमें रहता है और दूसरी विभक्तिका चिन्ह लुप्त रहता है; जैसे, श्रीशुकदेवजी कथा सुनाने लगे, लड़के पढ़ने जाते हैं। सुनाने और पढ़ने क्रियावाचक अव्यय हैं।

(१३) क्रियाविशेषणके योगमें भी दूसरी विभक्ति होती है और उसका चिन्ह लुप्त रहता है; जैसे, कहां जाओगे, किधर जाते हो।

(१४) ओर वा प्रति अर्थ बतानेके समय भी दूसरी विभक्ति

होती है, पर यह सामान्य रूपमें रहती है ; जैसे, घर जाता हूं, वह पटने जायगा।

(१५) निमित्त या लिये अर्थमें दूसरी विभक्ति होती है ; जैसे, मुझे आम ला दो।

(१६) "वाला" अर्थमें भी दूसरी विभक्ति होती है और उससे कार्य शीघ्र होनेका भाव निकलता है ; जैसे, मैं स्कूल जानेको था, वह आज आनेको है।

तीसरी विभक्ति।

कर्मवाच्य या भाववाच्यके कर्त्तामें तीसरी विभक्ति होती है , जैसे, सब लड़कोंने रोटी खायी, लड़कियोंने आम खाये, रामने रावणको मारा।

चौथी विभक्ति।

(१) कारण और अपादान कारकोंमें चौथी विभक्ति होती है ; जसे बाणसे मारा, आंखसे देखा, पेड़से गिरा, घरनीसे निकला।

(२) क्रियाविशेषणोंके योगमें चौथी विभक्ति भी होती है, पर कहीं कहीं विभक्ति चिन्ह अनुक्त भी रहता है ; जैसे, किधरसे आये. कहांसे टपक पड़े, आगेसे लिया. पीछेसे देखा, ऊपरसे उतरे, नीचेसे आये, घरसे दूर।

(३) क्या, हीन, कम, न्यून, प्रयोजन, शून्य, रहित, भिन्न आदिके योगमें या साथ, हेतु और कारण अर्थमें और स्थान या समयकी दूरता बतानेमें चौथी विभक्तिका प्रयोग किया जाता

है; जैसे, झगड़ेसे क्या, नेत्रसे हीन, मुझसे कम, कामसे प्रयोजन, मनुष्यत्वसे शून्य, विद्यासे रहित, वानरसे भिन्न, रामसे वातचीत, भयसे कांपना, पटनेसे सौ कोस, आजसे तीसरे वर्ष।

(४) दो मनुष्यों वा वस्तुओंकी तुलना करते समय जिससे कोई वस्तु उत्कृष्ट वा निकृष्ट वतायी जाती है, उसमें चौथी विभक्ति होती है: जैसे, धनसे विद्या बढ़कर है, भिखारी तिनकेसे भी हलका होता है।

(५) जिस चिन्हसे व्यक्ति वा वस्तु पहचानी जाती है, उसमें चौथी विभक्ति होती है: जैसे, भस्मसे शैव समझा, जटाओंसे साधू माना, सिपाहियोंसे राजमहल जाना।

(६) जिन अङ्गोंमें कोई दोष होता है, उनमें चौथी विभक्ति होती है: जैसे, आंखोंसे अन्धा, कानोंसे वहरा, पैरसे लाचार।

कभी कभी चौथी विभक्तिके वदले विकल्पसे तद्धित प्रत्यय "का" और इसके रूपोंका व्यवहार किया जाता है, जैसे, आंखके अन्धे नाम नयनसुख, कानके वहरे।

पांचवीं विभक्ति।

(१) अधिकरण कारकमें पांचवीं विभक्ति होती है. जैसे, तिलोंमें तेल होता है, फूलमें सुगन्ध होती है।

(२) कारण, अवस्था वा द्वारा वतानेमें भी पांचवीं विभक्ति होती है: जैसे. तनिकसे अपराधमें ऐसा दण्ड अनुचित है,

शिवजीके ध्यानमें मग्न रहा, प्रभुने एक ही बाणमें उसका भव बन्धन काट दिया ।

(३) तीन वा अधिक मनुष्यों वा वस्तुओंमें किसी एककी श्रेष्ठता या हीनता बतानी होती है, तो जिनसे वह श्रेष्ठ वा हीन बतायी जाती है, उनके वाचक शब्दमें पांचवीं विभक्ति होती है; जैसे, पुरुषोंमें रामचन्द्र उत्तम थे, नीच सबमें निन्दनीय ही होता है ।

(४) लुप्त अवस्थामें विशेषकर सम्बन्धसूचक अव्ययके बाद पांचवीं विभक्ति बहुत होती है; जैसे, इस समय तुम चले जाओ, आंखों देखा खुसरू कहे, चार आने सेर चावल, मेरे सामने चुप रहो ।

(५) मध्य, अन्तर्गत, अवधि और अन्तर अर्थोंमें भी पांचवीं विभक्ति होती है; जैसे, हंसोंमें कौआ, समुद्रमें अथाह जल, कितने वर्षोंमें राम लौटे, विष्णु और शिवमें भेद नहीं ।

(६) मोल बतानेमें भी पांचवीं विभक्ति होती है; जैसे कितने में तुमने गाय ली ।

सम्बोधन ।

सम्बोधन विभक्तिका प्रयोग किसीको बुलाने, धिक्कारने वा हर्ष वा शोकसे उसका नाम लेनेमें किया जाता है। सम्बोधनके पहले विस्मयादिबोधक अव्यय रखना न रखना वक्ता वा लेखक की इच्छाके अधीन है ; जैसे, लड़के ! इधर आ, हा राम !

सम्बन्धवाचक प्रत्यय ।

"का" और "रा" प्रत्यय हिन्दीमें संस्कृतकी षष्ठी विभक्ति या सम्बन्ध कारकका काम करते हैं और विभक्तिकी तरह इनका प्रयोग होता है। (देखो पृष्ठ ४५ वां) आकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दोंके नियमानुसार इनके बहुवचन और सामान्य रूप "के" और "रे" और स्त्रीलिङ्ग "की" और "री" होते हैं। ये विशेषणका काम करनेके सिवा (१) सम्बन्ध, (२) स्थान, (३) निर्माणमें लगी वस्तु, (४) शुद्धता, (५) कारण, (६) अवस्था, (७) प्रकार, (८) निकास, (६) योग्यता, (१०) दाम, (११) समय, (१२) सम्पूर्णता और (१३) निश्चय वा द्रढ़ता बताते हैं ; जैसे. राजाका घोड़ा, व्रजकी नारियां, कंचनके थाल, दूधका दूध पानीका पानी, राहका थका मांदा, जब कृष्ण आठ वर्षके हुए, अचरजकी बात, आगका धुआं, पीनेका पानी, एक लाखका हीरा, दस दिनकी बात, सभाकी सभा बोल उठी, सच्चे का सच्चा ।

इन प्रत्ययोंसे युक्त पदोंके बाद यदि सविभक्तिक पद आते हैं तो विशेषणके नियमानुसार "का" और "रा" "के" और "रे" हो जाते हैं। सम्बन्धवाचक पुंलिङ्ग अव्ययोंके पहले भी "के" और "रे" रहते हैं, क्योंकि इन अव्ययोंकी विभक्ति लुप्त समझी जाती है ; जैसे, मेरे घोड़ेकी लगाम, रामके घरके पीछे।

"के" और रे" प्रत्यययुक्त पदोंका एक विशेष प्रयोग भी है। इसमें आवश्यक नहीं कि इनके बाद पुल्लिङ्ग बहुवचन या अव्यय या सविभक्तिक पद हो। ऐसे प्रयोगसे "अस्तित्व" समझा

जाता है; जैसे, मेरे बहन नहीं है, पशुपक्षीकीटपतंगोंके भी जीव हैं, उसके एक लड़का है। यहां "मेरे बहन नहीं है" वाक्यके बदले "मेरी बहन नहीं है" नहीं कह सकते, क्योंकि दोनोंके अर्थमें अन्तर है। पहले वाक्यका अर्थ है कि बोलनेवालेके माता पिताके कन्या नहीं जन्मी या इस समय जीवित नहीं है; पर दूसरे वाक्यका अर्थ है कि बहन दूसरेकी है, वक्ताकी नहीं।

शब्दों के अर्थ।

आप।

मध्यम पुरुषके प्रति आदर दिखानेको "आप" सर्वनाम प्रयुक्त होता है, पर इसकी क्रिया बहुधा प्रथम पुरुष बहुवचनमें रहती है; जैसे, आप जानते हैं कि मैं मिठाई नहीं खाता।

कभी कभी "आप" सर्वनामकी क्रिया मध्यम पुरुषके बहुवचनमें भी होती है; जैसे, आप सूर्य कुलके भूषण हो।

"आप" शब्द जिसके लिये प्रयुक्त होता है, उसे आज्ञा वा उपदेश देनेके समय इसके साथ "इयो" "इये". और "इयेगा" प्रत्यययुक्त क्रियापदोंका व्यवहार किया जाता है; जैसे, आप मेरा सन्देसा कहियो, कहिये वा कहियेगा।

अन्यत्र "आप" शब्दके साथ विधिकेसाथ प्रथम पुरुषके बहुवचनकी क्रिया आती है; जैसे, आप समझें कि यह पागल है।

"आप" स्वयं वा बिना सहायक अर्थमें भी आता है: जैसे, मैं आप चला जाऊंगा, वह आप काम कर लेगा।

कहीं अपना सम्बन्ध जताने और कहीं अपना वा दूसरेका प्रत्यक्ष सम्बन्ध परोक्ष रूपसे बतानेके लिये भी इसका प्रयोग होता है। जैसे किसी मनुष्यसे किसी लड़केके बारेमें पूछा जाय कि यह किसका लड़का है और वह उसीका हो तो वह मनुष्य यह कहनेके बदले कि "मेरा है" कहता है "आपका है"।. तीन वा अधिक मनुष्योंकी उपस्थितिमें उन्हींमें किसी एकके बारेमें कहा जाय तो आप अन्य

पुरुषके लिये भी आता है, जैसे "आपके बारेमें" यहां परोक्ष रूपसे प्रत्यक्षकी चर्चा हुई है। ऐसा प्रयोग हिन्दी उर्दूको छोड़कर किसी भाषामें नहीं है।

"आप ही आप" बिना किसीकी सहायताके वा स्वेच्छासे और मन ही मन या स्वगत अर्थोंमें भी आता है ; जैसे, आप ही आप वह बोल उठा, तू आप ही आप कह रहा है या किसीके सिखानेसे, राजा आपही आप सोच रहा था कि कैसे शत्रुको परास्त करूं।

"आपसे" और "आपसे आप" भी "आप ही आप" अर्थमें आते हैं ; जैसे, वह आपसे वहां पहुंच गया, आपसे आप उसके मनमें यह विचार उत्पन्न हुआ।

अपना।

स्वयं अर्थद्योतक "आप" सर्वनाममें सम्बन्धसूचक "ना प्रत्यय लगकर बना हुआ "अपना" शब्द "निजका" अर्थमें आता है और तीनों पुरुषोंके लिये प्रयुक्त होता है ; जैसे, सब अपनी बड़ाई चाहते हैं, तुम अपना काम करो, मैं अपने घर जाता हूं।

"अपना" शब्द विशेषणवत् भी प्रयुक्त होता है और जब विशेष्य होता है, तब आकारान्त पुलिङ्ग शब्दोंकी भांति इसकी साधना होती है ; जैसे, अपने मतलबकी बात सभी सुन लेते हैं, अपनोंसे विरोध करनेवाला नष्ट होता है।

"अपना" शब्द हमारा अर्थमें भी आता है ; जैसे, भारत [illegible] देश है, [illegible] देश।

"अपना" कभी कभी लुप्त भी रहता है ; जैसे, बापसे बेटेने विनती की, बड़ोंने लड़कोंको बहुत समझाया, वह घर जायगा।

बहुतसे लोग विशेषकर राजपुताने, महाराष्ट्र और गुजरातके रहनेवाले "अपना" और उसके स्त्रीलिङ्ग "अपनी" शब्दके बदले सम्बन्धसूचक तद्धित प्रत्ययान्त मेरा, हमारा, तेरा, तेरा, तुम्हारा, उसका, उनका और आपका शब्दों वा इनके और रूपोंका प्रयोग करते हैं ; जैसे, मै मेरा काम करूंगा, हम हमारी बात कहते है, तू तेरा काम कर वा तुम तुम्हारा काम करो, वह उसका काम करेगा, आप आपका काम करो। इन वाक्योंमें मेरा, हमारी तुम्हारा, उसका और आपका शब्दोंके बदले अपना, अपनी, अपना, अपना और अपना लिखना शुद्ध है।

"अपना अपना" शब्दोंका अर्थ है "प्रत्येक मनुष्यका निजका" या 'प्रत्येकका प्रत्येकका"; जैसे, अपने अपने भाग्यकी बात है, अपना अपना दुःख सुख भोगना पड़ता है, अपना अपना काम करो। महाराष्ट्र और गुजराती इस प्रयोगमें बड़ी भूल करते हैं और "अपना अपना काम करो" वाक्यके बदले "आप आपका काम करो" बोलते हैं।

"अपने" और "अपने राम" का प्रयोग प्रथम पुरुषके बहु-वचनके लिये बोलचालमें होता है ; जैसे, अपने तो यह काम करेंगे, अपने राम ऐसे मामलोंमें हाथ नहीं डालते।

कोई और कुछ,

"कोई" और "कुछ" दोनों अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं। को मनुष्यके लिये और कुछ वस्तुके लिये आता है ; जैसे, कोई

कहता है अर्थात् कोई मनुष्य कहता है और कुछ है अर्थात् कोई वस्तु है।

एक अज्ञात मनुष्य वा प्रायः अर्थात् लगभग अर्थमें भी "कोई" आता है; जैसे, कोई पुकारता था अर्थात् पुकारनेवाला मनुष्य तो था, पर अज्ञात था, उसको बतानेवाला नहीं जानता। कोई रामदास है अर्थात् रामदास उसका नाम है, पर बतानेवाला उसे नहीं जानता। कोई सौ वर्षकी बात है अर्थात् लगभग सौ वर्ष इस बातको बीते हुए होंगे।

"कोई कोई" बहुवचन है: जैसे, कोई कोई कहते हैं।

"कुछ" कोई शब्दके बहुवचन रूपसे जब आता है तब मनुष्य बताता है: जैसे कुछ आते थे, कुछ जाते थे।

"कुछ एक" कोई शब्दका बहुवचन होता है; जैसे कुछ एक हांमें हां मिलाते थे और बाकी विरोध करते थे।

कौन और क्या।

"कौन" और "क्या" प्रश्नवाचक सर्वनाम है, जिनमें "कौन" तो मनुष्यके लिये और "क्या" वस्तुके लिये आता है; जैसे, कौन आया है? क्या है अर्थात् क्या बात या मामला है?

"कौन कौन" वा "कौन लोग" बहुवचनमें आता है; जैसे, कौन कौन या कौन लोग जाना चाहते हैं?

कौनके साथ सादृश्यवाचक "सा" प्रत्ययलगकर "कौनसा" कौन एक अर्थमें आता है और इस समय यह विशेषण होता है; जैसे, कौनसा पाप किया जो आपको जगाया, कौनसे धर्मात्माके आप पुत्र हैं।

"कौन" यों भी प्रश्नवाचक सर्वनामका काम करता है; जैसे, तुम कौन हो ? मैं तुम्हारी रक्षा करनेवाला कौन हूं ?

"क्या" आश्चर्य प्रकट करनेके लिये भी आता है और उस समय इसके पहले "ही" रहता है ; जैसे, क्या ही सुन्दर पुरुष हैं ! क्या ही गधा है ! घरमें घुसा तो देखता क्या है कि···

"क्या—क्या" उभयान्वयी अव्ययकी भांति भी आते हैं; जैसे, क्या स्त्री क्या पुरुष सभी टकटकी लगाये देख रहे थे।

जो और सो।

"जो" और "सो" सम्बन्धवाचक सर्वनाम हैं और दोनोंका जोड़ा है ; जैसे, जो कहते हो सो करते नहीं। *

कभी कभी "जो" वाला वाक्य समाप्त कर विना "सो" के ही दूसरा वाक्य प्रारम्भ कर दिया जाता है ; जैसे, जो ईश्वराराधना करते हैं, सुखी रहते हैं।

---

* केलागने लिखा है कि बातचीतमें "जो" प्रायः बोला जाता है और इसका उदाहरण दिया है "परमेश्वर जो है सो सर्वशक्तिमान है।" परन्तु वहां "जो है सो' बातके बीचमें निरर्थक आया है। यह "तकिया कलाम" है और जहां बात भूल जाती है, वहां कोई "जो है सो", कोई "क्या नाम है", कोई "तुम्हारा क्या नाम है", और कोई "माने' बोलता है। बिहारमें "एथी" और बनारस मिर्जापुरमें "एथुआ" वा "ओथुआ" बोलते हैं। लोगोंको ऐसे निरर्थक वाक्य और शब्द बोलनेका अभ्यास हो जानेके कारण इनके प्रयोगके बिना वे बात नहीं कर सकते। पर लेखादिमें ऐसी बातें नहीं लिखी जातीं।

"सो" के बदले बहुधा "वह" बोला और लिखा जाता है: जैसे, जो दूसरेके दुखमें दुखी और सुखमें सुखी होते हैं, वे यथार्थ मनुष्य हैं।

कभी कभी "जो" भी अनुक्त रहता है, पर "जो" और "सो" दोनो एक साथ अनुक्त नहीं रहते ; जैसे, तुम्हें भावे, सो करो।

"जो" उभयान्वयी अव्ययकी भांति "यदि" वा "अगर" अर्थमें भी आता है ; जैसे, जो मैं जानता तो······

"सो" उभयान्वयी अव्ययकी भांति "अतः" "अतएव" वा "इस लिये" अर्थमें भी आता है ; जैसे, सो हे महाराज यह आपके दर्शनोंका अभिलाषी है।

"जो" के साथ ही "कोई" जब आता है, तब दोनोका अर्थ होता है "चाहे जो" ; जैसे, शंकरसे जो कोई वर मांगता है, वह पाता है।

यह और वह।

"यह" और "वह" तथा इनके बहुवचन "ये" और "वे" सर्वनामोंमें "वह" और "वे" पहले कहे हुए और "यह" और "ये" पीछे कहे हुए नामोंका निर्देश करते हैं ; जैसे, भांग और अफीम दोनो बुरे नशे हैं उससे शरीर सुस्त हो जाता और इससे कब्जियत होती है और इससे पेट ऐंठने लगता है और दस्त बन्द हो जाता है।

असमापिका क्रियाके पहले जब "यह" आता है तब "इति" अर्थ देता है ; जैसे, यह सुनकर मैं चला, यह कहकर वह लम्बा हुआ

ऐसा, वैसा, जैसा और तैसा।

"ऐसा" इस प्रकार "वैसा" उस प्रकार, "जैसा" जिस प्रकार और "तैसा" तिस प्रकार अर्थमें आता है; जैसे, ऐसा गया जैसा महफिलसे जूता, ऐसे गये जैसे गधेके सिरसे सींग, जैसेको तैसा मिले।

"ऐसा" "वैसा" और "जैसा" समानता बतानेमें भी आते हैं; जैसे, किलेके ऐसा दिखाई देने लगा, मेरे जैसा सीधा आदमी न मिलेगा, वैसे मनुष्य संसारमें कम होते हैं।

बुरा, नीच और निर्लज्ज अर्थोंमें "ऐसा तसा" प्रयुक्त होता है; जैसे, कोई ऐसा तैसा नहीं जाने पाता, ऐसा तसा हो जो अब फिर वही काम करे।

"ऐसा वैसा" साधारण वा नगण्य और मृत्यु अर्थोंमें आता है; जैसे, मैं क्या ऐसा वैसा हूं जो डरूं, तुम्हारे घरके सब एसे वैसे हो जायं।

"ऐसे ऐसे" इत्यादि अर्थमें आता है; जैसे, एसे ऐसोंकी बात न कहो।

"ऐसी तैसी" प्रयोग अपमान और नरक वा गढ़ा अर्थमें आता हैं; जैसे, तेरे दिलकी ऐसी तैसी, अपने काम न आवे तो ऐसी तैसीमें जाय।

"ऐसे", "वैसे", "जैसे" और "तैसे" उपमा वा उदाहरण देनेमें क्रियाविशेषण रूपसे भी आते हैं; जैसे, तुम ऐसे क्यों कहते हो, वैसे वे हमारे गुरू हैं, जैसे कहोगे वैसे ही करूंगा।

"कैसा" अवस्था जाननेके लिये प्रश्नमें आता है ; जैसे, वह कैसा है ?

"कैसा कोई" चाहे जैसा मनुष्य अर्थमें आता है ; जैसे, कैसा कोई बुद्धिमान क्यों न हो।

"कैसे" किस प्रकारसे वा किस कारणसे अर्थमें आता है ; जैसे, तुम उसे कैसे जानते हो ?

इतना, जितना आदि।

"इतना", "उतना", "जितना", "तितना" और "कितना" परिमाणवाचक सर्वनाम् हैं। "इतना" निकटवर्त्ती और "उतना" दूरवर्त्ती परिमाणका बोधक है। "जितना" और "तितना" "जो" और "सो" की तरह जोड़के शब्द हैं और "कितना" प्रश्नवाचक है।

"कितना" दाम और गहराई पूछनेके लिये ही आता है ; जैसे, तुमने कितनेको वा कितनेमें यह मोटर खरीदी ? बड़े बड़े बहे जायं, गधा कहे कितना पानी।

"इस बीचमें", "दाम" और "यथेष्टता" अर्थोंमें पांचवीं विभक्तिमें "इतना" और "जितना" आता है ; जैसे, इतनेमें पुलिस आ गयी, इतनेमें हम न बेचेंगे, इतनेमें काम बन जायगा।

"उतना" और "जितना" शब्दोंकी पांचवीं विभक्तिके एक वचनके रूप भी कालान्तर और दाम अर्थोंमें आते हैं ; जैसे, जितनेमें मैं आऊं आऊं उतनेमें वह एक कोस निकल गया, जितनेमें तुमने घोड़ा पाया है उतनेमें तो ठगाये नहीं हो।

"कितने एक" कई अर्थमें आता है ; जैसे कितने एक दिन

"कितना ही" चाहे जितना अर्थमें आता है; जैसे, कितना ही यत्न करो, होगा वही।

"इतना उतना" थोड़े बहुत वा नगण्य अर्थमें भी आता है; जैसे, मैं इतने उतनेकी चिन्ता नहीं करता।

एक।

"एक" संख्यावाचक विशेषण अनेकका विपरीत अर्थ देता है और "कोई" अर्थमें भी प्रयुक्त होता है; जैसे, एक आदमी आया, एक दिनकी बात है, एक समय वह भी था।

क्रमसे एक एककर जब कई बातें बतायी जाती हैं, तब क्रमके आरम्भका एक प्रथम अर्थमे आता है और "एक तो" प्रथमतः अर्थ देता है; जैसे, एक करेला दूसरे नीम चढ़ा. एक तो रुलासी थी ही दूसरे आ गया भैया।

"एक" समान वा एक ही अर्थमें भी आता है, जैसे, राम लक्ष्मण एक बापके बेटे थे।

"एक आध" कोई न कोई और बहुत कम अर्थोंमें आता है; जैसे, एक आध आदमी खड़ा ही रहता है, वहां एक आध भलामानस हो तो हो।

बीसो, बीसों आदि,

तीन[*] चार आदि संख्यावाचक शब्दोंमें "ओ" प्रत्यय जोड़ने

---

[*] तीन चार आदिके ही नही, पहले एक और दोके साथ भी "हु" अव्यय लिखा जाता था और 'भी" अर्थ देता था, पर कालान्तरमें हकारका लोप होनेसे "उ" रह गया और एकउ, दोउ, तीनउ,

से "तीनो" "चारो" आदि बनते हैं और इनके अर्थ होते हैं "सारे तीन" "सारे चार" आदि; जैसे, तीनो बोल उठे, चारो हंस पड़े। इन वाक्योंका अर्थ है कि वहां तीन आदमी थे और सब एक साथ बोल उठे तथा चार आदमी थे और सब एक साथ हंस पड़े।

"दो" एक अक्षरका शब्द है, इसलिये इसमें "ओ" प्रत्ययके बदले "नो" प्रत्यय लगता है और "दोओ" न होकर "दोनो" शब्द बनता है; जैसे, दोनो भाई मेलसे रहते हैं।

दसो, बीसो, पचासो, सौओ, हजारो और लाखो आदि तथा दसों, बीसों, पचासों, सैकड़ों, हजारों और लाखों आदिमें अर्थका बड़ा भारी अन्तर है; जैसे, पचासो आदमी आये वाक्यका अर्थ है कि पचास आदमी थे और सब आ गये। पर

गये और फिर सन्धिके नियमानुसार ऐकौ, तीनौ, चारौ आदि बने तथा तीनौके अनुकरणपर दोउ, "दोनौ" रूपमें परिणत किया गया। थोड़े दिनों बाद औकारके बदले ओकार लिखा जाने लगा और दोनो, तीनो, चारो आदि रूप प्रचलित हो गये। एको बोल चालमें कहीं कहीं आता है, पर शिष्ट प्रयोग नहीं समझा जाता। एको सदा निषेधार्थक अव्ययके साथ आता है; जैसे, वहां एको आदमी नहीं है अर्थात् एक भी नहीं है। पर दोनो, तीनो, चारो आदि इस नियमसे बंधे नहीं हैं, क्योंकि अर्थोंमें अन्तर है। केलागने प्रचलित वर्ण विन्यासके अनुसार "बीसों आये" वाक्यका अर्थ किया है, The twenty came पर यह ठीक नहीं है। यह "बीसो आये" वाक्यका अर्थ है। बीसों आये वाक्यका अर्थ है Scores came or Twenties came.

यदि कहा जाय कि "पचासों आदमी आये" तो अर्थ होगा कि, कई पचास आदमी वहां थे और वे आये। इसी प्रकार "सौओ आये" और "सैकड़ों आये" वाक्योंमें भी अन्तर है। बीसो, बीसों ओर हजारो, हजारोंमें भी ऐसा ही अर्थभेद है।

अब।

"अब" समयवाचक क्रियाविशेषण है. पर जब उसमें सम्बन्धसूचक "का" प्रत्यय जुड़ता है, तब "इस" और "इस बारका" अर्थ होते हैं; जैसे, अबके साल न जाओ, अबकी बात मान लो।

जहां।

"जहां" स्थानवाचक क्रियाविशेषण है और जब इसके पीछे "तक" अव्यय जुड़ता है और आगे "हो सके" क्रियापद रहता है, तब वाक्यका अर्थ यथासम्भव, यथाशक्ति वा यथासाध्य होता है; जैसे, जहांतक तुमसे हो सके यह काम कर डालो।

कहां।

"कहां" भी स्थानवाचक क्रियाविशेषण है और इसका अर्थ होता है, किस स्थानमें; जैसे, कहां जायं? कभी कभी इसका अर्थ "नहीं" भी होता है; जैसे, यह मकान कहां ऊंचा है? कहांके पीछे "तक" जुड़नेसे अर्थ होता है कितनी देरतक; जैसे, मैं कहांतक उनकी प्रशंसा करूं?

तुलना करनेके समय वाक्यमें दो बार "कहां" आनेपर अर्थ होता है बड़ा अन्तर और भाव निकलता है कि दोनोंकी

तुलना नहीं हो सकती ; जैसे, कहां शिवजीका पिनाक धनुष और कहां ये कोमल बालक?

जहां तहां।

"जहां तहां" सर्वत्र और कहीं कहीं अर्थों में आता है ; जैसे जहांतहां लोग घूम रहे थे जहां तहां हमें भटकना भी पड़ा।

कहीं।

"कहां" क्रियाविशेषणके पीछे निश्चयार्थक क्रियाविशेषण "ही" रहनेसे "कहीं" रूप बनता है (देखो पृष्ठ ६४) और इसके अर्थ होते हैं बहुत अधिक और कदाचित् ; जैसे, यह मामला कहीं बड़ा है, हमारी बातें कहीं कोई सुन न ले।

जिधर तिधर।

"जिधर तिधर" जहां तहां अर्थमें आता है ; जैसे, जिधर तिधर सब लोग भागने लगे।

पर।

"पर" सम्बन्धसूचक अव्यय विभक्तिकी तरह शब्दका सामान्य रूप होनेपर उसमें जुड़ता है और ऊपर, अनुसार, प्राधान्य, अन्तर, अनन्तर, संलग्न, दाम और वार्तालापका प्रसंग इतने अर्थ बताता है; जैसे, घोड़ेपर चढ़ो, धर्मपर चलो, दुष्टोंपर ईश्वरका ही वश चलता है, यहांसे सौ कोसपर, चार दिनपर वह आया, द्वार-पर खड़े रहो, कितनेपर बैल बेचोगे, इसपर वह क्रोध कर बोला।

"पर" उभयान्वयी अव्यय "परन्तु" अर्थमें भी आता है ; जैसे मैंने बहुत कहा, पर उसने ध्यान ही नहीं दिया।

लिये ।

लिये, निमित्त, हेतु, कारण, वजह, सबब, जैसे सम्बन्ध-सूचक अव्ययोंके पहले "इस" आनेसे "इस लिये" और "किस" आनेसे "किस लिये" पद बनते हैं। "इस लिये" अतः वा अतएव अर्थमें आता है और "किस लिये" क्यों अर्थ देता है; जैसे, इस लिये उसने मेरी बात मान ली. मैं किस लिये वहां जाऊं ?

"किस लिये" और "किसके लिये" पदोंके अर्थोंमें अन्तर है। "किसके लिये" पदका अर्थ होता किस मनुष्यके लिये; जैसे. मैं किस लिये धन इकट्ठा करूं अर्थात् क्यों धन इकट्ठा करूं, मैं किसके लिये धन इकट्ठा करूं अर्थात् मेरे कोई नहीं है जिसके लिये धन संग्रह करूं।

कि ।

"कि" क्रियाविशेषण और उभयान्वयी अव्यय दोनो रूपोंसे आता है। क्रियाविशेषण होनेपर त्योंही, तभी वा तुरन्त अर्थ देता है. जैसे, मै घरसे निकला ही था कि वह मिल गया।

जब "कि" उभयान्वयी अव्यय होता है, तब या और ताकि वा जिससे अर्थोंमे आनेके सिवा कर्मप्रदर्शक भी होता है; जैसे, तुम जाते हो कि मै जाऊं, मैं इस लिये जाता हूं कि वहांकी दशा देखूं, उसने कहा कि मैं अभी न चलूंगा।

तो ।

उभयान्वयी अव्यय "तो" "जो" अव्यय, और की तरह

आता है ; जैसे, जो मुझे चाहते होते तो ऐसा न करते। यदि पहले वाक्यमें "जब" रहता है और दूसरा वाक्य "तो" अव्ययसे प्रारम्भ होता है, तब यह "तो" तब अर्थमें आता है : जैसे, जब महाराज आवें तो तुम उनके पैरोंपर गिर पड़ना।

"तो" वाक्यमें ज़ोर देने या श्रोताका ध्यान आकर्षित करने या निश्चय बतानेके लिये आता है ; जैसे, एक तो वह समझता ही नहीं, हमारी बात तो सुन लो, हम तो परमात्मासे प्रार्थना करते ही रहेंगे।

और।

"और" उभयान्वयी अव्यय है और दो शब्दों या वाक्योंको जोड़नेके लिये उनके बीचमें लिखा जाता है ; जैसे, राम और कृष्ण आये। रामचन्द्र वनको चले गये और भरत नन्दिग्राममें आकर तप करने लगे।

"और" अन्य, अधिक या अतिरिक्त और भिन्न अर्थोंमें भी आता है और विशेषण या विशेष्य होता है ; जैसे मुझे और न तुझे ठौर, कोढ़में खाज और मुश्किल. आजकल कुछ रंग ही और है।

"और तो और" और "और तो क्या" औरोंकी चर्चा छोड़ कर और औरकी कौन कहे अर्थोंमें आता है ; जैसे, और तो और वह अपने सगे बापको ही कुछ नहीं समझता।

"और भी" इसके अतिरिक्त अर्थमें आता है ; जैसे, और भी, वह किसीकी बात सुनता ही नहीं।

ओर।

"ओर" सम्बन्धसूचक अव्यय पक्षमें तरफ, किनारा और न्त अर्थोंमें आता है, जैसे. इस लडाईमें वह मेरी ओर है, गे ओरसे भी प्यार कर देना समुद्रका न ओर है न छोर, सते ठाकुर खांसते चोर इन दोनोका आया ओर।

न, नहीं और मत।

"न", "नहीं" और "मत" तीनो निषेधार्थक अव्यय हैं, पर मत" मध्यम पुरुषके सिवा किसीके लिये नहीं प्रयुक्त होता; जैसे, वहां मत जा, ऐसा मत करो, वहां मत जाइये।

'न" साधारण निषेधार्थक अव्यय है, पर "नहीं" दृढता द्योतक निषेधार्थक है; जैसे, मैं न जाऊंगा, मैं नहीं जाऊंगा।

"न" अव्यय न तो और तथा और न अर्थो में भी आता हैं; जैसे, मैं न जाता हूं न जाना चाहता हूं, मैं न गया न जाऊंगा।

जब निषेधमें कोई विशेषता नहीं होती तब हेतुहेतुमद्भुत, सामान्य भूत, सम्भाव्य भूत, सन्दिग्ध वर्तमान, सन्दिग्ध भूत और भविष्यकालोंमें "न' विधिमे और अन्य कालोंमें "नहीं" आता है; जैसे, वह न जाता, मैं न गया, मैं न जाता होता, वह न गया होता, तू न जाता होगा, वह न गया होगा, मैं न जाऊंगा।

सामान्य वर्तमानमें जब निषेधार्थक "नहीं" आता है, तो उसका रूप हेतुहेतुमद्भुतका हो जाता है अर्थात् "ह" धातुके 'है' और "हैं" रूप लुप्त रहते हैं, जैसे, वह नहीं आता (है)।

क्रियापदों के अर्थ ।

विधि ।

विधि, निषेध, सम्भावना, अभिप्राय, इच्छा तथा चिन्ता प्रकट करने, आशीर्वाद, उपदेश, शाप तथा गाली देने, प्रश्न करने और भूत, भविष्य और वर्तमान काल बतानेके लिये विधिका प्रयोग किया जाता है ; जैसे, सब लोग लड़के उठें, सूर्योदयके बाद कोई न सोए, चुप रहे तो काम बन जाय, समझा दो तो उसकी शंका दूर हो जाय, परमेश्वर कुशल करे, मैं यह काम कैसे करूं ? जीते रहो, सदा सच बोलो, उसका सत्यानास हो जाय, वह कैसे जाय ? आश्चर्य है कि चोर इतना पीटा जाय पर कुछ न बतावे, जब तुम्हारे लड़का हो तो उसे ले आना, अन्धो पीसे कुत्ते खायं ।

आज्ञा ।

आज्ञा देने और आज्ञा मांगनेमें आज्ञाके रूपोंका व्यवहार किया जाता है ; जैसे, तुम जाओ, वह जाय, मैं जाऊं ।

निषेधार्थक आज्ञा देनेमें मध्यम पुरुषके साथ "न" और "मत" अव्ययोंका प्रयोग होता है : पर प्रथम और उत्तम पुरुषों के साथ केवल "न" आता है ; जैसे, तू वहां न जा, तुम मत जाओ, वह न जाय, मैं न जाऊं ।

भविष्यकाल।

किसी घटनाके निश्चय वा उसकी सत्यताकी सम्भावना होनेपर भविष्यकालिक क्रियापद प्रयुक्त होते हैं ; जैसे, मैं कल आऊंगा, जो ऋषि दक्षिणा न पावेंगे तो शाप देंगे, तुम्हारे स्त्री पुत्रादि तुम्हारे वशमें रहेंगे।

किसी घटनाके विषयमें निश्चय न होनेपर भी भविष्य कालके क्रियापदोंका प्रयोग होता ह ; जैसे, किसीके प्रश्न करने पर कि क्या यह मन्दिर अति प्राचीन है, उत्तर देनेवालेको उसका निश्चय न होनेपर वह कहता है "होगा"।

हेतुहेतुमद्भूत।

अपूर्ण भूत, सामान्य वर्त्तमान और हेतुहेतुमद्भूतके सिवा इच्छा, सामर्थ्य वा शक्ति बतानेके लिये भी हेतुहेतुमद्भूतका प्रयोग होता है ; जैसे, जब कभी अवसर पाते तब खरी मुंहपर सुना देते, मुझसे यह काम नहीं होता, जो ईश्वर न सहाय होता तो कोई जीता न बचता, यदि आज मेरे भाई होते, यदि तुम सम्हल जाते तो डाकू न लूट लेते।

सामान्य वर्त्तमान।

भविष्य, भूत तथा सामान्य वर्त्तमान कालोंका काम करनेके सिवा स्वभाव, चिर सत्य घटना बताने, आश्चर्य प्रकट करने तथा उपमा देनेमें भी सामान्य वर्त्तमानका प्रयोग किया जाता है ; जैसे, मैं घर जाता हूं अर्थात् शीघ्र ही जाऊंगा, तू यह बात कहे जाता है अर्थात् तूने कैसे कहा, मैं खाता हूं, वह जाता

जाता है अधर्म ही मचाता है, जो दान पुण्य करता है वह ईश्वरका प्रियपात्र होता है, उसने घरमें प्रवेश किया तो देखता क्या है कि महफिल लगी हुई है, हिमवान् विह्वल हो ऐसे गिरे जैसे अन्धड़में पेड़ गिरता है।

सामान्य भूत।

सामान्य भूतका प्रयोग सामान्य वर्त्तमान और सामान्य भूत दोनोंके लिये होता है; जैसे, नरतनु धारण कर जिसमें परोपकार न किया उसने वृथा जन्म लिया, कृष्णजन्मकी बात किसीने नहीं जानी।

पूर्ण वर्त्तमान।

पूर्ण वर्त्तमानका प्रयोग सामान्य भूत, सामान्य वर्त्तमान और पूर्ण भूतके लिये भी होता है; जैसे, हम तुम्हारे द्वारपर आये हैं, नारदने कहा कि निश्चिन्त क्यों बैठे हो, दैत्योंमें राजा बलि बड़ा दानी हो गया है।

शब्दोंकी पुनरुक्ति।

एक ही शब्द साथ साथ जब लिखा या बोला जाता है, तब उसका विशेष अर्थ होता है। क्रिया और अव्ययकी पुनरुक्ति तो साधारणतः "बारम्बार" और "धीरे धीरे" अर्थ देती है, पर संज्ञा और विशेषण शब्दोंको ऐसी द्विरुक्ति वा पुनरुक्तिका अर्थ प्रत्येक वा भिन्न भिन्न भी होता है; जैसे द्रौपदी रो रो कहने लगी, होते होते वह पहुंच गया, जब जब धर्मकी ग्लानि होती है तब तब भगवान अवतार लेते हैं, घर घरमें आनन्द उछाह होने लगा, बड़े बड़े योद्धा सज सज मैदानमें आये, देश देशके राजा आने लगे, नये नये वृक्ष ला लाकर लगाये गये।

जब संज्ञा शब्दोंके बीचमें "ही" अव्यय आता है या पहला शब्द पहलीको छोड़ अन्य विभक्तियोंमें रहता है, तब अर्थमें कुछ अधिक अन्तर पड़ता है। "ही" का अर्थ जहां "केवल" होता है, वहां तो शब्दका अर्थ "और कुछ नहीं केवल" होता है और जहां "अभ्यन्तर" होता है, वहां "बाहर नहीं भीतर" अर्थ होता है; जैसे, सीता ही सीता पुकारने लगे, मन ही मन सोचने लगे। सम्बन्धवाचक प्रत्यय पहले शब्दके अन्तमें जब रहता है, तब कभी "लगातार" और कभी "अत्यन्त" अर्थ होता है; जैसे, दलके दल लोग आने लगे, बदमाशोंका बदमाश।

कभी कभी पहला शब्द सामान्य रूप बहुवचनमें रहता है और विभक्तिका चिन्ह लुप्त रहता है। ऐसी अवस्थामें "लगातार" अर्थ होता है : जैसे, हाथों हाथ माल पार कर दिया, बातों बात मामला बढ़ गया।

अत्यन्त और समस्त अर्थोंमें भी एक ही विशेषण दो बार आता है; जैसे, मीठे मीठे फल खिलाऊंगा, सेत सेत सब एकसे कनिक कपूर कपास।

उत्कृष्टता या निकृष्टता बतानेके लिये विशेषण दो बार आता है, पर जिससे उत्कृष्ट या निकृष्ट बताते हैं, उसमें चौथी विभक्ति होती है; जैसे, बड़े बड़े बदमाश मैंने ठीक किये हैं, अच्छोंसे अच्छे कपड़े पहन लो।

संख्यावाचक विशेषण जब दुहराया जाता है, तब उसका अर्थ प्रत्येक होता है; जैसे, एक एक मुहर और एक एक भैंस सबके पास है, सबके दस दस बेटे हुए, दो दो जाने लगे, एक एक बोलने लगा।

संख्यावाचक शब्दके बाद जब रुपये पैसे, मन, सेर, घंटा, मिनिट आदि शब्द रहते हैं, तब संख्यावाचक शब्द ही दुहराया जाता है, ये नहीं दुहराये जाते; जैसे, पांच पांच रुपये, छ छ पैसे, दस दस मन, पांच पांच सेर, तीन तीन घंटे, दो दो मिनिट। जब रुपयेके साथ आने या मनके साथ सेर इत्यादि रहते हैं, तब आने और सेर ही दुहराये जाते हैं रुपये और मन नहीं; जैसे, पांच रुपये दो दो आने मिले, छ मन तीन तीन सेर बिके।

कर्त्ता, क्रिया और कर्म ।

कर्त्तृवाच्यमें अकर्मक वा सकर्मक क्रिया लिङ्गवचनमें सदा कर्त्ताके अनुकूल रहती है ; जैसे, वह आता था, मैं खाता हूं, राम जायगा, कृष्ण आया है, बिहारी पढ़ेगा ।

कर्मकर्त्तृवाच्यमें क्रिया सदा कर्त्ता बने हुए कर्मके अनुकूल रहती है ; जैसे, गाड़ी चलती है, बादल गरजा, मेह बरसेगा ।

कर्मवाच्यमें क्रिया कर्मके अनुकूल रहती है और सकर्मक क्रियाके पूर्ण वर्त्तमान, सामान्य भूत, सामान्य पूर्ण भूत, पूर्ण भूत और सन्दिग्ध भूत कालोंकी ही क्रियामें कर्मवाच्य होता है ; जैसे, मैंने रोटी खायी है, मैंने रोटी खायी, मैंने रोटी खायी होती, मैंने रोटी खायी थी, मैंने रोटी खायी होगी ।

खेलना और बोलना सकर्मक क्रियाएं होनेपर भी कर्त्तृवाच्य होती हैं ; जैसे, मैं क्रिकेट खेला, वह झूठ बोला ।

खेलना और बोलना क्रियाओंसे बने कर्म और कभी कभी अन्य कर्म भी जब वाक्यमें आते हैं तो ये क्रियाएं कर्मवाच्य भी होती हैं ; जैसे, मैंने बड़े खेल खेले हैं, उसने चौपड़ खेली, उसने कई बोलियां बोलीं ।

जिन यौगिक क्रियाओंके सभी भाग सकर्मक क्रियासे बनते हैं, उन्हींमें कर्मवाच्य होता है ; जैसे, मैंने हलवा खा डाला है या था या होगा वा होता ।

जिन यौगिक क्रियाओंके सभी भाग अकर्मक क्रियाओंसे बनते हैं अथवा जिनका एक भाग भी अकर्मक क्रियासे बना हुआ होता है, उनमें कर्मवाच्य नहीं होता; जैसे, मैं उसे दे आया, वह जा गया है, राम पुस्तक लाया था।

लाना क्रिया ले धातु और आना क्रियाके योगसे बनी है। पहले इसका रूप ल्याना था, पर बाद लाना हो गया। इस लिये लाना क्रियाका कर्मवाच्य नहीं होता।

समझना क्रियाका कर्मवाच्य होता है और नहीं भी होता; जैसे, मैंने उसे आदमी समझा, मैं उसे आदमी समझा।

भाववाच्यमें क्रिया सदा पुंलिङ्ग एकवचनमें रहती है और कर्त्ता वा कर्मका अनुसरण नहीं करती; जैसे, मैंने रोटियोंको खाया, रामने ताड़काको मारा।

कर्मवाच्य और भाववाच्य दो प्रकारके हैं, एक साधारण क्रियाके, दूसरे यौगिक क्रियाके। साधारण क्रियाके कर्मवाच्य और भाववाच्यका कर्त्ता तीसरी विभक्तिमें और यौगिक क्रियाके कर्मवाच्य और भाववाच्यका कर्त्ता चौथी विभक्तिमें होता है; जैसे, (साधारण क्रियाके कर्मवाच्य और भाववाच्य) मैंने पेड़े खाये और मैंने पेड़ोंको खाया; (यौगिक क्रियाके कर्मवाच्य और भाववाच्य) मुझसे पेड़े खाये गये, मुझसे चला नहीं गया।

जब एकवचनमें दो वा अधिक कर्त्ता होते हैं और उनके बीचमें संयोजक अव्यय "और" नहीं रहता, तो सब

कर्त्ताओंके स्त्रीलिङ्ग होनेपर क्रिया बहुवचन स्त्रीलिङ्ग होती है, और पुंलिङ्ग होनेपर बहुवचन पुंलिङ्ग। परन्तु यदि भिन्न भिन्न लिङ्गोंके कर्त्ता हों तो द्वन्द्व समासके नियमानुसार क्रिया होती है ; जैसे, रानी दासी सखी सभी वहां थीं, रामलक्ष्मण भरत शत्रुघ्न दशरथके पुत्र थे, राजारानी आये।

यदि कर्त्ता भिन्न भिन्न वचनोंके हों और उनके बीचमें "और" अव्यय न हो तो मध्यम और उत्तम पुरुषके कर्त्ता होनेपर क्रिया उत्तम पुरुष तथा प्रथम पुरुष कर्त्ता होनेपर प्रथम पुरुष बहुवचनमें होगी ; जैसे, हम तुम चलेंगे, तुम वह वहां जाओगे।

यदि भिन्न भिन्न लिङ्गों और वचनोंके कर्त्ता हों और उन सबके अथवा अन्तिम कर्त्ताके पहले "और" रहे, तो क्रिया अन्तिम कर्त्ताके अनुकूल होगी ; जैसे, तीन मर्द और एक औरत आयी। *

जब किसी सकर्मक भूतकालिक क्रियाका अर्थ कोई वाक्य होता है तो क्रिया कर्मवाच्य न होकर भाववाच्य होती है, अर्थात् सदा पुंलिङ्ग एकवचनमें रहती है ; जैसे, मैंने उससे कहा कि घर जाकर सो रहो, उसने कहा कि दासी रोटी खा रही है।

---

* उर्दू वाले विशेषकर दिल्लीकी ओरके उर्दू के पंडित उत्तम मध्यम और प्रथम पुरुषके कर्त्ता हों तो क्रिया पुंलिङ्ग बहुवचन कहते हैं ; जैसे, मैं तू और वह चलेंगे, मैं तुम चलेंगे।

जब किसीका आदर किया जाता है, तब उसके लिये बहुवचनकी क्रिया प्रयुक्त होती है ; जैसे, जब राम वनको जाने लगे तब अयोध्यामें उदासी छा गयी, आप जानते हैं कि विद्या बड़े परिश्रमसे आती है।

परमेश्वरको सम्बोधन करनेके समय अथवा किसीका अनादर करनेमें मध्यम पुरुष एकवचन और उसीकी क्रियाका प्रयोग किया जाता है ; जैसे, हे नाथ, तू घट घटकी जानता है, तेरी महिमा अपरम्पार है, तू बालक है।

परमेश्वरके सम्बन्धमें कुछ कहा जाता है, तब उसके लिये एकवचनकी क्रियाका ही प्रयोग होता है; जैसे, परमेश्वर जानता है हम झूठ नहीं बोलते।

जब किसी वाक्यमें स्त्रीपुरुषके विषयमें समष्टि रूपसे कुछ कहा जाता है, अथवा जब स्त्री अपने पति वा परिवारकी ओरसे कुछ कहती है तो वह भी अपने लिये पुंलिङ्ग बहुवचनकी क्रियाका प्रयोग करती है ; जैसे, ब्राह्मणीने कहा कि न जाने हम इन राक्षसोंके अत्याचारसे कब छुटकारा पावेंगे।

यदि वाक्यमें दो कर्त्ता भिन्न लिङ्गों और वचनोंके हों, तो क्रियाका कर्त्ता वही माना जायगा जो मुख्य होगा और क्रियाके लिङ्गवचन उसीके अनुसार होंगे ; जैसे, इसका कारण युवराज और युवराज्ञीकी हत्या न था।

यदि समय परिमाण तथा धनका विशेषण कोई संख्या हो

और वह एकसे अधिक हो तो समय, परिमाण तथा धनवाचक शब्द पहलीको छोड़ और सब विभक्तियों तथा सम्बन्धवाचक प्रत्यय लगनेके पहले एक वचनके सामान्य रूपमें होते हैं; जैसे, दो घण्टेमें आओ, चार चार रुपयेको धोती लाये, पांच सेरका गेहूं बिका।

विशेष्य, विशेषण और सर्वनाम।

जिस शब्दके गुण, दोष, संख्या वा अवस्था विशेषणसे जानी जाती है, उसे विशेष्य कहते हैं; जैसे, सुन्दर पुरुष, नटखट लड़का, चार आदमी, बीमार लड़की।

विशेष्यके अनुसार ही विशेषणके लिंगवचन होते हैं; जैसे, काला घोड़ा, लंगड़ा लड़का, अन्धी लौंडी।

हिन्दीमें आकारान्त विशेषण शब्दोंमें लिंगभेद प्रत्यक्ष रहता है और उनके रूप लिङ्गवचनानुसार बदला करते हैं, पर जिनके रूप नहीं बदलते वे भी विशेष्यके लिंगवचनके अनुकूल मान लिये जाते हैं; जैसे, मोटा लड़का, छोटी किताब, लाल स्याही लाल फूल।

यदि कई विशेष्योंके लिये एक ही विशेषण हो तो विशेषण अपने पीछे आनेवाले पहले विशेष्यके लिंगवचनके अनुकूल रहता है; जैसे, कई छोटे बड़े लड़के और लड़कियां, अच्छी घोड़ियां और टट्टू।

यदि विशेषण विशेष्यकी भांति आता है, तो संज्ञा शब्दोंकी भांति सब विभक्तियों तथा सम्बन्धवाचक प्रत्ययोंमें उसके रूप साधे जाते हैं; जैसे, दुर्बलको न सताइये, निर्धनोंको धन दो, दुखियोंकी सहायता करो।

जिस संज्ञा शब्दके पहले सर्वनाम आता है, उसीके लिंग-वचनानुसार इसके लिंगवचन भी होते हैं; जैसे, भारतमें स्त्रियोंको गृहकार्य सौंपा जाता है, वे बाहर नहीं जातीं।

विशेषणका प्रयोग दो प्रकारसे किया जाता है एक गुण-द्योतक, दूसरा विधेयद्योतक। गुणद्योतक विशेषण विशेष्यके पहले आता है और विधेयद्योतक विशेषण कर्मके गुण दोष बताता है। यदि कर्म पहली विभक्तिमें होता है, तो विशेषण कर्मके लिंगवचनानुसार होता है और यदि कर्म दूसरी विभक्तिमें होता है तो भाववाच्यकी क्रियाके समान विशेषण सदा पुंलिङ्ग एकवचनमें होता हैं; जैसे, सीधा आदमी आया है, मैंने किताब पूरी कर दी, उसने लड़कीको टेढ़ा किया।

विशेषण क्रियाविशेषणकी भांति भी प्रयुक्त होता हैं और उस अवस्थामें उसके लिङ्गवचनमें परिवर्त्तन नहीं होता; जैसे, वह अच्छा गाता हैं, उसका चित्त बड़ा कठोर है। परन्तु जब क्रियाविशेषण क्रियाकी ही विशेषता नहीं दिखाता, बल्कि संज्ञाका भी सम्बन्ध बताता है, तब संज्ञाके लिङ्गवचनानुसार इसके लिङ्गवचन भी बदलते हैं; जैसे, मुझे खाना अच्छा लगता है, उसको रोटी कड़वी लगती है।

वाक्यरचना।

वाक्यरचनाका साधारण नियम यह है कि पहले कर्त्ता और पीछे क्रिया रहे और अन्य कारकोंकी आवश्यकता हो तो वे कर्त्ता और क्रियाके बीचमें रखे जायं; जैसे, मोहन आता है, सोहन रोटी खाता है।

वाक्यमें यदि कर्त्ता आदि सभी कारक हों तो कर्त्ता पहले आता है और कर्म अन्तमें और इसके बाद क्रिया रहती है; जैसे, रामने बाणसे रावणको मारा, मालिकने मुनीमसे भिख-मंगोंको एक एक पैसा दिलाया।

कर्त्ताके विशेषण कर्त्ताके पहले और क्रियाविशेषण क्रिया और कर्मके पहले रहते हैं; जैसे, सुशील लड़के अपने माता पिताकी आज्ञा मानते हैं, वह यहांसे शीघ्र काशी आयगा।

प्रश्न करनेके समय वाक्यके प्रारम्भमें "क्या" बोला जाता है; जैसे, क्या परमेश्वर हम दुखियोंकी सुध लेगा?

वाक्यमें "क्या" नहीं रहता तब बोलनेके ढङ्ग और वक्ताके मुखकी आकृतिसे जाना जाता है कि वह प्रश्न कर रहा है; जैसे मैं जाऊं? उसने सब मिठाई खा डाली?

भाव प्रकट करनेके समय विस्मयादिबोधक अव्यय क्रियाके साथ पहले आता है और शेष वाक्य पीछे; जैसे, धन्य हैं तेरे मातापिताको जिन्होंने तुझे जन्म दिया, धन्य हैं हम सब जिन्होंने

आपके दर्शन पाये, धिक्कार है तेरे शरीरको जो अपने सुखसे सुखी होता है।

वाक्यमें जोर लानेके लिये शब्द और पद अपने स्थानसे हटाकर दूसरे स्थानपर भी रखे जा सकते हैं; जैसे, समर्थ वे ही हैं जो दूसरोंकी सहायता करते हैं, मनुष्य उन्हें कहिये जो दूसरेके दुखसे दुखी और सुखसे सुखी होते हैं, हैं तो हम निर्धन पर हमारा मन धनवान् है।

परिशिष्ट ।

(अ)

संस्कृतकी संधि ।

स्वर सन्धि ।

अ या आके बाद अ या आ रहे, तो दोनो मिलकर आ, इ या ईके बाद इ या ई रहे, तो दोनो मिलकर ई, उ या ऊके बाद उ या ऊ रहे, तो दोनो मिलकर ऊ, ऋके बाद ऋ रहे, तो दोनो मिलकर ऋ हो जाते हैं ; जैसे, ज्ञान+अभाव=ज्ञानाभाव, धर्म्म+आज्ञा=धर्म्माज्ञा, सीता+आश्रय=सीताश्रय, हरि+इच्छा=हरीच्छा, गौरी+ईश्वर=गौरीश्वर, लघु+ऊर्मि=लघूर्मि, वधू+उत्सव=वधूत्सव, पितृ=ऋण=पितॄण ।

अ या आके बाद यदि इ या ई रहे, तो दोनो मिलकर ए, उ या ऊ रहे तो दोनो मिलकर ओ और ऋ रहे, तो दोनो मिलकर अर् हो जाते हैं ; जैसे, नर+इन्द्र=नरेन्द्र, गण+ईश=गणेश, महा+इन्द्र=महेन्द्र, रमा+ईश=रमेश, राम+उदार=रामोदार, जल+ऊर्म्मि=जलोर्म्मि, महा+उपदेश=महोपदेश, महा+ऊर्म्मि महोर्म्मि, वसन्त+ऋतु=वसन्तर्तु, महा+ऋषि=महर्षि ।

यदि अ या आके बाद ए या ऐ हो, तो दोनो मिलकर ऐ और यदि ओ या औ हो, तो दोनो मिलकर औ हो जाते हैं ;

जैसे, एक+एक=एकैक, जल+ओका=जलौका, परम+ऐश्वर्य्य परमैश्वर्य्य, महा+औदार्य्य=महौदार्य्य।

यदि इ या ईके बाद इ या ईको छोड़ दूसरा स्वर हो, तो इ या ईके बदले य हो जायगा। इसी प्रकार यदि उ या ऊके बाद उ या ऊको छोड़कर कोई दूसरा स्वर हो, तो उ या ऊके बदले व हो जायगा और यदि ऋके बाद ऋको छोड़ कोई दूसरा स्वर हो, तो ऋके स्थानमें र हो जायगा; जैसे, यदि+अपि यद्यपि, नि+ऊन=न्यून, प्रति+एक=प्रत्येक, अति+ओज=अत्योज, सु+आगत=स्वागत, अनु+एषण+अन्वेषण, पितृ+अनुमति= पित्रनुमति।

ए, ऐ, ओ और औके बाद जब कोई स्वर रहता है, तब क्रमसे ए, ऐ, ओ और औके स्थानमें अय्, आय्, अव्, आव् हो जाते हैं; जैसे, ने+अन=नयन, नै+अक=नायक, पो+अन=पवन, पौ+अक=पावक।

व्यंजन सन्धि।

१। जब क्, च्, ट्, वा प्के बाद कोई स्वर अथवा किसी वर्गका तीसरा वा चौथा वर्ण अथवा य, र, ल, व, ह रहे तो क्के स्थानमें ग्, च्के ज्, ट्के ड् और प् के स्थानमें ब् हो जाता है; जैसे वाक्+आडम्बरः=वागाडम्बरः, वाक्+ईशः=वागीशः, दिक्+गजः= दिग्गजः, प्राक्+घनः=प्राग्घनः, धिक्+याचना=धिग्याचना, वाक्+ घोषः=वाग्घोषः, धिक्+लोभिनम्=धिग्लोभिनम्, सम्यक्+वदति=

सम्यग्वदति, दिक्+हस्ती=दिग्हस्ती, अच्+अन्तः=अजन्तः, परिव्राट्+उवाच=परिव्राडुवाच ।

२। जब किसी शब्दके अन्तमें त् हो और उसके बाद कोई स्वर अथवा ग, घ, द, ध, ब, भ, य, र, या व हो, तो तके बदले द हो जाता है ; जैसे, जगत्+अन्तः=जगदन्तः, जगत्+गति=जगद्गति, बृहत्+घटः=बृहद्घटः, उत्+दण्डः=उद्दण्डः, भवत्+दर्शनं=भवद्दर्शनं, महत्+धनुः=महद्धनुः, उत्+योगः=उद्योगः, महत्+वर्न=महद्वर्न ।

३। जब अनुस्वारके बाद किसी वर्गका कोई अक्षर होता है तो वह उसी वर्गके पञ्चम वर्णमें बदल जाता है ; जैसे, शं+करः=शङ्करः किं+चित्=किञ्चित,पं+डितः=पण्डितः ।

४। जब किसी वर्गके किसी अक्षरके बाद किसी वर्गका पञ्चम वर्ण हो, तो पहला अक्षर अपने पञ्चम वर्णमें बदल जाता है ; जैसे, वाक्+मय=वाङ्मय, अद्+मात्र=अन्मात्र, जगत्+नाथः=जगन्नाथः ।

५। जब किसी ह्रस्व स्वरके बाद छ होता है, तब उस छके पहले च् बढ़ जाता है ; जैसे, परि+छदः=परिच्छदः, पद+छेदः=पदच्छेदः ।

६। जब त् या दके बाद चवर्ग वा टवर्गका पहला वा दूसरा अक्षर होता है तो त् या दके स्थानमें च् या ट् हो जाता है ; जैसे, महत्+छत्रं=महच्छत्रं, पतत्+चन्द्रमण्डलं=पतच्चन्द्रमंडलं, पतत्+छाया=पतच्छाया, उत्+टलति=उट्टलति, तत्+टीका=

तट्टीका, सत्+ठकारः=सट्ठकारः, एतत्+ठक्कुरः=एतट्ठक्कुरः।

७। यदि त् अथवा द् के बाद ज, झ, वा ड, ढ हो तो त्, वा द् को ज्, वा ड् हो जाता है; जैसे, भवत्+जीवनं=भवज्जीवनं, विपद्+जालं=विपज्जालं, महत्+झञ्झनं=महज्झञ्झनं, तद्+झनत्कारः=तज्झनत्कारः, उत्+डीनः=उड्डीनः, तद्+डिण्डिमः=तड्डिण्डिमः, उत्+ढौकते=उड्ढौकते, एतद्+ढक्का=एतड्ढक्का।

८। यदि त् वा द् के बाद श, हो तो त् वा द्, च् में और श छ् में बदल जायगा; जैसे, श्रीमत्+शङ्कराचार्य्यः=श्रीमच्छङ्कराचार्य्यः, तद्+शरीरम्=तच्छरीरम्।

९। यदि त्, द् के बाद ह् वा ह हो तो त् का द् और ह को ध हो जाता है, परन्तु ह नहीं बदलता; जैसे, उत्+हत=उद्धत, तद्+हित=तद्धित।

१०। यदि न् के बाद ज या झ हो तो न् को ञ् से बदल देते हैं; जैसे, महान्+जयः=महाञ्जयः, उद्यन्+झङ्कारः=उद्यञ्झङ्कारः।

११। यदि न् के बाद श हो तो न् को ञ् और श को छ हो जाता है; जैसे, धावन्+शशः=धावञ्छशः।

१२। यदि न् के बाद ड या ढ हो तो न् को ण् हो जाता है; जैसे, महान्+डामरः=महाण्डामरः, राजन्+ढौकसे=राजण्ढौकसे।

१३। यदि त् द् या न् के बाद ल हो तो त् द् वा न् को ल् हो जाता है और न् के पहलेवाले अक्षरपर चन्द्रबिन्दु लगता है

जैसे, बृहत्+ललाटं=बृहल्ललाटं, एतद्+लीलोद्यानं=एतल्लीलोद्यानं, महान्+लाभः=महांल्लाभः।

१४। न्के बाद यदि च, छ, ट, ठ, त या थ हो तो नको अनुस्वार च, छको श्च श्छ, ट, ठ को ष्ट, ष्ठ और त, थको स्त और स्थ हो जाता है; जैसे, नृत्यन्+चकोर=नृत्यंश्चकोरः धावन्+छागः=धावंश्छागः, चलन्+टिट्टिभिः=चलंष्टिट्टिभिः महान्+ठक्कुरः=महांष्ठक्कुरः, हसन्+तरति=हसंस्तरति, गच्छन्+थुत्कारम्=गच्छंस्थुत्कारम्।

१५। यदि न्के बाद श स या ह हो तो न्को अनुस्वार हो जाता है; जैसे, दन्+शनम्=दंशनम्, मीमान्+सते=मीमांसते, बृन्+हितम्=बृंहितम्।

१६। यदि न् के बाद कोई स्पर्श वर्ण हो तो न् उसी वर्गके पञ्चम वर्णमें बदल जाता है; जैसे, आशन्+कते=आशङ्कते, आलिन्+गति=आलिङ्गति, वन्+चयति=वञ्चयति, उत्कन्+ठते=उत्कण्ठते, कन्+पते=कम्पते।

१७। यदि म् के बाद कोई स्पर्श वर्ण हो तो म् उसी वर्गके या तो पञ्चम वर्णमें या अनुस्वारमें बदल जाता है; जैसे; किम्+करोषि=किंकरोषि, वा किङ्करोषि, क्षिप्रम्+चलति=क्षिप्रं चलति वा क्षिप्रञ्चलति, नदीम्+तरति=नदींतरति या नदीन्तरति, गुरुम्+नमति=गुरुंनमति या गुरुन्नमति।

१८। म् के बाद यदि अन्तस्थ या ऊष्म वर्ण हो तो म् को अनुस्वार हो जाता है; जैसे, सत्यम्+वदति=सत्यंवदति,

फुलस्टाप या बिन्दी या शून्य वहां लगाया जाता है जहां किसी शब्दके बदले केवल एक अक्षर लिखा जाता है; जैसे, पं० (पण्डित) बा० (बाबू), ला० (लाला), बी० ए०, एम० ए०।

हिन्दीमें वाक्यकी समाप्तिपर फुलस्टाप वा विन्दीके बदले खड़ी सीधी रेखा लगाते हैं; जैसे, दया धर्मका मूल है।

हिन्दीमें कोलनका प्रयोग बहुत कम लोग करते हैं और जब करते हैं, तब कोलनके साथ डैश लगाकर कुछ बातें बताने या गिनानेमें; जैसे, नीचे लिखी बातें ध्यानमें रखो:—(१) सदा सच बोलो, (२) किसीको दुख न दो, (३) पापसे डरो।

शब्द वा पदका अंश जब दो टुकड़ोंमें बट जाता है, तब दोनोंकी एकता बतानेको उनके बीचमें हाइफेन लगाया जाता है; जैसे, राज-कर्मचारी, मृत्यु-दण्ड।

वाक्यके बीचमें जब कोई ऐसा वाक्य आ जाता है, जो स्वतंत्र वाक्य बन सकता है अथवा ऐसा वाक्यांश आता है जिसके छूट जानेसे कुछ बनता बिगड़ता नहीं, तो उसके आगे पीछे डैश लगाते हैं; जैसे, "और परमेश्वरने कहा"—क्या?—"प्रकाश हो जाय"। रामचन्द्र—येही दशरथके युवराज थे—१४ वर्ष वनमें बिता आये थे।

बोलनेमें ठिठकना बतानेके लिये भी डैशोंका प्रयोग किया जाता है; जैसे, मुझे—खेद है कि—मैं, आपका—ऋण—नहीं चुका सका।

प्रश्नका चिन्ह उस वाक्यके अन्तमें लगाया जाता है जिसमें किसीसे कुछ प्रश्न किया जाता है ; जैसे, तुम्हारा घर कहां है ?

आश्चर्य, हर्ष, विषाद आदि प्रकट करनेवाले शब्द या वाक्यके अन्तमें आश्चर्यका चिन्ह लगाया जाता है ; जैसे, भाग्य ! तेरी भी क्या प्रशंसा करूं ! हे मित्रो ! घर जाओ !

दूसरेकी उक्ति उद्धृत करनेमें इनवर्टेड कामा डवल ("...") लगाये जाते हैं और जब उस उक्तिके भीतर तीसरेकी उक्ति आ जाती है, तब इनके लिये इनवर्टेड कामा सिङ्गल लगाये जाते हैं। मनुष्य, वस्तु वा शब्दको महत्व देनेके लिये भी इनका प्रयोग किया जाता है ; जैसे, रामचन्द्रने सीतासे कहा "प्रिये, वनमें बड़े कष्ट हैं।" "रामाश्वमेधमें" शत्रुघ्नसे लव-कुशकी कड़ाईका वर्णन करते हुए केशवदासजीने कहा है "जब शत्रुघ्न लड़ने आये, तब कुशने कहा 'कौन शत्रु तें हत्यो जो नाम शत्रुहा लियो'।"

किसी वाक्यांश वा शब्दको यदि अलग रखकर भी वाक्यके बीचमें डालना चाहें तो उसे ब्रकेट या पैरेन्थेसिसमें बन्द करते हैं ; जैसे, यह सत्य जान लो (मनुष्यके लिये इतना ही जानना यथेष्ट है) कि इस लोकमें धर्म ही सुखदाता है।